THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_176861
UNIVERSAL
LIBRARY

सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, व्यौहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित चेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेशप्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्रनाथ "अश्क", डा० ताराचद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश वर्मा, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

जीवन-चरित्र

डिक्टेटर

संसार के आतंक-स्वरूप डिक्टेटरों के
जीवन की झाँकी

शिवसेवक शर्मा, बी० ए०

यदि आप अभी तक इस सिरीज़ के ग्राहक नहीं बने हैं तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए। या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तकें चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए।

सरस्वती-सिरीज़ नं० १

डिक्टेटर

शिवसेवक शर्मा, बी० ए०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

Printed and Published by K. Mittra.
at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

मुसोलिनी

बचपन

एपीनाइन्स पर्वत के पूर्वी किनारे पर एमीलिया प्रान्त में रोमैग्ना का ज़िला है। छोटे-छोटे झरने पहाड़ी भूमि को काटकर तेज़ी के साथ बहते हुए चले जाते हैं। अंगूर की लताओं की हरी साड़ी पहनकर प्रकृति अठखेलियाँ करती हुई दिखाई देती है। ऐसे प्रदेश में, एक झील के किनारे पर, डोविया नाम का छोटा सा गाँव है। इसी गाँव में एक ग़रीब लोहार की झोंपड़ी मे २९ जुलाई, सन् १८८३ ई० को दिन के दो बजे बेनिटो मुसोलिनी का जन्म हुआ।

एलेज़ैन्ड्रो मुसोलिनी (मुसोलिनी के पिता) की अपने गाँव मे काफ़ी प्रतिष्ठा थी। जाड़े के दिनों में पड़ोस के ग़रीब किसान उसकी भट्ठी के पास सिकुड़कर बैठ जाते और उससे अपने दुःख-दर्द की कहानी कहते। उस पर उनकी दीन दशा का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह रोमैग्ना का सबसे बड़ा क्रान्तिकारी बन गया और सब प्रकार के शासन का घोर विरोधी हो गया। धीरे-धीरे उसके विचारों में परिवर्तन हुआ और बाद में वह पक्का समाजवादी हो गया।

मुसोलिनी के पिता को अपने राजनीतिक विचारों के कारण कई बार जेल जाना पड़ा, परन्तु अपने साथियों में उसका बड़ा सम्मान था। मुसोलिनी ने अपने 'आत्मचरित्र' में उसका इस प्रकार वर्णन किया है—

"मेरे पिता का डीलडौल भारी, हाथ मांसल और शक्तिशाली, बाल काले, स्वभाव हँसमुख और दृष्टि तीव्र थी। राजनीतिक विषयों में उसकी गहरी पैठ थी। वह अपने साथियों में उन पर बहस करता और आनन्द लेता था।....इसी प्रकार संसार का भला चाहनेवाले मनुष्य आते और चले जाते हैं।"

मुसोलिनी की मा रोज़ा माल्टोनी डोविया के स्कूल में अध्यापिका थी। वह धार्मिक विचारों की स्त्री थी। मुसोलिनी, अपने भाई आर्नेल्डो और बहिन एडविज़ की भाँति, अपनी मा को प्यार करता और उससे डरता भी था। वह स्कूल में लगी हुई चोटों को मा से छिपाता और खाना माँगते समय हाथ नहीं फैलाता था, जिससे उसके घाव छिपे रहें।

रविवार को मुसोलिनी अपनी मा के साथ चर्च जाता, परन्तु वहाँ के लोगों का रंग-ढंग देखकर फ़ौरन भाग आता। 'बड़े दिन' को जब चंद्रमा की शीतल किरणें हवा से मिलकर पेड़ों से क्रीड़ा करतीं और आकाश में चाँदी का वितान तन जाता, तब वह ख़ुशी से फूला हुआ फूलों के उस झूले को देखने जाता जिसमें यीशु रात्रि के समय बच्चे के रूप में जन्म लेते थे। मुसोलिनी का मन स्वप्न-लोक में विचरण करने लगता, परन्तु रोज़ा अपने बच्चे के धार्मिक रुझान को देखकर फूली न समाती। वह चाहती थी कि उसका पुत्र पादरी बने, परन्तु मुसोलिनी अपने अध्यापकों से घृणा करता, अन्य विद्यार्थियों से झगड़ा करता और स्कूल के नियमों की परवा न करता। उसे मज़ा आता था फल चुराने में, चिड़ियाँ फँसाने में या भट्टी की धोंकनी फूँकने में। एक बार उसने चाक़ू निकालकर एक विद्यार्थी के मार दिया। वह स्वयं लिखता है, "मैं एक अच्छा लड़का नहीं था। मैं एक बेचैन व्यक्ति था, और अब भी हूँ।"

एक बार मुसोलिनी अपनी मा के साथ पड़ोस के रैवेना नगर

में गया। वहाँ की प्राचीन कलात्मक चीज़ों को देखकर उसके हृदय में रैवेना के इतिहास के लिए विशेष आकर्षण उत्पन्न हुआ। उसकी जीवन और सौन्दर्य की भावनायें उन्नत हुईं और उसे सभ्यता के विकास का पता लगा। सायंकाल को सूर्य की अन्तिम किरणों से चमकती हुई दान्ते की समाधि ने उसके जीवन में जाग्रति पैदा की और कैन्डियानो झील के किनारे पर तैरती हुई छोटी-छोटी नावों ने उसके हृदय को स्पर्श किया।

लौटते समय मुसोलिनी ने एक मनुष्य की कुछ चिड़ियाँ चुरा लीं। जब स्वामी ने पीछा किया, तब वह चिड़ियों को पकड़े हुए नदी में कूद पड़ा और तैरकर घर आगया। चिड़ियों का पीछा करने में उसे बड़ा आनन्द आता और स्कूल को जाते समय उसके मुँह पर उदासी छा जाती।

जब वह स्कूल नहीं जाता, तब अपने पिता की भट्टी के पास बैठकर उससे राजनीतिक विषयों पर बातचीत करता। वह बहस करने में बड़ा चतुर था, और अपने विचारों पर ज़ोर देने के लिए मुट्ठी बाँध लेता था। जब कभी उसे ख़ाली समय मिलता, तब वह बोलने का अभ्यास उसी लगन के साथ करता जिस प्रकार हिटलर म्यूनिच के बाग़ों में किया करता था।

एक दिन कमरे में ताला डालकर वह अपने आप ज़ोर से बोल रहा था। मा ने दरवाज़े को खटखटाकर कहा, "मेरे बेटे, क्या तू पागल हो गया है? केवल पागल लोग अपने आप बात-चीत करते हैं। क्या मामला है?"

मुसोलिनी ने उत्तर दिया, "मैं भाषण देने का अभ्यास कर रहा हूँ। एक समय ऐसा आयेगा जब समस्त इटली मुझको बोलते हुए सुनेगी।"

बच्चों का स्कूल छोड़ने के बाद मुसोलिनी फोर्लिमपोप्ली में नॉर्मल स्कूल में भेजा गया। उसकी मा ने कई बार उसको वज़ीफ़ा

दिलाने के लिए स्कूल में अर्ज़ी दी, परन्तु वह असफल रही। किसी प्रकार बचा-खुचाकर वह पढ़ाई का ख़र्च भेजती रही। मुसोलिनी की तबीअत पढ़ने में नहीं लगती। उसका स्वभाव अभी तक उद्धत और गरम था। वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से शासकों और पूँजीपतियों को बुरा-भला कहता। जब राजा उम्बर्टो १६०० ई० में क़त्ल कर दिया गया, तब बेनिटो ने क़ातिल के पक्ष में एक लेख लिखा। उस समय वह १७ साल का था, परन्तु उसके बहुत-से लेख इटली के समाजवादी पत्र 'अवन्ती' में छप चुके थे।

एक साल बाद मुसोलिनी 'ग्रेजुएट' हो गया। अब उसके सामने नौकरी की समस्या उपस्थित हुई। उसकी मा चाहती थी कि वह शारीरिक परिश्रम न करे और एक अध्यापक बने। वह अक्सर कहा करती थी बेनिटो होनहार मालूम पड़ता है। परन्तु वह एक दिलचस्प काम करना चाहता था। उसी समय एक नये प्रकार की मशीन गाँव में आई थी। उसका मन मशीन में लगता। वह उसके पुर्ज़े-पुर्ज़े को ध्यान से देखता और आश्चर्य करता कि एक छोटी-सी मशीन में इतनी शक्ति कहाँ से आगई।

रोटी के प्रश्न ने और मा के आग्रह ने मुसोलिनी की आशाओं पर पानी फेर दिया। उसे अध्यापक का काम स्वीकार करना पड़ा। एक छोटी-सी जगह 'ग्वालटेरी' में वह एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ाने लगा। उसका वेतन प्रतिसप्ताह बारह शिलिङ्ग से भी कम था, परन्तु वह किसी न किसी तरह अपना काम चला ही लेता। पढ़ाने में उसकी विशेष रुचि न थी, फिर भी वह अपने कर्तव्य का भली भाँति पालन करता रहा। उसने अनुभव किया कि विद्यार्थियों को शारीरिक दंड देने की प्रथा ठीक नहीं है। वह उनको दिलचस्प कहानियाँ सुनाता और इस प्रकार उनके हृदय में ज्ञान प्राप्त करने की भावना को जाग्रत करता। सफ़ाई के ऊपर वह

विशेष ज़ोर देता और इस बात में विश्वास रखता कि परीक्षाओं-द्वारा छात्रों की बुद्धि का ठीक ठीक पता नहीं लग सकता है।

लगभग एक साल के बाद उसे यह नौकरी छोड़नी पड़ी। उसने विदेश-यात्रा का निश्चय किया, और सोचा कि शायद स्वतंत्र देशों में अच्छी नौकरी मिल सके। उसने अपनी मा को तार दिया, "मैं विदेश जा रहा हूँ, कृपया ख़र्च भेजिए।"

रोज़ा ने कुछ बचे-खुचे लेरा भेजे। इस धन को लेकर मुसोलिनी स्विटज़रलैंड को रवाना हुआ। वह उन अनेक ग़रीब इटैलियन लोगों में से था जिन्होंने विदेश में अपने भाग्य की परीक्षा करने के लिए अपने देश को छोड़ दिया था।

इस समय मुसोलिनी की अवस्था उन्नीस वर्ष की थी।

*

स्विटज़रलैंड-यात्रा

"रात सुहावनी थी। ऊँचे ऊँचे पर्वतों के पीछे टिमटिमाते हुए तारों के बीच में चाँद मुसका रहा था। लुगानो झील का जल शांत था और चाँदी की चादर के समान फैला हुआ था जिस पर अनेक अनजान, अदृष्ट, प्रकाश-रेखायें आ-आकर टकराती थीं। रेल के डिब्बे में सब लोग सो रहे थे। केवल मैं सोच रहा था। उस दिन मेरे मन में कौन-कौन-से विचार उठे जिनसे मेरे जीवन के दो भाग हो गये—यह मुझे याद नहीं। केवल प्रातः-काल को जब हम लोगों ने जर्मन स्विटज़रलैंड को पार कर लिया, और नवम्बर की वर्षा ने हम-से तिरस्कृत मनुष्य की भाँति बिदा ली, तब मुझे गहरी वेदना के साथ इटली के हरे-भरे मैदान याद आये जिनको सूर्य की किरणें चूमती थीं।"

एक यात्री बोल रहा है। वह भावुक है; विदेश में जाते समय स्वदेश-जीवन के रंगीन चित्र उसके मानस-क्षितिज में टकराते हैं और वेदना की एक गहरी छाया उसके हृदय पर छोड़ जाते हैं। केवल दो शिलिङ्ग जेब में डाले हुए उन्नीस वर्ष की अवस्था में मुसोलिनी स्विटज़रलैंड जा रहा है; तारीख़ ६ जुलाई, सन् १६०२ ई० को।

भूखा, ठंडा और सिकुड़ा हुआ मुसोलिनी न्यूचैटिल झील के किनारे वर्डन स्टेशन पर गाड़ी से उतरा। वह नौकरी की तलाश में चल पड़ा।

इटली के डिक्टेटर ने जर्मनी के डिक्टेटर की भाँति, एक राज के साथी के रूप में शक्ति और प्रसिद्धि प्राप्त करना प्रारम्भ किया। मुसोलिनी लिखता है :—

"तीन दिन तलाश करने के बाद मैं एक मज़दूर की भाँति काम करने लगा। मुझे प्रतिदिन ग्यारह घंटा काम करना पड़ता था, और प्रतिघंटा के लिए ढाई पैसे वेतन मिलता था। एक दिन में एक सौ इक्कीस बार ईंटों से भरे हुए पल्ले मुझे उस मकान तक ले जाने पड़े जो बन रहा था। रात तक मेरी भुजायें बुरी तरह सूज गई थीं। मैंने आग में भुने हुए कुछ आलू खाये। तब कपड़े पहने हुए ही मैं लथपथ चारपाई पर गिर पड़ा।"

मुसोलिनी अपने स्वामी से घृणा करने लगा। वह लिखता है, "मैंने क्रोध में भरकर उसको बुरा-भला कहा। मैं उस दुष्ट का सिर तोड़ डालता, क्योंकि वह मुझको काहिल और सुस्त होने का दोषी बताता था जब कि पत्थरों को ढोते-ढोते मेरी हड्डियों में दर्द होने लगा······

शनिवार की रात आई। मैंने स्वामी से कहा कि मैं नौकरी छोड़ना चाहता हूँ। मैंने उससे वेतन माँगा। गुस्से को छिपाकर उसने मेरे हाथों में पन्द्रह शिलिङ्ग फेंक दिये और कहा 'यह है तुम्हारा वेतन, और यह भी तुम्हारे साथ रियायत है।' मैं क्रोध से जल-भुन गया। मैं कुछ न कर सका। पर क्या करता? क्या उसे मार डालता? मैं भूखा था और मेरे पास जूते नहीं थे। मैं गाड़ी में बैठकर लासेन को रवाना हुआ।"

लासेन में मुसोलिनी के हज़ारों देशवासी थे, और इटली की समाजवादी पार्टी की स्विस शाखा की कार्यकारिणी समिति भी थी। परन्तु मुसोलिनी को उस समय इस बात का पता नहीं था।

व्यर्थ ही वह काम की तलाश में इधर-उधर घूमता रहा। सप्ताह के अंत में उसकी दशा ख़राब हो गई, केवल कार्ल मार्क्स का गिलट का एक सिक्का उसके पास पड़ा रह गया था।

वह गृहविहीन था। भूख के मारे उसका पेट सिकुड़ गया था, और वह एक पत्थर की मूर्ति के नीचे बैठ गया। उस समय वह एक घूमते-फिरते आदमी की तरह नज़र आता था।

वह एक सुन्दर सड़क पर कुछ दूर तक चला। सड़क समुद्र-तट की ओर जाती थी। सूरज डूब रहा था और परछाइँ पड़ते हुए जल की कलकल से घंटियों की सुरीली आवाज़ टकराती थी। "यह आवाज़ उस मीठी लोरी के समान थी जिसको माता अपने बच्चे को सुलाते समय झूले के पास खड़ी होकर गाती है।" वह रोया। वह सोच रहा था कि वह अपने जीवन के दूसरे दिन की कठिनाइयों को कैसे सहन कर सकेगा।

उस शाम की निराशा और क्रोध से भरी हुई याद को वह अत्यंत करुणाजनक शब्दों में लिखता है, "भूख के मारे मेरे पेट में गरम सुइयाँ चल रही हैं। दो वृद्ध व्यक्ति मेरे सामने से चले जा रहे हैं। ये अँगरेज़ मालूम पड़ते हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं उनसे एक पेनी माँगूँ। परन्तु शब्द मेरे ओठों पर आकर शांत हो जाते हैं। स्त्री चिकनी खाल की है। वह सुनहले चाँदी के रत्नों से सुशोभित है। मेरे पास एक फार्दिङ्ग भी नहीं है। मेरे पास न बिस्तर है और न रोटी। मैं गालियाँ देता हूँ। क्या पतित का यह अधिकार नहीं है कि वह घातक को काट ले?"

वह एक नाव के नीचे लेट गया, परन्तु पहाड़ी हवा ने उसे वहाँ से भगा दिया। उसने एक पुल की मेहराब के पास शरण ली। दूसरे दिन सड़क पर उसने एक इटैलियन से कुछ माँग लिया। वह एक रोटीवाले की दूकान पर भागता हुआ गया,

और वहाँ उसने एक रोटी ख़रीदी, "मैं बड़ी तेज़ी के साथ रोटी खा गया। मैंने छब्बीस घंटे से कुछ नहीं खाया था।"

इटली के बहुत-से ग़रीब यात्रियों की भाँति मुसोलिनी का भी बुरा हाल था। परन्तु हिटलर की भाँति, जिसको बहुत दिनों तक भूखों मरना पड़ा और वियना की गन्दी सड़कों पर सोना पड़ा, मुसोलिनी ने अपने भाग्य से हार नहीं मानी। वह अपने 'आत्म-चरित्र' में लिखता है—

"इन परिश्रम और कठिनाइयों के दिनों ने मेरे हृदय को कठोर बना दिया। उन्होंने मुझको बताया कि मनुष्य को किस प्रकार रहना चाहिए। यह मेरे लिए अत्यंत भयानक बात होती यदि मैं अपनी यात्रा में किसी सुखद सरकारी नौकरी को स्वीकार कर लेता। ये शक्तियाँ जो इस समय मेरे पास हैं उन कठिनाइयों से ही संचित की गई हैं। ये संघर्ष के द्वारा मुझे प्राप्त हुई हैं।"

शीघ्र ही वह राजगीरी के काम में दिलचस्पी लेने लगा। उसका अधिकांश समय मज़दूरी करने, क़साई की नौकरी करने और संदेशा ले जाने में बीता। उसके समस्त कार्यों में उसके जीवन की एक गहरी लहर कार्य करती थी। यह लहर थी उसका जोश। असल में वह एक जोशीला नौजवान था।

कुछ दिनों बाद लासेन में इटली के समाजवादी क्लब से मुसोलिनी का सम्पर्क हो गया। एक मनुष्य ने क्लब में उसका परिचय दिया कि वह एक 'फेलोकॉमरेड' था जो अनिवार्य सैनिक शिक्षा के भय से इटली से भाग आया था। परन्तु वास्तव में मुसोलिनी भागकर नहीं आया था। अब वह रोज़ाना रात को समाजवादी क्लब के वाद विवाद में भाग लेने लगा। कुछ समय में वह एक अच्छा वक्ता बन गया। चार महीने में वह राजों और उनके सहायकों के व्यापारिक संघ का मन्त्री हो

गया। आठ महीने भी नहीं बीतने पाये थे कि बर्न के संरक्षक ने उसको क्रांतिकारी होने के कारण वहाँ से निकाल दिया।

दो वर्ष तक वह अपने आदर्शों और विश्वासों को प्रकट करता रहा। वह फ़्रांस, जर्मनी तथा आस्ट्रिया आदि देशों में घूमा। कुछ दिन वह इटली में रहा, परन्तु शीघ्र ही वह फिर स्विटज़रलैंड आ गया। इस बार वह दूसरी जगह रहने लगा। तीसरी अगस्त को वह लासेन में आगया। वहाँ आते ही उसने जनेवा के मज़दूरों की हड़ताल के साथ अपनी सहानुभूति प्रदर्शित की और कुछ चन्दा भी दिया।

सितम्बर में मुसोलिनी एक सभा में गया जहाँ पर तागलिया-लतीला बोल रहा था। मुसोलिनी ने गड़बड़ मचानी शुरू की, और सभा में खलबली पड़ गई। वक्ता ने उससे कुछ कड़े शब्द कहे जिस पर मुसोलिनी ने उसको गालियाँ सुनाईं।

मार्च के महीने में मुसोलिनी और तागलिया-लतीला में एक गम्भीर वाद-विवाद हुआ। इस बार मुसोलिनी बहुत गम्भीर और शान्त था। उसकी उक्तियाँ जो बाद में 'मनुष्य और ईश्वर' (Man and Divinity) नामक लेख में छपी थीं, कुछ-कुछ इस प्रकार थीं—

"धर्मविज्ञान में मूर्खता है, अभ्यास में एक पाप है, और चिकित्सा-शास्त्र एक बीमारी है। बुद्ध से समता करने पर यीशु एक साधारण जीव था। वास्तव में यीशु कितना छोटा मालूम पड़ता है जो दो साल तक छोटे-छोटे गाँवों में घूम-फिरकर व्याख्यान देता रहा और केवल एक दर्जन ही शिष्य बना सका। यीशु कहता है 'ग़रीबों की आत्मायें धन्य हैं, क्योंकि उनके लिए स्वर्ग का राज्य मिल चुका है। परन्तु हम कहते हैं, ग़रीब तुच्छ हैं जो यह नहीं जानते कि संसार में किस प्रकार अपना राज्य स्थापित करें।' यीशु कहता है, 'अधीनता स्वीकार करो।' हम कहते हैं,

'विद्रोह करो।' यीशु की शिक्षायें हमको शक्तिहीन बनाती हैं और दु:ख को जारी रखती हैं।"

इसी समय मुसोलिनी ने अपने पिता का तार पढ़ा, "तुम्हारी मा की दशा बहुत ख़राब है।" उसने अपना बिस्तर कसा और घर को चल पड़ा।

मुसोलिनी के प्रारम्भिक जीवन में दो स्त्रियों का विशेष प्रभाव पड़ा। पहली उसकी मा रोज़ा थी। उसके विषय में वह लिखता है, "मेरा सबसे अधिक प्यार उसके लिए था। वह इतनी शांत, कोमल और मज़बूत थी।" इस बात का काफ़ी प्रमाण मिलता है कि वह अपनी मा को बहुत प्यार करता था। नैपोलियन की भाँति वह अपनी मा से डरता भी था। दूसरी स्त्री जिसने मुसोलिनी पर विशेष प्रभाव डाला एन्जेलिका बैलाबानोव थी।

बैलाबानोव एक धन-सम्पन्न रूसी सौदागर और ज़मींदार की लड़की थी। वह बुद्धिमती थी और उसका स्वभाव उदार था। अपनी समस्त सम्पत्ति को त्यागकर वह स्वतंत्र स्विटज़रलैंड के क्रान्तिकारी आन्दोलन में काम करने लगी थी। वह लैनिन की भक्त थी। जीवनपर्यन्त वह अधिकार से घृणा करती रही और जब बोल्शिविकों ने अपनी क्रांति में ज़ुल्म को स्थान दिया, तब वह उससे अलग हो गई।

यह असाधारण स्त्री मुसोलिनी से स्विटज़रलैंड में मिली और उस पर दयालु हो गई। उसने पूछा, "मैं समझती हूँ कि तुम्हारे पास कुछ काम नहीं है। क्या मैं किसी प्रकार तुम्हारी सहायता कर सकती हूँ?"

आवेश में आकर मुसोलिनी ने उत्तर दिया, "मेरे लिए कुछ नहीं किया जा सकता। मैं बीमार हूँ, मुझसे काम नहीं हो सकता।" दोनों में मित्रता हो गई और उन्होंने समाजवादी पुस्तकों का अनुवाद करने का निश्चय किया।

मुसोलिनी के सम्बन्ध में वह लिखती है, "इस समय वह पूर्णतया स्वच्छंद था। वह इतिहास, अर्थशास्त्र और समाजवादी आदर्श के सम्बन्ध में बहुत कम जानता था। उसने 'कम्यूनिस्ट मैनिफैस्टो' के अतिरिक्त मार्क्स पर कुछ नहीं पढ़ा था। ज़ोरदार शब्दों में क्रान्ति का समर्थन करते हुए वह अन्य सब बातों से घृणा करता था।' एक दूसरे स्थान पर उसने लिखा है, 'उसको मेरे साथ रहने का गर्व था। यदि मुसोलिनी किसी भी व्यक्ति के साथ सच्चा रहा, तो मेरा विश्वास है कि मेरे साथ।"

बैलाबानोव ने उसको पढ़ने के लिए उत्साह दिलाया और उसको अध्ययन के लिए पुस्तकें ला-लाकर दीं। उसने मुसोलिनी के भविष्य को चमकाया। अगले दस वर्षों में वे दोनों इटली की समाजवादी संस्था की 'बाम' पार्टी के नेता हो गये। मुसोलिनी अपने समस्त कार्यों का उत्तरदायित्व अपने साथी के ऊपर छोड़ देता था।

सन् १९१२ ई० में जब मुसोलिनी 'अवन्ती' का सम्पादक हो गया, तो उसने बैलाबानोव को सहायक सम्पादिका नियुक्त किया। योरपीय महायुद्ध के छिड़ने पर दोनों के मार्ग भिन्न हो गये। मुसोलिनी ने युद्ध में प्रवेश किया, बैलाबानोव अलग रही।

सिपाही, अध्यापक और क्रांतिकारी

"वाह, वह दिन भी कितना सुन्दर होगा," राजा विक्टर एमेनुअल अपने महल में लेटा हुआ सोच रहा है, "जब मेरा उत्तराधिकारी संसार में जन्म लेगा। उस दिन मेरी सब कामनायें पूरी हो जायँगी।" सुबह के चार बज रहे हैं। तारीख़ है १७ सितम्बर, सन् १६०४ ई०।

दूसरे दिन राजा की ओर से घोषणा निकलती है, "वे समस्त मनुष्य क्षमा कर दिये जायँगे जो निर्वासन के कारण अनिवार्य सैनिक नौकरी नहीं कर सके, यदि वे इटली वापिस आकर अपना पता दें।"

मुसोलिनी शीघ्र ही स्विटज़रलैंड से गाड़ी में सवार हो लिया। वह इस सम्बन्ध में लिखता है, "मेरे हृदय में घर आने की प्रबल इच्छा जाग्रत हुई, जैसी कि समस्त इटली के निवासियों में होती है। इसके अतिरिक्त अनिवार्य सैनिक शिक्षा मुझको बुला रही थी।"

ख़ुफ़िया पुलिस के चिट्ठे में निम्नलिखित सूचना मिलती है, "३१ दिसम्बर, सन् १९०४ ई० को सैनिक ज़िला फोर्ली में उपस्थित होने पर मुसोलिनी का नाम वेरोना में ठहरे हुए दसवें रेज़ीमेन्ट में दर्ज किया गया। ८ जनवरी, सन् १६०५ ई० को वह वेरोना के लिए रवाना हुआ। ६ सितम्बर, सन् १६०६ ई० को वह प्रेदपियो में आया।"

बीस महीने तक मुसोलिनी ने सेना में नौकरी की। उसका दावा है कि वह प्रत्येक रूप में उत्तम सिपाही था, और यह

दावा ठीक मालूम पड़ता है। वह अपने आत्म-चरित्र में लिखता है—

"मुझे सिपाही-जीवन पसन्द था। अपने इच्छानुसार आज्ञापालन करना मेरे स्वभाव के अनुकूल था। पहले से मैं एक बेचैन, भयङ्कर, गरम दल के क्रांतिकारी के रूप में प्रसिद्ध था। अब मेरे कप्तान के आश्चर्य का अनुमान कीजिए जो मेरी प्रशंसा करने के लिए बाध्य हो गया! यह मेरे लिए एक ऐसा अवसर था जब मैं अपनी गम्भीरता और चारित्रिक सबलता दिखा सका।

"मैं एक साधारण सिपाही की दशा में था, परन्तु मैं अपने कप्तानों के चरित्र, योग्यता और व्यक्तित्व को तौला करता था।......इस प्रकार मैंने सीखा कि एक अफ़सर के लिए यह बात कितनी आवश्यक है कि वह फ़ौजी मामलों का पूरा ज्ञान रक्खे, सिपाहियों में एक उत्तेजना पैदा कर सके और उनमें नियमानुसार जीवन व्यतीत करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न कर सके।"

सैनिक-शिक्षा के पूरे दिन समाप्त भी नहीं हो पाये थे कि मुसोलिनी को अपनी मा की घातक बीमारी की सूचना मिली। वह शीघ्र ही घर की ओर चल पड़ा, परन्तु उसके पहुँचने से पहले ही मा का देहान्त हो चुका था। उसका समस्त उत्साह और सम्पूर्ण शक्तियाँ शिथिल हो गईं। आशाओं पर पानी फिर गया और उसे जीवन में सूनापन मालूम पड़ने लगा। वह लिखता है—

"सहानुभूति के शब्द, मित्रों के पत्र, अन्य सम्बन्धियों की मुझे धैर्य दिलाने की चेष्टा, मेरे इस महान् अभाव की आंशिक पूर्ति भी नहीं कर सके—उस 'बन्द द्वार' के एक इंच भाग को भी नहीं खोल सके।

"काश कि वह आज जीवित होती और मेरी राजनीतिक सफलता को अपने मातृ-भाव से देखकर ख़ुश होती। यह नहीं होना था। परन्तु मुझको इस बात की अनुभूति करके सुख होता है कि इस समय तक वह मुझको देख सकती है और अपने असीम प्यार से मेरे कार्यों में सहायता पहुँचा सकती है।"

लगभग एक हज़ार मनुष्य इस सर्वप्रिय स्त्री के मृत शरीर के साथ समाधि तक गये। मुसोलिनी ने उससे अन्तिम बिदा माँगनी चाही, परन्तु उसके मुँह से शब्द न निकल सके। उसकी आँखों में से आँसुओं की धारा बह निकली और उसने माँ की समाधि पर कुछ फूलों की श्रद्धांजलि दी।

फ़ैसिस्ट लोग कहते हैं कि कुछ दिनों बाद अपने कप्तान को पत्र डालते समय मुसोलिनी ने लिखा था—

"रोना और अफ़सोस करना स्त्रियों का काम है, परन्तु धैर्यपूर्वक कठिनाइयों को सहन करना और चुपचाप मृत्यु को स्वीकार करना, सचाई के मार्ग पर चलना और महान् कार्यों-द्वारा अपने परिवार तथा मातृभूमि के नाम को ऊँचा करना, सजीव पुरुषों को शोभा देता है।"

सेना से निकलकर मुसोलिनी अध्यापकी का पुराना काम करने लगा। एक छोटे से गाँव टोलमेज़ों में उसने १९०६-७ में लड़कों को पढ़ाया। जब सन् १९०६ ई० में वह नियुक्त हुआ, तब ख़ुफ़िया पुलिस ने लिखा 'निरीक्षण की आवश्यकता है।'

यहाँ पर मुसोलिनी का जीवन अधिकतर शांत रहा, परन्तु यहाँ भी वह क्रांतिकारी सभाओं में भाग लेता रहा। १७ फ़रवरी, सन् १९०७ ई० को ब्रूनो की मृत्यु पर की जानेवाली सभा में उसने एक क्रांतिकारी भाषण दिया। एक समाचार-पत्र में उसके कार्य की निन्दा हुई। गाँव के लोगों ने भी उसका विरोध

किया। अप्रैल सन् १९०७ ई० में बोलोग्ना के विश्वविद्यालय ने उसको हाई स्कूलों में फ़्रेंच पढ़ाने का लैसन्स दे दिया।

अब वह ओनेग्लिया के एक प्राइवेट स्कूल में अध्यापक हो गया। वह लिखता है, "मैं फिर ओनेग्लिया को एक अध्यापक के रूप में गया, यद्यपि मैं जानता था कि पढ़ाना मेरी प्रकृति के अनुकूल नहीं था। इस बार मैं एक मिडिल स्कूल में अध्यापक था।"

ओनेग्लिया के 'लिमा' नामक एक समाजवादी पत्र में मुसोलिनी अपने लेख 'सच्चे विरोधी' के नाम से निकालने लगा। उसने कैथोलिक चर्च, होली कम्यूनियन, ईस्टर होलीडे, और ईसाइ धर्म को ज़ोरदार शब्दों में बुरा-भला कहा। इस समय वह क्रांति और सामाजिक परिवर्तन को हिंसा के अतिरिक्त और किसी प्रकार सम्भव नहीं समझता था। सन् १९०८ ई० में उसने ओनेग्लिया के पुलिस-कमिश्नर के पास एक खुला हुआ पत्र भेजा जिसमें लिखा, "ओ इटली के पुलिस-विभाग के लोगो! तुम समझ लो कि मैं तुमसे घृणा करता हूँ। जो कुछ तुम कर चुके हो या आगे करोगे, उसके द्वारा तुम मुझे उस मार्ग से नहीं हटा सकते जिस पर चलने का मैंने निश्चय किया है।"

एक साल बाद मुसोलिनी अपने घर वापस आ गया। उस समय गाँव में बड़ी खलबली मची थी। दैनिक मज़दूरों ने किसानों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया था। मुसोलिनी विद्रोह में शामिल हो गया। १८ जुलाई को वह जेल में भेज दिया गया। अपनी गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में वह लिखता है, "शाम को मैं गिरफ़्तार किया गया और लगभग १०० सवारों के साथ फोर्ली ले जाया गया। मेरी व्यक्तिगत रक्षा के लिए ऐसी असाधारण

देखभाल ने मेरे हृदय को स्पर्श किया।" उसको तीन महीने की सज़ा दी गई, परन्तु बारह दिन बाद वह छोड़ दिया गया।

शीघ्र मुसोलिनी ने इटली के एक सूबे ट्रेन्टिनो को जाने की तैयारी की। वह वहाँ की समाजवादी संस्था का मंत्री तथा वहाँ के पत्र का सम्पादक नियुक्त किया गया। उसका वेतन तीस शिलिङ्ग प्रतिसप्ताह था। वह कहानी लिखता, वाइलिन बजाता और कुछ अध्यापन करता था।

परन्तु मुसोलिनी को वहाँ का वातावरण पसन्द नहीं था। लोग अधिकतर किसान थे और मार्क्स के सिद्धान्तों को नहीं समझ सकते थे। वे वर्ग-संघर्ष के स्थान पर मज़दूरों की आर्थिक दशा को सँभालना चाहते थे। उसने समझ लिया कि वहाँ पर रहकर वह विशेष सफलता नहीं प्राप्त कर सकता।

सरकारी नौकरों और चर्च पर आक्षेप करने के कारण मुसोलिनी के बहुत से शत्रु हो गये। उस पर बैंक की चोरी लगाई गई और वह गिरफ़्तार कर लिया गया। अभियोग में वह निर्दोष साबित हुआ, परन्तु छोड़ा नहीं गया। २५ सितम्बर को उसने भूख-हड़ताल कर दी और दूसरे दिन वह छोड़ दिया गया।

अब वह फिर फ़ोर्ली वापस आ गया। स्पेन की सरकार ने फ्रांसिस्को फेरर को फाँसी दे दी थी। इससे समाजवादी-संसार में खलबली मच गई। मुसोलिनी ने एक बहुत बड़ी भीड़ में व्याख्यान दिया जिसमें उसने सरकार के कार्य की तीव्र शब्दों में निन्दा की। व्याख्यान समाप्त होने पर भीड़ ने पादरी के मकान की खिड़कियाँ तोड़ डालीं और आग लगा दी।

इन दिनों के सम्बन्ध में मुसोलिनी लिखता है, "मैंने अब जाना कि केवल हिंसा के द्वारा इटली के राजनीतिक जीवन में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। समय आ गया है कि मनुष्यों

की आत्माओं को हिला दिया जाय और उनके हृदय में सोचने और कार्य करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न कर दी जाय।"

अगले तीन वर्षों (१९०९-१२) में वह फ़ोर्ली में अपने साथियों के साथ विद्रोहपूर्ण वातावरण में रहा। अब उसका काम फ़ोर्ली के ज़िले में समाजवादी संस्था को सुसङ्गठित करना और एक नवीन समाजवादी साप्ताहिक-पत्र का सम्पादन करना था। इस समय वह छब्बीस वर्ष का था और यहाँ पर रहकर वह प्रधान नेता 'ड्यूस' हो गया।

पत्र का नाम था 'दी क्लास स्ट्रगल' (वर्ग-संघर्ष)। वह इसका मैनेजर भी हो गया। बड़े उत्साह के साथ उसने यहाँ पर काम किया। उसने एक बार कहा, "मैं इस पत्र को स्वयं लिखता हूँ, और मैं इसे अपनी क़लम से लिखता हूँ, कैंची से नहीं।"

यद्यपि मुसोलिनी का वेतन कम था, तथापि उसने इसके लिए कभी शिकायत नहीं की। उसको रुपये की बहुत ज़रूरत रहती थी, क्योंकि एक तो उसे अपने पिता की बीमारी का ख़र्च उठाना पड़ता था, और दूसरे राचेल गिडी को आर्थिक सहायता देनी पड़ती थी। डोना राचेल एक सुन्दर और सुशीला स्त्री थी। सन् १९०१ ई० में मुसोलिनी ने उसको अपना साथी चुना। योरपीय महायुद्ध में उसने राचेल के साथ सिविल मैरिज (अदालती विवाह) कर लिया, और सन् १९२२ ई० में प्रधान मंत्री हो जाने पर धार्मिक विवाह कर लिया।

मुसोलिनी ने सार्वजनिक आन्दोलन की चेष्टा नहीं की। वह लोक-तंत्र-शासन की सदैव आलोचना करता रहा है। उसने कुछ चुने हुए दृढ़ निश्चयवाले लोगों की एक पार्टी बनाई जो शक्ति संचित करके सरकार को छीन सकें और समस्त देश को अपने पीछे चला सकें। वह लिखता है, "हम लोग संख्या की अपेक्षा गुण को अधिक पसन्द करते हैं। सीधी और

आज्ञाकारी भेड़ों की अपेक्षा जो भेड़िये की पहली आवाज़ पर ही भाग खड़ी होती हैं, हम उस शक्तिशाली, दृढ़प्रतिज्ञ और केन्द्रीभूत शक्ति पर अधिक निर्भर रहते हैं जो अपने विश्वास का आधार रखती है और सीधी अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहती है।"

अपनी स्वाभाविक कार्य-क्षमता, परिश्रम और स्पष्टवादिता के कारण मुसोलिनी सर्वप्रिय हो गया। उसकी हार्दिक सचाई का सबको निश्चय हो गया। मुसोलिनी के इस कथन में बहुत कुछ सचाई है, "राजनीति में मुझे एक पेनी का भी लाभ नहीं हुआ है। मैं उन लोगों से घृणा करता हूँ जो सामाजिक संघर्ष के द्वारा लाभ उठाते हैं। मुझे उन लोगों से घृणा है जो राजनीति से धनवान् हो जाते हैं।"

अक्टूबर, सन् १६१० ई० में मिलान की समाजवादी कांग्रेस में मुसोलिनी ने एक भाषण दिया; जिसमें उसने कहा कि "कोई भी इटली का समाजवादी स्वतंत्र राज नहीं हो सकता, और न धार्मिक अन्धविश्वासों को ही सहन कर सकता है।"

उसने 'मातृभूमि' की रक्षा के विचार को क्रोधपूर्वक रोका। उसके विचार से मज़दूरों, भूखों और बेकारों का इससे कोई सम्बन्ध नहीं था। वह साम्राज्यवाद के नाम से बिगड़ता था। उसने राजा विक्टर एमैनुअल के व्यक्तित्व पर आक्षेप किया। स्वयं ५ फ़ीट ६ इंच का होने के कारण वह ४ फ़ीट ११ इंच के राजा को नीची निगाह से देखता था।

सन् १६११-१२ में टर्की और इटली के युद्ध के प्रारम्भ होने पर मुसोलिनी को साम्राज्यवाद की आलोचना करने का अच्छा अवसर मिला। वह पहले से ही धमकी दे रहा था, "युद्ध के समय हम विद्रोह प्रारम्भ कर देंगे। सीमा पर युद्ध का छिड़ना

हमारे लिए आम हड़ताल और गृह-युद्ध का चिह्न होगा। राष्ट्रीय झंडा एक चिथड़ा है जिसको घूरे पर लगाना चाहिए।"

आम हड़ताल शुरू हुई। चारों ओर विद्रोह होने लगा। सरकार के विरुद्ध भाषण दिये गये। सैनिक सवार बुलाये गये, और मुसोलिनी को गिरफ़्तार कर लिया गया। नवम्बर, सन् १९११ ई० में अदालत में उसकी पेशी हुई। बड़ी सफ़ाई और गम्भीरता के साथ उसने अपना बयान दिया, "यदि आप मुझको छोड़ते हैं, तो आप मुझको ख़ुश करेंगे क्योंकि मैं समाज के लिए अपना काम जारी कर सकूँगा। यदि आप मेरे कार्य की आलोचना करते हैं, तो यह मेरे लिए इज्ज़त की बात होगी।"

पाँच महीने बाद जेल से छूटने के दूसरे दिन फ़ोर्ली के साथियों ने मुसोलिनी के स्वागत में दावत दी। 'अवन्ती' पत्रिका ने लिखा, "कॉमरेड मुसोलिनी ने आज सुबह जेल छोड़ी। वह अब पहले की अपेक्षा अधिक समाजवादी है। हमने उसको अपने छोटे-से घर में एक छोटे से परिवार के साथ देखा, और कुछ समय तक हम उसके साथ ठहरे। जेल के कारण उसका स्वास्थ्य ख़राब नहीं हुआ है। इटली के कोने-कोने से बधाई के अनेक तार उसके पास पहुँच चुके हैं।"

इस समय से लेकर योरपीय महायुद्ध के छिड़ने तक वह इटली की समाजवादी संस्था की वाम-पार्टी का नेता रहा। एक बार वह पार्टी से अलग हो गया क्योंकि वह अधिक क्रांतिकारी नहीं थी। दूसरी बार उसने इस शर्त पर पार्टी में प्रवेश किया कि शान्तिप्रिय लोगों को पार्टी में से निकाल दिया जाय। हुआ भी ऐसा ही। एक प्रस्ताव-द्वारा शान्तिप्रिय लोगों को पार्टी से निकाल दिया गया।

अब 'अवन्ती' के सम्पादन का भार भी मुसोलिनी के ऊपर आकर पड़ा। दो साल में उसने ग्राहकों की संख्या को २८,०००

से बढ़ाकर ६४,००० कर दिया। पत्रकार-कला और राजनीति में उसकी शक्ति अद्वितीय थी।

इसी बीच में मुसोलिनी के पिता की मृत्यु हो गई। इस समय एलेज़ैन्ड्रो मुसोलिनी की अवस्था केवल ५७ साल की थी। मुसोलिनी ने अपने 'आत्म-चरित्र' में अपने पिता के सम्बन्ध में लिखा है, "रोमैग्ना का ज़िला, जहाँ पर विदेशी अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिए लगातार संघर्ष होता रहा है, मेरे पिता की विशेषताओं को जानता है। वह साल पर साल अनेक कठिनाइयों का सामना करता रहा, और उसने राजनीतिक संघर्ष में भाग लेनेवालों की सहायता में अपना धन लगाया।"

पिता की मृत्यु के बाद उसके परिवार की एकता नष्ट हो गई। बेनिटो मिलान में बस गया और गम्भीर राजनीतिज्ञ हो गया। आर्नेल्डो ने अपना अध्ययन जारी रक्खा, और एडविज़ शादी करके अपने पति के साथ रहने लगी।

योरपीय महायुद्ध से दो साल पूर्व के जीवन के सम्बन्ध में मुसोलिनी लिखता है, "मैं बहुत सादगी के साथ अपनी स्त्री राचेल के साथ रहता था जो बहुत बुद्धिमती है और मेरे जीवन के उतार-चढ़ाव में बहुत धैर्य और सच्चाई के साथ मेरा साथ देती रही है। मेरी पुत्री एडा उस समय मेरे घर की ख़ुशी थी। हमको किसी बात की कमी नहीं थी। मैंने अपने आपको एक भयंकर संघर्ष के बीच में देखा, परन्तु मेरे परिवार ने मेरे सम्मुख सदैव रक्षा और शांति का ओसिस उपस्थित किया।"

अब मुसोलिनी इटली की समाजवादी संस्था का निर्भय 'ड्यूस' अर्थात् नेता कहलाने लगा। उसने युद्ध के छिड़ने की भविष्यवाणी की। उसके हाथ में शक्ति तेज़ी के साथ आ गई। राजपक्ष कमज़ोर था, उदार-दल में मतभेद हो गया था और साधारण समाजवादी बदनाम किये गये।

जून, सन् १९१४ ई० में 'रेड वीक' के कारण समस्त इटली में खलबली मच गई। कारखानों में हड़तालों की एक लहर फैल गई। मिलान में मुसोलिनी ने मज़दूरों की एक भीड़ इकट्ठी कर ली। गाँवों में भी विद्रोह होने लगा।

१ अगस्त, सन् १९१४ ई० को लड़ाई प्रारम्भ हो गई। गर्मी के दिन थे। बादलों की गहरी छाया के नीचे योरप के समस्त मनुष्य भयभीत खड़े थे, परन्तु इस भय में भी एक मस्ती थी जैसी की साँप के काटने पर होती है। मुसोलिनी ने युद्ध से तटस्थ रहने के लिए आन्दोलन किया। उसने कहा, "इटली के श्रमजीवियो! युद्ध के आतंक को रोको!"

दो महीने बाद वह युद्ध में शामिल होने का पक्षपाती हो गया। इटली का महान् वक्ता मुसोलिनी अपने साथियों-द्वारा बदनाम किया गया, थूका गया और पार्टी से बाहर निकाल दिया गया।

मुसोलिनी ने कुछ चिन्ता नहीं की। उसको अपने कार्यों में विश्वास था। उसे अपने ऊपर सदैव भरोसा रहा है। उसने कहा, "मैं किसी को भी अपने से बड़ा नहीं मानता।" अब समाजवादी मुसोलिनी युद्ध में शामिल हुआ।

योरपीय महायुद्ध में भाग

मुसोलिनी के युद्ध में प्रवेश करने की घटना आश्चर्य-जनक है, और इसके कारणों के सम्बन्ध में बहुत मत-भेद है।

२७ जुलाई को जब आस्ट्रिया ने सर्बिया पर आक्रमण किया और डैन्यूब की घाटी में युद्ध के बादल छा गये, तब मुसोलिनी ने 'अवन्ती' के सम्पादकीय में लिखा "हमारी तटस्थता पूर्ण रूप से होनी चाहिए।" चार दिन बाद वह शांति और तटस्थता का पुजारी मित्र-राष्ट्र-संघ के साथ युद्ध में शामिल होने का ज़ोर-दार पक्षपाती हो गया। इसका क्या कारण था ?

इस सम्बन्ध में अनेक मत हैं। मुसोलिनी और उसकी सहायक सम्पादिका बैलाबानोव के विभिन्न मत उल्लेखनीय हैं। युद्ध प्रारम्भ होने के बाद की घटनाओं के सम्बन्ध में मुसोलिनी लिखता है—

"मेरी दृष्टि इँग्लैंड की ओर थी। वह आगे क़दम रखने के लिए गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा था। अपना महत्त्व तथा गर्व रखने और मनुष्य-जाति की रक्षा करने के लिए उसने युद्ध में प्रवेश किया और जर्मनी के पंजे से योरप को छुड़ाने के लिए सेनाओं का संगठन किया।...एक जाति का नहीं, वरन् बहुत-सी जातियों का भविष्य अंधकार में था। अपने सम्पादकीय आफ़िस में, मैं इस बात को भली भाँति समझता था।

"जर्मनी प्रोपेगैंडा-द्वारा इटली की जनता पर प्रभाव डाल रहा था। जिससे हमारी जाति में सनसनी फैल गई। इससे मुझे क्रोध आया।......परन्तु हमारी जाति युद्ध की ओर बढ़ रही थी। मैं सहायता दे रहा था। समाजवादी संस्था पूर्ण तटस्थता

का पक्षपात कर रही थी ! उसमें बहुत से ऐसे भी थे जो खुले तौर से जर्मनी की सहायता करना चाहते थे। मैं नहीं चाहता था।"

इसके विरुद्ध बैलाबानोव लिखती है—"केवल एक मार्ग जिसके द्वारा इटली को राष्ट्रसंघ के पक्ष में युद्ध में शामिल किया जा सकता था, यह था कि जर्मनी के विरुद्ध युद्ध को एक क्रांतिकारी युद्ध के रूप में समझा जाय। इस कार्य के लिए राष्ट्र-संघ को एक ऐसे वक्ता की आवश्यकता थी जो क्रांतिकारी शब्दावली को जानता हो और जनता की भाषा में बातचीत कर सकता हो। ऐसा मनुष्य मुसोलिनी था।"

इस प्रकार बैलाबानोव ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि फ्रांस से धन प्राप्त होने के लालच से मुसोलिनी ने राष्ट्रसंघ का साथ दिया। परन्तु मुसोलिनी के जीवन की ओर दृष्टिपात करने से यह कथन ठीक नहीं मालूम पड़ता। मुसोलिनी ने धन की कभी चिन्ता नहीं की। जब 'अवन्ती' के सम्पादक के रूप में उसके वेतन को बढ़ाने का प्रश्न उठा, तब उसने तुरन्त इनकार कर दिया। मिलान में जब बैलाबानोव ने उससे पूछा कि वह किस प्रकार अपनी जीविका उपार्जन करेगा, तब उसने उत्तर दिया, "एक दिन में चार शिलिङ्ग मेरे लिए काफ़ी हैं। मेरे लिए यदि कोई और रास्ता नहीं मिलेगा तो मैं ईंटें ढोकर ही इतना पैदा कर सकूँगा।" इससे मालूम होता है कि धन के लालच से मुसोलिनी ने युद्ध में प्रवेश नहीं किया। शायद मुसोलिनी के कथन में सत्य का अंश अधिक हो।

कुछ दिनों बाद मिलान की सड़कों पर एक नया समाचार-पत्र दिखाई पड़ा। पत्र का नाम था 'पोपोलो डी इटैलिया'—एक 'समाजवादी दैनिक पत्र'। सम्पादक था बेनिटो मुसोलिनी। सम्पादकीय में उसने स्वयं को समाजवादी पार्टी के अन्तर्गत

बताया। परन्तु उसने एक नया और भयंकर सिद्धान्त रक्खा; यह था युद्ध।

पार्टी के लोगों ने मुसोलिनी की तीव्र आलोचना की। २५ नवम्बर, सन् १९१४ ई० को बोलोग्ना की समाजवादी कांग्रेस में उसकी निन्दा की गई। जब वह प्लेटफ़ार्म पर बोलने के लिए पहुँचा तब लोगों ने शोर-गुल मचाया और उसको बुरा-भला कहा। परन्तु वह कहता ही चला गया, "तुम समझते हो कि तुम मुझे मारे डाल रहे हो। तुम मुझसे घृणा करते हो, हाँ—क्योंकि तुम अभी तक मुझको प्यार करते हो! परन्तु तुम मुझको नहीं दूर कर सकते। तुम मेरे समाजवादी विश्वास को नहीं मिटा सकते!"

वोटों की एक बड़ी संख्या से वह पार्टी में से निकाल दिया गया।

उसने अपने नये समाचारपत्र में लिखा, "मैं पार्टी से निकाल दिया गया हूँ, परन्तु मैं स्वतंत्र हूँ।" पत्र के ऊपर लिखा था, "क्रान्ति एक विचार है जो संगीनें रखता है। जिसके पास हथियार है, उसके पास रोटी है!" एक छोटे से मकान में उसने अपने पत्र का दफ़्तर बनाया। मुद्रक के साथ उसने ठेका कर लिया। उसको स्वयं रुपये की चिन्ता नहीं थी। वह लिखता है, "मैं धन से घृणा करता हूँ। मैं उसका किसी सुन्दर या अच्छे कार्य में प्रयोग करता हूँ।"

मुसोलिनी ने अपनी नई विचार-धारा को बड़ी तेज़ी के साथ फैलाना शुरू किया। युद्ध में शामिल होने के विचारों का प्रचार करने के कारण पुलिस से उसका झगड़ा हो गया। एक समाजवादी नेता से उसे द्वन्द्व-युद्ध करना पड़ा और फिर एक सैनिक अफ़सर से लड़ना पड़ा। मिलान में उसने विद्रोह की आग धधका दी।

अन्त में २४ मई, सन् १६१५ ई० को इटली ने राष्ट्रसंघ की ओर से महायुद्ध में प्रवेश किया ! हिटलर की भाँति जिसने युद्ध का अवसर मिलने पर घुटनों के बल झुककर ईश्वर को धन्यवाद दिया था, मुसोलिनी भी सफलता की ख़ुशी से फूला न समाया।

१ सितम्बर, सन् १६१५ ई० मुसोलिनी के लिए बहुत ही ख़ुशी का दिन था जब कि वह सेना में भर्ती हुआ। उसने निश्चय किया कि वह पहले ही दिन से सबसे अच्छा सैनिक होने का प्रयत्न करेगा और अपने कर्तव्य का भली-भाँति पालन करेगा। शीघ्र ही उसने अपने को आल्प्स पर्वत की खाइयों में पाया।

कुछ महीनों तक पर्वतों पर उसको अनेक कठिनाइयाँ सहनी पड़ीं। सर्दी, वर्षा, भूख, सामान की कमी, बम के गोलों का अभाव आदि के कारण मुसोलिनी की आत्मा विद्रोह कर उठी। कुछ दिनों में वह 'कारपोरल' (सार्जेन्ट के नीचे का अफ़सर) बना दिया गया। साहस और दृढ़ता में वह अपने साथियों में सर्वप्रथम ठहराया गया। साथ ही साथ वह अपने पत्र के लिए युद्ध के समाचार भी भेजता रहा!

२२ फ़रवरी, सन् १६१७ ई० की सुबह को इटली की खाइयों में एक दुर्घटना घटी। उनके बम के गोलों में से एक अकस्मात् फट गया। चार सिपाही मर गये, औरों के घातक चोट लगी। मुसोलिनी को भी बहुत चोट आई। वह शीघ्र ही अस्पताल भेजा गया जहाँ पर बम के चवालीस टुकड़े उसके शरीर में से निकाले गये। उसका मांस टुकड़े-टुकड़े हो गया, उसकी हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। एक महीने में सत्ताइस बार ऑपरेशन किया गया। यह मुसोलिनी के जीवन में महान् कष्ट का समय था, परन्तु इससे उसकी शारीरिक सहनशीलता का अनुमान लगाया जा सकता है।

कुछ महीने तक मुसोलिनी को 'बैसाखी' के सहारे चलना पड़ा। फिर वह अपने समाचार-पत्र के दफ़्तर को वापस आ-गया। अब वह काग़ज़ी लड़ाई लड़ने लगा। रूस युद्ध में पीछे हटने लगा था। मुसोलिनी इटली में समष्टिवादी प्रोपेगैंडा को रोकने और लोगों को उत्साह दिलाने के लिए अपने पत्र में ज़ोरदार लेख लिखने लगा।

अक्टूबर, सन् १६१७ ई० में इटली की सेना बुरी तरह पीछे हटने लगी। मुसोलिनी लिखता है, "एक इटली-निवासी और राजनीतिज्ञ के रूप में मुझे कभी इतना दुःख नहीं उठाना पड़ा जितना की कैपोरेटो की पराजय पर उठाना पड़ा था।" वेनिस के सूबों का उत्तरी भाग इटली के शेष भाग से अलग होनेवाला था। अँगरेज़ी और अमरीकन जत्थों की सहायता से इटली के निवासी अन्तिम युद्ध के लिए तैयार हो गये। मुसोलिनी अपनी सम्पूर्ण शक्ति से युद्ध के लिए जोश पैदा करने लगा। उसने सुस्त और कमज़ोर लोगों में जाग्रति पैदा की। उसने सेना का संगठन करने, इटली के उत्तर में सैनिक शासन स्थापित करने और समाजवादी पत्रों को दबाने के लिए ज़ोरदार शब्दों में अपील की।

सम्पूर्ण इटली एक गहरी नींद से जगा। आक्रमण शुरू हुआ। सर्दी समाप्त हो गई और इटली-निवासी पाएव नदी के किनारे खड़े थे। मुसोलिनी लिखता है, "प्रत्येक के हृदय में कैपोरेटो के दिनों को भूल जाने की गहरी इच्छा थी। हमको वापस जाना था—उसी स्थान पर जहाँ पर हमारे मृत तथा जीवित भाई हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। सबसे अधिक हमारे मृत भाइयों की याद हमको पुकार रही थी।"

सन् १६१८ ई० के वसन्त और ग्रीष्म ने इटली की सेना को कुछ-कुछ मज़बूत बनाया और आस्ट्रिया तथा हंगरी के जत्थों

को पीछे हटा दिया। अक्टूबर में इटली के इक्यावन जत्थों ने—तीन अँगरेज़ी, दो फ्रांसीसी, एक अमरीकन और कुछ जेकोस्लावाकिया के जत्थों की सहायता से आस्ट्रिया की सेना को अन्तिम बार पूर्णरूप से परास्त किया। ये जत्थे सनैग्लिया तक बढ़ गये और उन्होंने ट्रेन्टो, उडाइन तथा पाएव के ढाल की ओर बढ़ना शुरू किया। इटली की सेना ने ट्रेन्टो पर अधिकार कर लिया।

मुसोलिनी अपने 'आत्म-चरित्र' में विजयी इटली का एक सजीव चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित करता है, "विजय ने हमारे हृदयों और आत्माओं को सन्तुष्ट किया। उसने इटली-निवासियों को आनन्द में मग्न कर दिया। उन्होंने मृत तथा जीवित लोगों की हृदय से प्रतिष्ठा की। अक्टूबर, सन् १९१८ ई० से दिसम्बर तक इटली लगातार उन्नति की ओर बढ़ती हुई दिखाई पड़ती थी।

"इटली ने योरपीय महायुद्ध में इतने मनुष्यों की आहुति दी—६५२,००० काल के ग्रास हुए, ४५०,००० विकृत हुए और १०,००,००० घायल हुए। हमारे देश में एक भी ऐसा परिवार नहीं है जिसने इक्तालीस महीनों में युद्ध की वेदी पर अपना एक भाग न रक्खा हो। दस साल बाद मैं समझता हूँ कि विधवाएँ तथा अनाथ हमारी जन-संख्या का एक बड़ा भाग हैं। वे देश-वासियों के हृदय में श्रद्धा तथा सम्मान उत्पन्न करते हैं।"

युद्ध के बाद मुसोलिनी को अपने ऊपर पूरा विश्वास हो गया। उसने युद्ध में इस बात को सिद्ध कर दिखाया कि वह बिलकुल निर्भय था और दृढ़तापूर्वक कठिनाइयों का सामना कर सकता था। अब उसको निश्चय हो गया कि वह अपने देश के भाग्य-नक्षत्र को चमकाने का पूर्णरूप से अधिकारी है।

फैसिज़्म का जन्म

युद्ध की चिनगारी चमकी और बुझ गई। सन् १९१८ ई० में वर्साई की सन्धि ने अनेक जातियों के भाग्य का निपटारा किया। जीती हुई जातियों का भाग्य-नक्षत्र चमका और हारी हुई जातियों के जीवन की आशायें पतन के गर्त्त में विलीन हो गई। प्रेसिडेंट विल्सन, लॉयड जार्ज और क्लीमान्सो की अध्यक्षता में अमरीका, इँग्लैंड और फ्रांस ने खूब लाभ उठाया। परन्तु इटली के प्रतिनिधियों की समस्त आशाओं पर पानी फिर गया। उनके साथ शत्रुओं के समान व्यवहार किया गया। ज़ारा के बन्दरगाह के अतिरिक्त समस्त डालमैटिया इटली के हाथ से चला गया। फ़्यूम पर झगड़ा था। औपनिवेशिक समस्या भी इटली के प्रतिकूल हल की गई। इसका कारण था इटली की कमज़ोरी।

इटली के प्रधान मंत्री निटी और उसके मंत्रि-मंडल ने कहा कि सन्धि इटली के लिए सब प्रकार से हितकर थी। चुनाव का क़ानून दोहराया गया। अगस्त में कैमोरेटो की घटना पर बैठी हुई कमेटी की रिपोर्ट छपी जिससे सेना की प्रतिष्ठा को बहुत आघात पहुँचा। फ़्यूम में इटली के निवासियों और फ्रांसीसियों में झगड़ा हो गया। राष्ट्रसंघ की ओर वैमनस्य बढ़ने लगा।

इस संधि से केवल इटली के साथ ही विश्वासघात नहीं किया गया, बल्कि बहुत-से इटली के निवासियों को भी धोखा दिया गया। युद्ध से लौटे हुए सिपाहियों के घरों की अवस्था बहुत ही ख़राब हो गई थी। इस प्रकार राष्ट्रवादी लोगों का भविष्य जिन्होंने युद्ध में शामिल होने के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया था, अन्धकारमय दिखाई पड़ता था। इसके विपरीत समाजवादी लोग

उन्नति करते जा रहे थे। उन्होंने पहले ही कहा था कि युद्ध में प्रवेश करने से इटली को कुछ भी लाभ नहीं होगा। अब समाजवादियों ने सरकार से अपने लिए बहुत-से अधिकार माँगे।

२३ मार्च सन् १९१९ ई० को मिलान में मुसोलिनी ने ५३ साथियों की सहायता से फ़ैसिस्ट आन्दोलन की नींव डाली। फ़ैसिज़्म शब्द फ़ैसी (fasci) से निकला है। सन् १८९० ई० में सिसली में भूमिपतियों से युद्ध करने के लिए फ़ैसी (जत्थों) की स्थापना की गई थी, परन्तु वे बुरी तरह से कुचल दिये गये। जब मुसोलिनी छोटा था, तब रोमैग्ना में उसके पिता की भट्टी के पास लोगों में इस सम्बन्ध में अक्सर बातचीत होती थी।

सन् १९१४-१५ ई० में इटली को युद्ध में शामिल करनेवाले आन्दोलन ने 'फ़ैसी डी एज़िओं रेवोलूश नेरिया' (क्रान्तिकारी जत्थों) को जन्म दिया जिसमें मुसोलिनी के अतिरिक्त अन्य लोग भी सम्मिलित थे। मुसोलिनी ने सन् १९१९ ई० में इसको पूरी तरह से अपनाया और अपने साथियों के जत्थे का नाम 'फ़ासिस्ट लड़नेवाले' रक्खा। इन लोगों का उद्देश्य अपने तथा देश के अधिकारों को सुरक्षित रखना था। वे संयुक्त इटली के पक्षपाती थे जिसमें टाइरल, डालमेरिया और फ़्यूम शामिल थे।

इस समय मिलान में मुसोलिनी ने अपने सिद्धान्त बनाये और उनको भाषा में लिखा। ये सिद्धान्त हिंसात्मक आन्दोलन पर उतना ही ज़ोर देते थे जितना कि हिटलर के वे ज़ोरदार व्याख्यान जो म्यूनिच के मज़दूरों और सिपाहियों को दिये जा रहे थे।

जून में मुसोलिनी ने कहा, "खेतों पर किसानों का अधिकार होना चाहिए।" जुलाई में उसने अनुचित लाभ उठानेवालों को

समाप्त करने का संकेत किया। अगस्त में उसने खानों और रेलों पर अधिकार स्थापित करने का पक्ष लिया। समाजवादी नेताओं को उसने बुरा-भला कहा।

निटी-सरकार ने नये चुनाव का निश्चय किया। चुनाव की तिथि थी १६ नवम्बर, सन् १६१६ ई०। प्रत्येक पार्टी एक दूसरी का सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने लगी। मुसोलिनी चाहता था कि उसकी पार्टी अकेली ही चुनाव के लिए कोशिश करे। उसने अन्य पार्टियों से सहयोग प्राप्त करना अनुचित समझा। वह जानता था कि बहुमत उसके और उसके साथियों के विरुद्ध था, परन्तु उसने अकेले ही खड़ा होना पसन्द किया। बहुत-सी सभाओं में उसने व्याख्यान दिये। एक व्याख्यान में उसने कहा, "यदि किसी प्रकार की क्रान्ति की जाय, तो यह आवश्यक है कि उसका आधार मेज़िनी के उत्तम विचार हों; और वह कार्लो पिसाकेन के भावों से सजीव की जाय, तथा इटली के वातावरण के पूर्णतया अनुकूल बनाई जाय।"

चुनाव में समाजवादियों को १५६ स्थान मिले। उदार-दल को १०१ मिले और मुसोलिनी की, जो एक स्वतंत्र समाजवादी के रूप में खड़ा हुआ था, बुरी तरह हार हुई। मिलान में समाजवादियों ने 'खोये हुए नेता' का एक बहुत बड़ा जनाज़ा निकाला। मुसोलिनी क्रोध से जल उठा।

कुछ दिनों बाद मुसोलिनी और उसके साथियों ने समाजवादी जुलूस पर बम फेंका। मुसोलिनी को जेल हुई। ६ महीने बाद उसने फिर अपने साथियों का संगठन किया। अब उनकी संख्या १७,००० थी। इन दिनों मुसोलिनी को कठिन परिश्रम करना पड़ा। वह लिखता है, "प्रत्येक दिन एक युद्ध था। छोटी सड़क सदैव पुलिस और फौज के जत्थों से भरी रहती थी। मैंने सम्पादकीय दफ़्तर को एक छोटा-सा क़िला बना लिया था। समाचार-पत्र

पर नित्य प्रतिबन्ध लगाया जाता था। मैं उसको बेच सकता था, परन्तु मैंने फिर भी उसे जारी रक्खा।"

अक्टूबर, सन् १६१६ ई० में फ़्लोरेन्स में इटली के फ़ासिस्ट लोगों की प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सभा हुई। वक्ताओं में से कवि मैरीनेटी ने फ़ैसिज़्म के पक्ष में आवाज़ उठाई। मुसोलिनी फ़्यूम में डी एनुन्जिओ से बातचीत करके वापस आया था। सभा के समाप्त होने पर वह रोमैग्ना को चला गया।

सन् १६२० ई० के प्रारम्भ में अनेक सभायें हुईं और अशान्ति बढ़ चली। जनवरी में एक डाकख़ानों की और दूसरी रेलवे की हड़ताल हुई। तीन बार निटो को, जिसको फ़ासिस्ट सदैव घृणा की दृष्टि से देखते थे, मंत्रिमंडल बनाने में सफलता हुई। मुसोलिनी और उसके साथी उससे लगातार लड़ते रहे। साथ ही साथ वे समाजवादियों और उदार दलवालों का भी विरोध करते रहे। सशस्त्र लड़ाइयाँ, क़त्ल, सड़कों पर मारपीट, नित्यप्रति की बातें हो चलीं। बम फेंके गये और एक बार मुसोलिनी के क़त्ल की आयोजना हुई, परन्तु इसमें सफलता नहीं मिली।

निरन्तर परिश्रम करते हुए, व्याख्यान देते हुए और लेख लिखते हुए उसे यह देखकर सन्तोष होता था कि समाजवादियों की ग़लत नीति से उसके साथियों की संख्या बढ़ रही थी। सन् १६२१ ई० के चुनाव में वह १,७,८००० वोटों से सर्वप्रथम रहा। वह मिलान, बोलोग्ना और फैरारा में चुना गया। पैंतीस फ़ैसिस्ट पार्लियामेंट-भवन में घुसे। मुसोलिनी और उसके साथियों ने बदलती हुई सरकारों के विरुद्ध अनेक व्याख्यान दिये।

क़लम और तलवार दोनों ने ही समान रूप से मुसोलिनी की सहायता की। अक्टूबर, सन् १६२१ ई० में उसे अपने एक पुराने समाजवादी साथी से द्वन्द्व-युद्ध करना पड़ा। मुसोलिनी लिखता है, "अनेक चोटों के बाद हकीम लोग युद्ध को रोकने के लिए बाध्य

हो गये, क्योंकि मेरे प्रतिद्वन्द्वी के हृदय पर चोट पहुँची। इसके कुछ समय पहले मैं मेजर बैसेजिओ से पार्लियामेंट-सम्बन्धी विवाद के ऊपर एक द्वन्द्व-युद्ध कर चुका था।

नवम्बर, सन् १९२१ ई० में मुसोलिनी ने रोम में फासिस्टों की एक बहुत बड़ी कांग्रेस की। उसने महसूस किया कि पार्टी का ठीक तरह से निर्माण करना चाहिए। कांग्रेस के सम्बन्ध में मुसोलिनी लिखता है, "वह एक स्मरणीय सभा थी। वहाँ पर मेरे दृष्टिकोण की एक स्वर से प्रशंसा की गई।"

मज़दूर अभी तक फ़ासिस्टों से लड़ रहे थे। निटी और जिओलिटी के मंत्रिमंडल के पश्चात् बोनोमी की सरकार ने शांति स्थापित करने का प्रयत्न किया; परन्तु वह असफल रही। इटली तेज़ी के साथ बदनाम होता जा रहा था। उसके पतन को रोकने के लिए एक ऐसे आदमी की आवश्यकता थी जो पूर्णरूप से संगठन कर सके। मुसोलिनी इन सब बातों को भली-भाँति समझ रहा था। अब उसने क्रान्ति की तैयारी की।

रोम पर धावा

२८ अक्टूबर, सन् १९२२ ई० को समाचार-पत्र के दफ़्तर में घंटी बजी, जनरल सिटैडिनी ने टेलीफ़ोन पर मुसोलिनी से कहा, "राजा आपको प्रधान-मंत्री-पद स्वीकार करने के लिए रोम बुला रहे हैं।"

एक धीमी-सी आवाज़ में मुसोलिनी ने उत्तर दिया, "मैं तब रोम आऊँगा जब कि सरकारी तौर पर लेख-द्वारा मुझे बुलाया जायगा।"

थोड़ी देर बाद तार मिला, "राजा विक्टर एमैनुअल आपको शीघ्र रोम बुला रहे हैं। वे एक नया मंत्रि-मंडल बनाने का काम आपके सुपुर्द करते हैं—जनरल सिटैडिनी।"

यह घटना मुसोलिनी के जीवन की सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण घटना है। इसने इटली के इतिहास को मुसोलिनी के साथ बाँध दिया। इस आकस्मिक परिवर्तन का कारण था 'रोम पर धावा।'

बोनोमी के प्रधान-मंत्री-पद से त्याग-पत्र देने के बाद राजा ने दो बार मुसोलिनी को बुलाया; परन्तु कुछ समझौता न हो सका। बोनोमी फिर प्रधान-मंत्री हो गया; परन्तु अबकी बार फिर उसके साथियों की संख्या कम हो गई।

अगले चुनाव में फैक्टा प्रधान मंत्री हो गया। वह पार्लिया-मेंट का एक पुराना सदस्य था और जिओलिटी का शिष्य था। उसने देश की बिगड़ती हुई हालत में शांति स्थापित करने की कोशिश की। इन महीनों में इटली की दशा वैसी ही थी जैसी

कि हिटलर से पूर्व जर्मनी की थी, जहाँ समष्टिवादी और नाज़ी एक दूसरे के विरुद्ध ज़ोर-शोर से लड़ रहे थे।

पहली मई को वामपार्टी और दाहिनीपार्टी में झगड़ा हो गया। २४ तारीख़ को रोम में एक आदमी मारा गया और चौबीस घायल हुए। आम हड़ताल शुरू हो गई। मुसोलिनी ने फ़ासिस्ट लोगों को बढ़ने की आज्ञा दे दी। हड़ताल से लोग डर गये।

१२ जुलाई को एक लेख छपा, जिससे पता चला कि सरकारी बजट में छ: मिलिअर्ड (इटली का एक सिक्का) की कमी पड़ी। सात दिन बाद पार्लियामेंट में मुसोलिनी ने फैक्टा-सरकार को सहायता देनी बन्द कर दी।

उसी दिन फैक्टा-सरकार का पतन हो गया। देश को फ़ैसिज़्म से बचाने के लिए मज़दूर-दल, समाजवादी पार्टी तथा लोकतंत्रवादी पार्टी ने आम हड़ताल कर दी।

मुसोलिनी ने अपने साथियों को आन्दोलन शुरू करने की आज्ञा दे दी। मिलान में 'अवन्ती' पर आक्रमण किया गया। पत्र की पिछली प्रतियाँ जला दी गईं। फ़ैसिस्टों ने हड़ताल को समाप्त करने के लिए बिजली के स्टेशनों पर अधिकार कर लिया। मुसोलिनी राजा के पास बुलाया गया; परन्तु इस बार भी सफलता नहीं हुई। फैक्टा फिर प्रधान-मंत्री बना दिया गया।

मुसोलिनी ने शीघ्र रोम पर धावा करने का निश्चय कर लिया।

१६ अक्टूबर को मुसोलिनी ने मिलान में सेना के एक अफ़सर को बुलाया जो उसको बहुत मानता था। उन्होंने राजनैतिक और सैनिक संगठन का एक ढंग सोचा। फ़ासिस्टों के कई जत्थे बनाये गये। एक वर्दी, एक नारा और एक प्रमुख शब्द बनाया गया। सैनिक और राजनैतिक जत्थों ने मुसोलिनी की आज्ञा का

पालन किया। अंत में आवश्यक आज्ञायें दी गईं। ट्रेन्टो, अन्कोना और बोल्ज़ेनों की विजय प्रारम्भ हुई।

ड्यूस ने इटली के विभिन्न भागों में चार ज़ोरदार भाषण दिये। जगह-जगह सभायें हुईं। मुसोलिनी लिखता है, "मैं एक विजयी और रक्षक के नाम से पुकारा गया। मुझे इससे आशा बँधी; परन्तु मुझे घमंड नहीं हुआ। जितना ही मैंने अधिक सोचा, उतना ही अपने उत्तरदायित्व के भारीपन को महसूस किया। उन चारों शहरों में, जो एक दूसरे से इतने विभिन्न और दूर थे, मैंने एक ही प्रकार की रोशनी देखी।"

फ़ासिस्ट-आन्दोलन के नेता फ़्लोरेन्स में बुलाये गये। एक सभा हुई। मुसोलिनी सभापति बना। अम्ब्रिया की राजधानी पैरूजिआ को केन्द्र-स्थान चुना गया, जहाँ से रोम पहुँचना आसान था। असफलता होने पर वे एपीनाइन पर्वत को पार करके पो नदी की घाटी में आराम कर सकते थे।

जब सब प्रकार की तैयारी हो गई तब मुसोलिनी ने क्रान्ति की घोषणा कर दी। उसने कहा, "इटली के फ़ासिस्ट लोगो! रोमन लोगों की भाँति अपने जोश और शक्ति को बढ़ाओ। हमको अवश्य जीतना चाहिए। हम जीतेंगे। इटली चिरजीवी हो। फ़ैसिज़्म चिरजीवी हो!

"सेना को इस युद्ध में भाग नहीं लेना चाहिए। विटोरिया वेनेटो की सेना की प्रतिष्ठा को फ़ैसिज़्म क़ायम रक्खेगा। फ़ैसिज़्म पुलिस के विरुद्ध नहीं जा रहा है; बल्कि एक राजनैतिक पार्टी का नाश करना चाहता है जो डरपोक और अयोग्य है और चार साल में देश में किसी प्रकार का शासन नहीं स्थापित कर सकी है। धनी लोगों को जानना चाहिए कि फ़ैसिज़्म देश में शान्ति स्थापित करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता जिससे देश शक्तिशाली और धनवान् हो। खेतों और कारख़ानों में काम करनेवालों तथा

रेल और दफ़्तरों के कर्मचारियों को फ़ासिस्ट सरकार से डरना नहीं चाहिए। उनके न्यायपूर्ण अधिकार सुरक्षित रक्खे जायँगे। हम निःशस्त्र शत्रुओं पर भी दया करेंगे।"

उसी रात को क्रीमोनिया, एलीज़ेन्ड्री और बोलोग्ना से झगड़े का समाचार मिला। मुसोलिनी ने अपने पत्र के दफ़्तर की रक्षा का पूरा प्रबन्ध कर लिया। एक छोटा-सा घेरा डाला गया; परन्तु सरकारी जत्थे के अफ़सर ने संधि कर ली। रात में मिलान के प्रमुख राजनीतिज्ञ मुसोलिनी के पास आये और उससे लड़ाई रोकने के लिए कहा, ताकि कहीं गृह-युद्ध से देश का नाश न हो जाय। परन्तु मुसोलिनी टस से मस नहीं हुआ, प्रधान-मंत्री फैक्टा ने राजा से मार्शल-लॉ जारी करने को कहा; परन्तु राजा ने ऐसा करने से मना कर दिया। राष्ट्रवादी दल के नेता एडमिरल डेरेवेल ने उसी दिन प्रातःकाल राजा को आगाह कर दिया था कि सेना 'राष्ट्रीय आन्दोलन' पर आक्रमण नहीं करेगी। राजमाता 'इटली के पुनर्जन्म के आन्दोलन' से सहानुभूति रखती थी। राजा का चचेरा भाई आओस्टा का ड्यूक फ़ासिस्ट जाल में फँस चुका था।

इसी बीच में फ़ासिस्ट लोग रोम के दरवाज़ों के समीप आ गये थे। मुसोलिनी अभी तक मिलान में था। शीघ्र ही राजा की ओर से ड्यूस के पास प्रधान-मंत्री का पद स्वीकार करने के लिए तार भेजा गया।

हाथों को बरसाती में दबाये हुए, टोप को आँखों तक झुकाये हुए, मुसोलिनी रेल पर सवार हुआ। उसकी आँखें मुश्किल से उस बड़ी जोशीली भीड़ को देख सकीं जो स्टेशन पर चिल्ला रही थी "रोम को! रोम को!" उसने अपने सिपाहियों को एक संदेश छोड़ा "'अवन्ती' को जला दो।"

उस रात को, जब कि गाड़ी धड़धड़ाती हुई इटली के एक लम्बे किनारे से तेज़ी के साथ चली जा रही थी, मुसोलिनी के पुराने समाजवादी पत्र के दफ़्तर से आग की लपटें निकल रही थीं।

सैन्टा मैरीनेला पर वह ४०,००० ब्लैकशर्ट* सिपाहियों की भीड़ को देखने के लिए उतर पड़ा। रोम में लोग बड़े जोश से उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसने अपना बक्स खींचा, और अपनी काली क़मीज़ पहन ली। स्टेशन पर दूसरी भीड़ ने उसका स्वागत किया।

वह राजा के पास गया और हाथ मिलाया। उसने राजा से कहा, "मेरी वर्दी के लिए क्षमा कीजिए। मैं अभी हाल ही में एक रक्तपातहीन युद्ध से आया हूँ।"

दूसरे दिन १,००,००० काली कुर्तीवाले सिपाहियों ने राजा तथा उसके नये प्रधान-मंत्री के सामने क़वायद की। तीसरे दिन मुसोलिनी ने फ़ासिस्ट राष्ट्र का काम अपने हाथ में लिया।

---

* मुसोलिनी के सिपाही काली क़मीज़ पहनते थे, इसलिए उनका नाम 'ब्लेकशर्ट' अर्थात् काली कुर्ती पड़ गया था।

शासन-व्यवस्था

प्रधान मंत्री होने पर मुसोलिनी ने विधानपूर्वक शासन करने का प्रयत्न किया। उसने तीन लाख सशस्त्र सिपाहियों को राजधानी पर धावा करने की आज्ञा नहीं दी। उसने विरोधी नेताओं को दंड नहीं दिया। कुछ समय के लिए उसने तानाशाही का विचार छोड़ दिया; क्योंकि वह देश में शांति स्थापित करना चाहता था। इसलिए उसने राष्ट्रीय ढङ्ग का मंत्रिमंडल बनाने का निश्चय किया। उसने चार फ़ासिस्ट, दो नौकर अफ़सर, एक राष्ट्रवादी, दो जातीय उदार दलवाले, दो कैथोलिक, दो लोकतंत्रवादी और एक समाजवादी को अपने मंत्रिमंडल में शामिल किया। ज़िले के अफ़सरों को उसने सूचना दे दी, "मैं चाहता हूँ कि ऊँचे-से ऊँचा और नीचे-से नीचा प्रत्येक अफ़सर देश के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपने कर्तव्य का भली भाँति पालन करे।"

प्रधान मंत्री की हैसियत से पार्लियामेंट में अपने कार्यों का लेखा देते हुए और भावी कार्य-क्रम को बताते हुए उसने कहा, "यदि मैं चाहता तो अपनी सफलता का दुरुपयोग कर सकता था। मैंने ऐसा नहीं किया। अपने तीन लाख सिपाहियों की सहायता से जो सब प्रकार से मेरी आज्ञा का पालन करने के लिये सदैव तैयार हैं, मैं उन सब लोगों को दंड दे सकता था जिन्होंने फ़ैसिज़्म को बदनाम करके उसको कीचड़ में डालने की कोशिश की। मैं इस बड़े कमरे को सिपाहियों से भर देता। मैं इस पार्लियामेंट को सदैव के लिए समाप्त कर देता और पूर्णतया फ़ासिस्ट सरकार स्थापित कर लेता। परन्तु मैंने ऐसा निश्चय नहीं किया—कम से कम इस समय!"

आमतौर पर यह प्रश्न पूछने पर कि तुम्हारा कार्यक्रम क्या है ? मुसोलिनी उत्तर देता, "शासन करना ।" खास तौर पर पूछने पर कि फ़ैसिज़्म की प्रमुख समस्या क्या है ? वह कहता, "इसका स्थायित्व ।"

मुसोलिनी ने इतना मुलायम मार्ग क्यों स्वीकार किया ? इसका उत्तर यह है :—

"मैं इस बात को नहीं भूला कि मेरे हाथों में एक पार्लियामेंट थी, एक 'चैम्बर ऑव डिपुटीज़' था, जो सदैव मुझे जाल में फँसाना चाहता था और जो केवल भय से दब सकता था । राजा देखना चाहता था कि मैं क्या करता हूँ । पोप घटनाओं को चिन्ता के साथ देख रहा था । अन्य जातियाँ हमारी क्रांति को यदि शत्रुता के साथ नहीं तो अविश्वास के साथ अवश्य देख रही थीं । विदेशी बैंक समाचार के लिए चिन्तित थे । सबसे पहले नये राज्य के स्थायित्व का निश्चय कराना नितान्त आवश्यक था ।"

मुसोलिनी को पार्लियामेंट-द्वारा बहुत-सी शक्तियाँ मिल गईं । अब उसके सामने फ़ासिस्ट सिपाहियों की समस्या थी । ये हिटलर के सिपाहियों की तरह अभी तक नौसिखिए थे । वह उनको न तो अलग ही कर सकता था और न उसी हालत में रख सकता था; इसलिए उसने राष्ट्रीय दृढ़ता और रक्षा के लिए एक सेना बनाई । इसके नेता वे अनुभवी अफ़सर थे जो महायुद्ध में लड़ चुके थे और फ़ासिस्ट लड़ाइयों का अनुभव प्राप्त कर चुके थे ।

कुछ समय बाद फ़ासिस्टों की एक बड़ी कौंसिल बनाई गई, जो पुरानी संस्थाओं से अलग और अपर थी । यह फ़ैसिज़्म की प्रधान संस्था थी । मुसोलिनी इसकी प्रशंसा में कहता है, "बड़ी कौंसिल सदैव सफल हुई है । मैं उसका सभापति हूँ और मैं कह

सकता हूँ कि सब प्रस्ताव और सरकारी रिपोर्टें जो पत्रों में पूरी तरह से निकली थीं मेरे हाथ से लिखी गई हैं।"

इसके बाद पुलिस का एकीकरण हुआ। निटी के बनाये हुए 'रॉयल गार्ड' दबा दिये गये, यद्यपि उनके दबाने से बहुत-सी बुरी घटनाएँ हुईं। मिलान और ट्यूरिन में हलचल मच गई। मुसोलिनी कहता है, "चालीस हज़ार सशस्त्र आदमियों को हटा देने के कारण केवल चार आदमियों की मृत्यु हुई और दस-बीस आदमी घायल हुए।"

सन् १९२३ ई० में मुसोलिनी ने राष्ट्रीय दल को फ़ैसिज़्म में शामिल कर लिया। पहले की नीली क़मीज़ें और दूसरे की काली क़मीज़ें मिलकर एक हो गईं।

अप्रैल, सन् १९२३ ई० में 'पौपूलर पार्टी' ने ट्यूरिन में एक कांग्रेस की, जिसमें वोटों की अधिक संख्या उस नीति के पक्ष में रही जो फ़ासिस्टों के कुछ विरुद्ध थी। इसलिए उस पार्टी के मंत्रियों को मुसोलिनी के मंत्रि-मंडल से त्याग-पत्र देना पड़ा। ड्यूस ने उनके स्थान पर फ़ासिस्ट मंत्रियों को नियुक्त किया। चुनाव का एक नया क़ानून पास किया गया जिसमें पुराने ढंग को बदल दिया गया।

इससे पूर्व मुसोलिनी को पहली अन्तर्राष्ट्रीय समस्या हल करनी थी। अल्बानिया तथा ग्रीक की सीमा पर इटलीवालों को क़त्ल कर दिया गया। मुसोलिनी को वहाँ की सरकार के उत्तर से जब इच्छित सन्तोष नहीं मिला, तब उसने बदला लेने के लिए कोरफ़ू पर अधिकार करने की आज्ञा दे दी। परन्तु जब उसको सन्तोषजनक उत्तर मिल गया, तब उसने द्वीप को ख़ाली करवा दिया।

२७ जनवरी को फ़्यूम इटली में मिला लिया गया। १६ मार्च को इटली के राजा का इस प्रसिद्ध बन्दरगाह पर स्वागत किया गया।

इससे छः दिन पहले मुसोलिनी ने ब्रिटेन से सोमालीलैंड में जिऊबा का प्रदेश ले लिया था।

चुनाव में मुसोलिनी की जीत हुई। वह उस समय मिलान में था। जब वह रोम वापस आया तब उसने अपने आदमियों को भाषण देते हुए कहा, "दलों का अन्त हो जाना चाहिए, जिससे देश सुरक्षित रहे।"

२४ मई को पार्लियामेंट खुल गई। कुछ दिनों बाद वाद-विवाद प्रारम्भ हुआ। ७ जून को मुसोलिनी ने एक व्याख्यान दिया, जिसमें उसने दक्षिण-पार्टी से मदद माँगी और समाजवादियों को बुरा-भला कहा।

उसी महीने में समाजवादी पार्टी का नेता मैटिओटी क़त्ल कर दिया गया। वह धनी माता-पिता का पुत्र था। लॉ में डाक्टर था और बहुत बुद्धिमान् था। वह पार्लियामेंट में मुसोलिनी के दृष्टिकोण की बड़ी आलोचना किया करता था। १० जून को पाँच आदमियों ने उसको पुकारा। जैसे ही वह घर से बाहर निकलकर आया, पाँचों आदमियों ने मिलकर उसको मार डाला। उन्होंने उसके मृत शरीर को अपनी कार में रख लिया। इसके बाद फिर वह नहीं दिखाई दिया।

पार्लियामेंट की अगली बैठक में मैटिओटी चुनाव में अनुचित दबाव के सम्बन्ध में कुछ कहनेवाला था। जब वह उस समय हाज़िर नहीं हुआ, तब पार्लियामेंट में खलबली मच गई। क़त्ल की अफ़वाह चारों ओर उड़ गई। अशान्ति फैल गई और विद्रोह के लक्षण दिखाई देने लगे। फ़ासिस्ट सेना का प्रयोग किया गया।

दूसरे दिन सीज़ारे रोज़ी ने, जो इटली के प्रेस का प्रधान था, सूचना दी कि मैटिओटी घुमाने के लिए ले जाया गया था। मुसोलिनी ने सिगनोरा मैटिओटी को फ़ौरन् बुलाया। जब वह आई, तब वह खामोश खड़ी थी। वह रोने लगी। मुसोलिनी ने

वचन दिया, "सरकार पूर्णरूप से कर्तव्य-पालन करेगी।" क़ातिल पकड़ लिया गया।

चारों ओर हलचल मच गई। मुसोलिनी के पास बहुत से तार और शिकायतें भेजी गईं। अख़बारों में आलोचना हुई। वह शान्त था। पार्लियामेंट में उसने फिर कहा—"क़ानून का ठीक प्रयोग किया जायगा, अपराधी को दंड दिया जायगा और जुर्म का बदला लिया जायगा। परन्तु आन्दोलन शान्त नहीं हुआ। विरोधी दलवालों ने पार्लियामेंट से हट जाने में अपनी शान समझी।

मुसोलिनी ने त्याग-पत्र देने का ख़याल भी नहीं किया। उसने कहा, "यदि मेरे सामने एक लाश इसलिए फेंक दी गई है कि मैं अपने पद को त्याग दूँ तो लोगों को मालूम होगा कि यह उनकी ग़लती है। मेरा सदैव यह कर्तव्य है कि मैं अपने पद पर रहूँ। मैं छोटी-छोटी घटनाओं की चिन्ता नहीं करता। मैं इतिहास बनाता हूँ। मेरा और इटली का भाग्य एक ही है।" फिर भी बहुत से फ़ासिस्टों ने त्याग-पत्र दे दिये। परन्तु मुसोलिनी का सामना करने को कोई तैयार नहीं हुआ। समय निकल गया।

वर्तमान समय में बहुत-से समालोचक इस बात को मानते हैं कि ड्यूस ने मैटिओटी के वध की आज्ञा नहीं दी थी। उसने पार्लियामेंट में उसको बुरा-भला कहा और उसे धमकी भी दी। क़ातिलों ने यह समझकर कि उसके बध करने से ड्यूस उनसे प्रसन्न हो जायगा, ऐसा काम किया था। मुसोलिनी स्वयं मानता है कि क़ातिल ऊँचे दर्जे के फ़ासिस्ट थे। वास्तव में कुछ उससे बहुत अच्छा सम्बन्ध रखते थे। उसने चेम्बर में एक बार व्याख्यान देते हुए कहा था, "मैं इस सभा के सामने इटली के सब लोगों को ज़ाहिर कर देना चाहता हूँ कि केवल मैं ही समस्त राजनीतिक, ऐतिहासिक और नैतिक घटनाओं का उत्तरदायी हूँ।"

हिटलर ने भी ३० जून के बधों के बाद ऐसा ही भाषण दिया था। उसने भी सब उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया था। इटली और जर्मनी दोनों में ही लोगों के दिलों से मैल निकल गया। मैटिओटी-घटना ने ड्यूस की शक्ति को बहुत चोट पहुँचाई; परन्तु फिर भी यह उसके लिए लाभप्रद सिद्ध हुई; क्योंकि इस घटना के बाद वह अपने विरोधियों को पूरी तरह से दबा सका।

विरोधियों से छुटकारा पाकर मुसोलिनी ने शासन की ओर ध्यान दिया। यद्यपि वह पहले धार्मिक अन्धविश्वासों के बहुत विरुद्ध था; परन्तु अब शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से उसने रोमन कैथोलिक चर्च के साथ तटस्थता का व्यवहार किया। यह सच है कि उसने 'पौपूलरी' दल को, जो धार्मिक मामलों में क्रान्तिकारी सुधार चाहता था, दूर कर दिया; परन्तु उसने अपने आदर्श को क्रियात्मक बनाने के लिए दूसरा ढंग निकाला। सन् १९२९ ई० के अन्त तक वह इस बात में विश्वास करने लगा कि तानाशाही के लिए नैतिक समर्थन की ज़रूरत है और संगठित धर्म एक नये धर्म चलाने की अपेक्षा इस काम में अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा। वह पोप के पास धार्मिक समर्थन के लिए पहुँचा।

पोप मुसोलिनी को अच्छी तरह जानता था। वह उसके कटु शब्द भी सुन चुका था। उसको मुसोलिनी के शासन का समर्थन करना पड़ा। फ़ासिस्ट राष्ट्र ने चर्च के कर्म-काण्डों को, विशेषत: विवाह-सम्बन्धी रीतियों को स्वीकार किया। धार्मिक स्वतंत्रता दी गई, तथा स्कूलों में ईसाई शिक्षा दी जाने लगी।

परन्तु अब भी चर्च और राष्ट्र का झगड़ा समाप्त नहीं हुआ है। मुसोलिनी का दावा है कि राष्ट्र का बच्चे पर अधिकार है। वह उसको सिखायेगा कि उसका कर्तव्य राष्ट्र के प्रति है। चर्च

कहता है कि प्रत्येक नागरिक ईश्वर की सन्तान है और उसको अपने कार्यों तथा विचारों का उत्तर ईश्वर के प्रतिनिधि पोप को देना चाहिए। इस स्थान पर दोनों में समझौता नहीं हो सकता; परन्तु दोनों इस झगड़े को बढ़ाना नहीं चाहते हैं।

अब मुसोलिनी ने फ़ासिस्ट आदर्शों के अनुसार शासन-व्यवस्था क़ायम की। इस समय उसके सामने कोई कार्य-क्रम नहीं था। वह इस बात को स्वीकार करता है। परन्तु शीघ्र ही उसने एक कार्य-क्रम निकाल लिया जिसका उद्देश्य वर्ग-संघर्ष को मिटाकर वर्ग-संगठन स्थापित करना था। यही फ़ैसिज़्म के उदय का कारण था। हिटलर के सामने इसके विरुद्ध परिस्थितियाँ थीं। हिटलर ने एक निश्चयात्मक कार्यक्रम के साथ शक्ति को प्राप्त किया और शीघ्र ही उसको वह कार्य-क्रम छोड़ना पड़ा। मुसोलिनी ने जिसके पास पहले से कुछ भी कार्य-क्रम नहीं था, शीघ्र ही एक नया कार्य-क्रम बना लिया।

फ़ैसिज़्म की आर्थिक रूपरेखा इस प्रकार है—"व्यक्तिगत सम्पत्ति और व्यक्तिगत लाभों की रक्षा की जाती है; परन्तु वह राष्ट्र के अधिकार में होते हैं। देश की सम्पूर्ण उत्पादक-शक्ति जिसमें पूँजीपति और मज़दूर शामिल हैं, बाईस संघों में सङ्गठित की जाती है, जिसमें से पार्लियामेंट के छोटे चेम्बर के लिए सदस्य चुने जाते हैं। चुनाव के लिए प्रतिनिधि पेशे के आधार पर चुने जाते हैं, स्थान के आधार पर नहीं। एक सदस्य राजों का प्रतिनिधि होगा, ट्यूरिन के सूबे का नहीं।"

यह कार्य-क्रम बड़ी सावधानी के साथ रक्खा गया था और बहुत धीरे-धीरे बढ़ाया गया। सन् १९३६ ई० तक उसका पूरी तरह से विस्तार नहीं किया गया था। प्रत्येक संघ में फ़ासिस्ट-दल के तीन प्रतिनिधि होते हैं। प्रत्येक सङ्घ का प्रधान मंत्रि-मंडल का एक सदस्य या मुसोलिनी-द्वारा नियुक्त किया गया उप-मंत्री

होता है। इसके अतिरिक्त सदस्य पहले 'बड़ी फ़ासिस्ट कौंसिल'-द्वारा पास की गई सूची में दर्ज होते हैं। वोट देनेवालों को उस सूची में केवल 'हाँ' या 'ना' करना पड़ता है।

राष्ट्र का स्थान फ़ैसिज़्म में सबसे ऊँचा है। अपने हित के लिए राष्ट्र आर्थिक दशा को नियमों में बाँधता है। एक लेखक का कथन है, "आध्यात्मिक दृष्टिकोण से फ़ैसिज़्म इटलीवालों को रोमन लोगों में बदलना चाहता है; परन्तु शारीरिक दृष्टिकोण से उसने इटली को जेलख़ाना बना दिया है।" सन् १९३५ ई० में मुसोलिनी ने एक अँगरेज़ से कहा था कि वह इटली से कट्टर पूँजीवाद को नष्ट कर देगा। सङ्घों की जातीय कौंसिल में एक प्रसिद्ध वक्तव्य देते हुए उसने कहा, "मैं आज आप लोगों से कहता हूँ कि उत्पादन का पूँजीवादी ढङ्ग अब समाप्त हो गया।"

वास्तव में फ़ासिस्ट राष्ट्र में बाह्यरूप से पूँजीवाद की विरोधी शक्तियाँ काम करती हुई दिखाई देती हैं। कोई पूँजीपति सरकार की सलाह के बिना मज़दूरों को नहीं हटा सकता। बिना राष्ट्र की आज्ञा के कोई भी पूँजीपति अपने कारख़ाने में छोटे से छोटा स्वतंत्र काम नहीं बढ़ा सकता। मज़दूरी सरकार-द्वारा निश्चित की जाती है। राष्ट्र की आज्ञा के बिना कोई मिल-मालिक अपना दिवाला नहीं निकाल सकता। सरकार उसकी आमदनी के रास्तों पर अधिकार रखती है और कर के रूप में उसकी आय का एक बहुत बड़ा भाग लेती है।

दूसरी ओर, फ़ैसिज़्म में श्रमी के लिए बहुत-सी हानियाँ भी हैं। फ़ासिस्ट राष्ट्र में स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। व्यक्ति के लिए अब यह प्रश्न उठता है कि क्या शासन के लाभ उसकी हानियों को पूरा कर देते हैं। मज़दूरों को ठेका करने का अधिकार नहीं है। उनके व्यापार-सङ्घों का अन्त हो गया। पूँजीपतियों की अपेक्षा उनकी पार्टी कमज़ोर है। उनकी मज़दूरी कम की जा

सकती है। परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि वे हड़ताल नहीं कर सकते। इसके विरुद्ध पूँजीपति कठिनाई सहन करने पर भी प्राइवेट तौर पर लाभ उठा सकते हैं। फ़ैसिज़्म पूँजीवादी ढाँचे को नष्ट नहीं कर सका। पूँजीपतियों ने मज़दूरों से सुरक्षित रहने के लिए 'राष्ट्र-द्वारा लगाये गये बन्धनों को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मुसोलिनी फ़ैसिज़्म पर अपने एक लेख में लिखता है, "केवल युद्ध ही मानवीय शक्ति को उच्चतम स्थान पर लाता है और उन जातियों पर जो उसका सामना करने का साहस रखती हैं, उच्चता की मुहर लगाता है।" वह इतिहास की भौतिक व्याख्या का विरोध करता है। वह लिखता है, "फ़ैसिज़्म इस समय और सदैव पवित्रता और वीरता में विश्वास रखता है।" लोकतंत्र-शासन के सम्बन्ध में वह लिखता है, "फ़ैसिज़्म नहीं मानता कि बहुमत, केवल बहुमत होने के कारण, मानव-समाज को सच्चे मार्ग पर ले जा सकता है। वह इस बात में विश्वास नहीं रखता कि केवल बहुमत ही पारस्परिक विचार-विनिमय से शासन कर सकता है। वह मानव-जाति की असमानता में विश्वास रखता है।"

फ़ैसिज़्म के सम्बन्ध में मुसोलिनी के सबसे अच्छे विचार इस अवतरण में मिलते हैं:—

"कोई भी सिद्धान्त कभी ऐसा नहीं हुआ जिसने पूर्णतया नये रूप से जन्म लिया हो, जिसकी पूरी परिभाषा हो और जो अपने पूर्वकाल का ऋणी न हो। फ़ैसिज़्म का आधार है उसके राष्ट्र की व्याख्या, उसका ढङ्ग, उसका कर्तव्य और उसका लक्ष्य। फ़ैसिज़्म राष्ट्र को सर्वोच्च मानता है। समस्त व्यक्ति अथवा व्यक्ति-समूह के हित राष्ट्र के हित से बँधे हुए हैं।...... फ़ैसिज़्म के अनुसार राष्ट्र एक आध्यात्मिक तथा नैतिक तथ्य है, क्योंकि उसका राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक संगठन

एक आकार-विशिष्ट वस्तु है और ऐसा संगठन अपनी मूल तथा अपने विस्तार में अवश्य ही आत्मा का प्रत्यक्षीकरण है।

"फ़ासिस्ट राष्ट्र एक अनोखी तथा मौलिक रचना है। वह प्रतिक्रियात्मक नहीं है, वरन् क्रांतिकारी है, क्योंकि वह विश्व-जनीन राजनैतिक समस्याओं के हल की आशा रखता है जो अन्य देशों में राजनैतिक क्षेत्र में दलों की स्पर्धा, पार्लियामेंट के शासन की अत्यधिक शक्ति और राजनैतिक असेम्बली की ग़ैरज़िम्मेदारी से निश्चित होता है। आर्थिक क्षेत्र की समस्याओं को वह सिन्डीकैलिज़्म* के ढङ्ग से हल करता है, जो श्रमी तथा व्यवसाय दोनों ही बातों में प्रसिद्ध होता जा रहा है। नैतिक क्षेत्र में वह क़ानून और क़ायदा स्थापित करता है और देश के नैतिक नियमों का पालन करवाता है।"

मुसोलिनी ने देश की उन्नति के लिए बहुत-से सुधार किये हैं। अनेक दलदल साफ़ कर दिये गये हैं। पहाड़ों से होकर रेलें निकाली गई हैं। खेतों की सिंचाई के लिए बिजली-द्वारा पानी आता है। जनता की दशा पहले से उन्नत है। अशिक्षित लोगों की संख्या घटती जा रही है। देश की हालत बहुत-कुछ अच्छी है।

---

* यह एक क्रांतिकारी आन्दोलन है। जिसके अनुसार व्यापार-संघों के आधार पर सामाजिक क्रांति सम्भव है। इसके अनुयायी मज़दूर-दल को एक राजनैतिक संस्था नहीं मानते हैं। वे राजनैतिक आन्दोलन को विशेष महत्त्व नहीं देते हैं। उसके स्थान पर शासकों के विरुद्ध मज़दूरों के आन्दोलन का समर्थन करते हैं। उनका ख़ास हथियार 'हड़ताल' है। छोटी-छोटी हड़तालों से आम हड़ताल करके क्रांति करना उनका प्रमुख सिद्धान्त है। क्रांति के पश्चात् व्यापार-संघ कारख़ानों पर अधिकार करके उनको समाजवादी सिद्धान्तों पर चला सकते हैं। राष्ट्र को हटाकर उसके स्थान पर व्यापार-संघों के एकीकरण से शासन का संचालन हो सकता है।

फ़रवरी, सन् १९२५ ई० में मुसोलिनी बीमार पड़ा। लोगों को भय था कि उसकी मृत्यु हो जायगी। परन्तु उसके लौह शरीर ने बीमारी के ऊपर सफलता प्राप्त की और मार्च के अंत तक वह फ़ैसिज़्म के सालाना जल्सों में भाग ले सका।

मई, सन् १९२७ ई० में त्रिपोली की विजय की तैयारियाँ शुरू कर दी गईं। मुसोलिनी ने निश्चय किया कि इटली को संसार के अन्य देशों की अपेक्षा उपनिवेशों की अधिक आवश्यकता है। बहुत-से समझौतों के द्वारा उसने इटली के साम्राज्य को बढ़ाने की तैयारी की।

अल्बानिया के मामले में यूनान को दंड देने के पश्चात् जनवरी, सन् १९२४ ई० में उसने युगोस्लाविया से संधि कर ली। दिसम्बर, सन् १९२४ ई० में ब्रिटेन के मंत्री ऑस्टिन चेम्बरलेन से मुसोलिनी ने बहुत दिनों तक बातचीत की। दूसरे साल इटली के एक इञ्जीनियर के बध पर उसे अफ़ग़ानिस्तान से झगड़ा करना पड़ा, परन्तु बाद में फ़ैसला हो गया।

सन् १९२८ ई० के प्रारम्भ में इटली को त्रिपोली में युद्ध करना पड़ा। चार जनवरी को जनरल ग्रेज़िआनी ने सेना को बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया और कई बार विजय प्राप्त की। छः सप्ताह बाद, १६ फ़रवरी को जनरल डे बोनो ने जीते हुए प्रदेश पर अधिकार स्थापित कर लिया। उसी महीने में ग्रेज़िआनी ने जिफा का ज़िला ले लिया और सिरेनाइका में भी सफलता प्राप्त हुई। लिबिया पर जिआराबव तक और त्रिपोली पर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक अधिकार स्थापित कर लिया गया।

इसके पश्चात् अबीसीनिया के युद्ध की बारी आई जिसने संसार की शांति को नष्ट किया, राष्ट्र-सङ्घ का अन्त किया और फ़ैसिज़्म को अन्य देशों में फैलाया।

अबीसीनिया-विजय और उसके पश्चात्

अक्टूबर, सन् १९३५ ई० में अबीसीनिया की लड़ाई शुरू हुई। मुसोलिनी बहुत वर्षों से पूर्व की ओर बढ़ने का विचार कर रहा था। उसकी भूखी आँखें ट्यूनिस पर पड़ चुकी थीं। उसको इटली की बढ़ती हुई जन-संख्या को खपाने के लिए उपनिवेशों की आवश्यकता थी। परन्तु योरोपवाले धोखे में पड़े थे। अब प्रश्न यह उठता है कि उसने सन् १९३५ ई० में युद्ध क्यों प्रारम्भ किया और उसने अबीसीनिया को ही क्यों चुना ?

इसके लिए इटली की आर्थिक दशा की ओर ध्यान देना आवश्यक है। इटली की जन-संख्या उस समय चार करोड़ बीस लाख थी और बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ रही थी। मुसोलिनी ने स्वयं कहा, "हम ज़मीन के भूखे हैं, क्योंकि हमारी जन-संख्या तेज़ी से बढ़ रही है, और हम उसे तेज़ी से बढ़ाना चाहते हैं।" इटली का प्रधान व्यवसाय खेती है। देश में रबड़, टीन, गिलट आदि बहुत कम पैदा होती हैं। आवश्यकता की अधिकतर वस्तुएँ विदेशों से आती हैं। २० प्रतिशत अनाज विदेशों से मँगाया जाता है।

अपने शासन के पहले सालों में मुसोलिनी का काम इटली को शक्तिमान् बनाना था। वह सफल हुआ, परन्तु अनेक कठिनाइयों के बाद। उसको कर बढ़ाना पड़ा, फिर भी बजट में बहुत कमी पड़ी। अबीसीनिया पर चढ़ाई की तैयारी में लगभग ३,३०,००,००० पौंड ख़र्च हो गया। सन् १९३४ ई० के अंत में इटली की आन्तरिक दशा इतनी ख़राब हो गई कि अपने शासन को क़ायम रखने के लिए और जनता को अपनी शक्ति का

विश्वास दिलाने के लिए मुसोलिनी को यह अनिवार्य हो गया कि वह किसी अन्य देश से युद्ध प्रारम्भ कर दे, लोगों के हृदयों में युद्ध के लिए एक जोश पैदा कर दे और उनको विजय की आशा दिलाये। वह भली-भाँति समझता था कि जब विदेशी समस्यायें अधिक महत्त्वपूर्ण हो जायँगी, तब लोग भीतरी कठिनाइयों को भूल जायँगे और अपने देश की उन्नति तथा प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने के लिए ख़ुशी के साथ उसका साथ देंगे। एक लेखक ने लिखा है, "प्रश्न यह नहीं था कि क्या वह लड़ सकेगा, बल्कि यह था कि क्या वह बिना लड़े रह सकेगा।"

केवल आर्थिक समस्या के कारण ही मुसोलिनी युद्ध के लिए तैयार नहीं हुआ। उसके सामने राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का भी प्रश्न था। उसकी विदेशीय नीति विशेष सफल नहीं हुई थी। फ़्रांस ने उसको ट्यूनिस में घुसने से रोक दिया था। अल्बानिया में उसका ख़र्च अधिक पड़ गया, और कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। अरब की लड़ाइयों में भी उसकी नीति ग़लत रही। युगोस्लाविया, रूमानिया, टर्की और यूनान उसके विरुद्ध थे। अब उसके लिए यह आवश्यक था कि वह किसी विदेशीय युद्ध में इटलीवालों को लगाकर बहुत बड़ी विजय प्राप्त करे, जिससे उसकी तथा देश की प्रतिष्ठा क़ायम रह सके।

इस प्रश्न का उत्तर कि मुसोलिनी ने अबीसीनिया पर ही क्यों आक्रमण किया, स्पष्ट है। ब्रिटेन, फ़्रांस आदि देशों ने पहले से अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये थे। केवल अबीसीनिया ही शेष रह गई थी। इसका कारण यह था कि अबीसीनिया में बसने में योरपवालों का बहुत ख़र्च पड़ता था; खनिज पदार्थ आदि भी वहाँ बहुत नहीं थे; और सबसे बड़ी बात यह थी कि वहाँ की लड़ाकू जातियों को जीतना बहुत कठिन था। इटली के पास कोई उपनिवेश नहीं था। अतः यह जानते हुए भी कि

अबीसीनिया में उसे बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, मुसोलिनी ने उसको विजय करने का निश्चय कर लिया।

अबीसीनिया के कुछ भागों पर ब्रिटेन और इटली का पहले से अधिकार था। सन् १९०६ ई० में यद्यपि इटली ने अबीसीनिया की स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया था, तथापि एक संधि के द्वारा देश को फ्रांसीसी, अँगरेज़ी और इटैलियन भागों में विभक्त किया गया। अबीसीनिया ने इसका विरोध किया, परन्तु किसी ने चिन्ता नहीं की।

सन् १९२३ ई० में फ्रांस और इटली के साथ अबीसीनिया भी राष्ट्र-संघ में सम्मिलित हुई। मुसोलिनी चाहता था कि अबीसीनिया राष्ट्र-संघ में शामिल हो जाय ताकि ब्रिटेन उस पर अपना अधिकार स्थापित न कर सके।

सन् १९२५ ई० में सर ऑस्टिन चेम्बरलेन और मुसोलिनी ने एक समझौता किया जिसके द्वारा दोनों ने अबीसीनिया में अपने-अपने प्रभावों को निश्चित किया। सितम्बर, सन् १९३५ ई० में मुसोलिनी ने क्रोध में आकर इस समझौते के सम्बन्ध में कहा था, "तुम समझते हो, इसने अबीसीनिया को विभाजित ही नहीं, वरन् दो टुकड़ों में काट दिया।" ज़ैना नदी के किनारे पर अँगरेज़ एक बाँध बाँधना चाहते थे। इटली की स्वीकृति के बदले में उन्होंने अबीसीनिया के पश्चिम में इटली के आर्थिक प्रभाव को पूरी तरह से स्वीकार करने और इटली की अबीसीनिया में होकर एक रेल निकालने की आयोजना में सहायता देने का वचन दिया। परन्तु सन् १९२५ ई० में अबीसीनिया राष्ट्र-संघ में शामिल थी और जेनेवा में सम्राट् हेल सिलासी ने इसका इतना विरोध किया कि समझौता टूट गया।

सन् १९२८ ई० में इटली ने अबीसीनिया के साथ मित्रता कर ली, और दोनों में सन्धि हो गई। दोनों सरकारों ने इस बात

का वचन दिया कि उनमें से कोई भी ऐसा काम नहीं करेगी जो दूसरी की स्वतंत्रता के लिए हानिकारक हो। सात साल समाप्त होने पर इटली ने युद्ध की तैयारी की।

५ दिसम्बर, सन् १९३४ ई० में वालवल में एक घटना हो गई। वालवल अबीसीनिया की सीमा पर था। वहाँ पर इटली के एक सैनिक जत्थे ने डेरे डाल लिये। अबीसीनिया की सेना ने उस पर धावा किया। युद्ध में दोनों ओर के आदमी मारे गये। ड्यूस क्रोध से जल उठा। उसने अबीसीनिया की सरकार से कहा कि वह क्षमा माँगे, इटली के झंडे को सलाम करे, और २०,००० पौंड हर्जाना दे।

मुसोलिनी का अनुमान था कि ब्रिटेन अबीसीनिया की सहायता नहीं करेगा। २९ जनवरी, सन् १९३५ ई० को उसने ग्रान्डी को ब्रिटिश सरकार से समझौता करने के लिए भेजा जिसके द्वारा अबीसीनिया में इटली तथा ब्रिटेन के हितों की रक्षा हो सके। अँगरेज़ों ने कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया।

जब मुसोलिनी को यह मालूम हुआ कि ब्रिटेन उसका विरोध कर रहा था और लीग पर अपना प्रभाव डाल रहा था, तो उसने लीग को छोड़ देने की धमकी दी। सर सैमुअल होर ने लीग की एसेम्बली में एक भाषण दिया जिसके द्वारा उसने ज़ोरदार शब्दों में लीग से अपील की कि वह सब प्रकार के अत्याचारों और अन्यायों को शीघ्र रोके।

मुसोलिनी ने इसका दो प्रकार से उत्तर दिया। पहले तो उसने लड़ाई प्रारम्भ कर दी, और तीन अक्टूबर को अबीसीनिया पर आक्रमण किया। दूसरी ओर उसने बहुत-से लेख निकाले जो उसके खेद को प्रकट करते थे।

उसने मॉर्निङ्ग पोस्ट में लिखा, "हम लोग आगे बढ़ रहे हैं। अब हमसे रुकने के लिए कहने में कोई लाभ नहीं।...पुर्तगाल,

बेल्जियम और हालैंड की ओर देखो। वे सब अच्छे-अच्छे उपनिवेश स्थापित कर चुके हैं। इटली को भी कुछ अच्छे उपनिवेशों पर अवश्य अधिकार स्थापित करना चाहिए। जैसे ही इटली को उपनिवेश मिल जायँगे, वह शान्त हो जायगी।" 'न्यूयार्क सन' में उसने शिकायत भेजी, "हम लोगों को क्यों उस बात के लिए बदनाम किया जाता है जो आवश्यकता पड़ने पर तुम लोग स्वयं करते हो ? तुम अपने हित-साधन के लिए लड़ाई से कभी नहीं हिचके। मैक्सिको और क्यूबा के विषय में सोचो और अपने उत्तर तथा दक्षिण के गृह-युद्ध की ओर ध्यान दो। संयुक्त-राज्य ने ग़ुलामी को किस प्रकार समाप्त किया ?" उसने एक व्याख्यान में कहा, "भाग्य का पहिया एक निश्चित स्थान की ओर चक्कर लगा रहा है—उसकी गति अब तेज़ हो गई है और किसी प्रकार नहीं रोकी जा सकती। इटलीवालों को फैलने से रोककर उनके साथ अन्याय करने की कोशिश की जा रही है। जब तक इसके विरुद्ध बात सिद्ध न हो, मैं विश्वास कर सकता हूँ कि ब्रिटेन के आदमी अपना ख़ून बहाना चाहते हैं और एक असभ्य देश को सहायता देकर योरप को एक भयंकर तूफ़ान में डालना चाहते हैं।"

सन् १९३५ ई० की ग्रीष्म तक यह पता नहीं चला कि ब्रिटेन इटली को अबीसीनिया पर आक्रमण करने से किसी प्रकार रोकेगा। प्रारम्भ में सरकार ने युद्ध को रोकने के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया। एक लेखक ने लिखा, "ब्रिटेन की हार्दिक इच्छा थी कि शेर और मेमना साथ-साथ लेटें। परन्तु इस सम्बन्ध में उसके विचार अस्पष्ट थे कि मेमना शेर के बाहर हो या भीतर।" जब मुसोलिनी ने अबीसीनिया में एक लाख सेना भेजी, तब ब्रिटेन की नीति कुछ कड़ी हुई। रूमसागर अँगरेज़ी जहाज़ों से भर गया। लोगों का विचार हुआ कि

अँगरेज़ ड्यूस को समाप्त कर देंगे। परन्तु वास्तव में कुछ बात और ही थी। ऐसी नाज़ुक हालत में ब्रिटेन किसी प्रकार का निश्चय नहीं कर सका। ब्रिटेन न तो युद्ध ही चाहता था और न लगातार मुसोलिनी को अपने विरुद्ध रखना चाहता था। एक ओर तो अँगरेज़ इटली की नीति को पसंद नहीं करते थे, और दूसरी ओर वे मुसोलिनी को लीग से निकालकर हिटलर के हाथ में देकर सदैव के लिए योरप की शांति को भंग नहीं करना चाहते थे।

ब्रिटेन की पर्राष्ट्र-नीति सदैव जर्मनी को ध्यान में रखते हुए रही है। इटली के साथ किसी प्रकार का व्यवहार करने के साथ-साथ यह बात ध्यान में रखनी आवश्यक थी कि उसका जर्मनी पर क्या प्रभाव पड़ेगा। ऐसी दशा में दोनों बातें सम्भव हो सकती थीं। यदि इटली के विरुद्ध क़दम रक्खा जाता और उसको परास्त कर दिया जाता, तो शायद हिटलर भी डरकर भविष्य में योरप की शांति को भंग न करता; साथ ही साथ यदि इटली की शक्ति कम हो जाती और योरप की हालत ख़राब हो जाती तो हिटलर को दूसरे देशों पर आक्रमण करके लाभ उठाने का अवसर मिल जाता।

यह भी प्रश्न था कि क्या अबीसीनिया के युद्ध से ही शांति स्थापित हो जायगी, अथवा एक बड़ी लड़ाई लड़नी पड़ेगी? इस प्रश्न पर ब्रिटिश मंत्रि-मंडल एकमत नहीं हो सका। इसी समय मुसोलिनी ने लिबिया में अपने सैनिक जत्थे भेजे। अँगरेज़ों को संदेह हुआ कि शायद इटली माल्टा और मिस्र पर भी आक्रमण करना चाहती थी। इसलिए अँगरेज़ों को इटली के विरुद्ध युद्ध में शामिल होने का निश्चय करना पड़ा। इसके कई और भी कारण थे।

पहले तो, अबीसीनिया के युद्ध में राष्ट्र-संघ की प्रतिष्ठा की

परीक्षा थी। जापान ने लीग के निश्चय की चिन्ता न करके मंचूरिया पर अपना अधिकार कर लिया था। लीग के ऊपर यह धब्बा आगया था। उसको दूर करने के लिए यह आवश्यक था कि लीग मुसोलिनी को रोके। यदि इटलीवाले अबीसीनिया में सफल हो जाते, तो समस्त योरप में अशान्ति के फैलने का डर था। इटली पर नियंत्रण लगाने के बाद जर्मनी को भी रोका जा सकता था।

दूसरे, अँगरेज़ी उपनिवेश इस बात को ज़रूरी समझते थे कि इटली के अन्याय को रोका जाय। लीग के द्वारा अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने की नीति अँगरेज़ों को बहुत प्रिय थी।

तीसरे, इँगलैंड में उदार-दलवाले लोग जो फ़ैसिज़्म से घृणा करते थे, मुसोलिनी की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के पक्ष में थे।

चौथे, मज़दूर-दल भी पूरी तरह से यह चाहता था कि इटली का विरोध किया जाय।

पाँचवें, जनरल स्मट्स ने इस बात की ओर संकेत किया कि अफ़्रीका तथा अन्य उपनिवेशों के निवासी अबीसीनिया के युद्ध को शायद गोरी और काली जातियों के युद्ध के रूप में समझें, जिससे अँगरेज़ों के हित की हानि होगी।

सातवें, जैसा कि लिखा जा चुका है अपने औपनिवेशिक हितों की रक्षा के लिए अँगरेज़ों को अनिवार्य हो गया कि वे इटली का विरोध करें।

जैसे ही मुसोलिनी मिस्र के समीप अपनी सेना एकत्र करने लगा, अँगरेज़ युद्ध में कूद पड़े। परन्तु इँगलैंड इटली के विरुद्ध अबीसीनिया को अधिक सहायता नहीं दे सका। इँगलैंड की जनता इटली की शक्ति को पूर्णरूप से नष्ट कर देने के पक्ष में थी। इसी समय होर-लेवल के मनसूबे का पता चला जिससे सर्व-सम्मति को बहुत आघात पहुँचा।

इँगलैंड के मंत्री होर और फ़्रांस के मंत्री लेवल का मनसूबा यह था कि इटली और अबीसीनिया में समझौता करा देने से युद्ध का अंत हो जायगा। इटली को अबीसीनिया के कुछ भाग पर अधिकार स्थापित करा दिया जाय, और हेल सिलासी को इस समझौते को स्वीकार करने पर बाध्य किया जाय। १३ दिसम्बर को अँगरेज़ी और फ़्रांसीसी पत्रों में यह समाचार छपा। १४ दिसम्बर को पता चला कि होर ने अबीसीनिया में अँगरेज़ मंत्री को तार दे दिया था कि वह सम्राट् पर समझौते की शर्तों को स्वीकार कराने के लिए पूरा प्रभाव डाले।

इँगलैंड में अशान्ति फैल गई। एडिन ने अँगरेज़ी और फ़्रांसीसी सरकारों की आलोचना की, क्योंकि वास्तव में दोनों ओर की सरकारों ने इस समझौते का निर्माण किया था। लोग वाल्डविन के पास जाकर इस नीति का विरोध करने लगे। टोरी-दलवालों ने भी इसकी तीव्र आलोचना की। इसी समय होर स्विटज़रलैंड से वापस आये। उन्हें अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा, और समझौता समाप्त हो गया।

सन् १९३६ ई० के प्रारम्भ में, इँगलैंड की नीति से तंग आकर, मुसोलिनी ने युद्ध को पूरी तरह से बढ़ा दिया। उसने लगभग पाँच लाख सिपाहियों को अबीसीनिया में भेजा, और ज़हरीली गैसें भी भेजीं। परिणाम स्पष्ट ही था। इटली की सेना इतनी तेज़ी से सफलता प्राप्त करने लगी कि बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ और विशेषज्ञ आश्चर्य में पड़े रह गये। १५ अप्रैल को इटली की सेना ने नौ दिन में १२० मील पार करके डेसी पर अधिकार कर लिया। पाँच मई को इटलीवाले एडिस अबाबा में पहुँच गये। अबीसीनिया का सम्राट् भागकर इँगलैंड आ गया। ९ मई, सन् १९३६ ई० को अबीसीनिया इटली-साम्राज्य में शामिल कर ली गई।

इँगलैंड की नीति अबीसीनिया के लिए बहुत ही हानिकारक सिद्ध हुई। सम्राट् की सारी आशाओं पर तुषारापात हो गया। इतने बड़े साम्राज्य पर शासन करनेवाले सम्राट् को कुछ ही दिनों में दूसरों की शरण लेनी पड़ी। राष्ट्र-संघ की अंतिम साँसें भी समाप्त हो गईं और योरप में महायुद्ध की लपटें प्रज्वलित हो उठीं।

अबीसीनिया की विजय से मुसोलिनी का उत्साह और भी बढ़ गया। १८ जुलाई, सन् १९३६ ई० में स्पेन में गृह-युद्ध शुरू हो गया। मुसोलिनी तथा हिटलर ने स्पेन की सरकार के विरुद्ध जनरल फ़्रैंको को पूरी सहायता दी। ४ अप्रैल, सन् १९३९ ई० को जनरल फ़्रैंको विजयी हुआ, और उसने मुसोलिनी के आदेश से स्पेन में फ़ासिस्ट सरकार की नींव डाली।

सितम्बर, सन् १९३७ ई० में मुसोलिनी म्यूनिच में हिटलर से मिला। धीरे-धीरे दोनों में घनिष्ठता बढ़ती गई। २९ सितम्बर, सन् १९३८ ई० में मुसोलिनी म्यूनिच-पैक्ट में सम्मिलित हुआ। इटली, इँगलैंड और फ़्रांस ने इस पैक्ट के द्वारा जर्मनी को ज़ेको-स्लोवाकिया में सुडेटन जर्मन ज़िले दिलवा दिये। इस अवसर पर मुसोलिनी ने इँगलैंड तथा फ़्रांस के प्रतिनिधियों पर अपना पूरा प्रभाव डाला।

२२ मई, सन् १९३९ ई० में बर्लिन में इटली और जर्मनी की संधि हो गई जिसके द्वारा दोनों देशों ने एक-दूसरे को सहायता देने का वचन दिया। जब जर्मनी ने ज़ेकोस्लोवाकिया पर पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया, तब इटली ने अल्बानिया को विजय कर लिया।

पहली सितम्बर, सन् १९३९ ई० में हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण किया। इटली इस युद्ध में तटस्थ रही, परन्तु हिटलर के दबाव डालने पर मुसोलिनी फ़्रांस के युद्ध में १० जून, सन्

१९४० ई० में शामिल हो गया, और फ़्रांस की स्वतंत्रता का भी शीघ्र ही अंत हो गया।

४ अगस्त को इटली ने अफ़्रीका में सोमालीलैंड पर आक्रमण कर दिया, और १९ अगस्त को अँगरेज़ी फ़ौजें वहाँ से हट गईं। सोमालीलैंड इटली-साम्राज्य में मिला लिया गया। बाद में जर्मन-इटैलियन-जापान-पैक्ट द्वारा जापान भी युद्ध में शामिल हो गया। हाल में मुसोलिनी और हिटलर ब्रेनर घाटी में मिल चुके हैं। युद्ध जारी है, भविष्य के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

पारिवारिक जीवन

दिन के दस बजे हैं। 'पैलेज़ो वेनेज़िआ' में घंटी बजती है। चपरासी एक सज्जन को लेकर बड़े कमरे में प्रवेश करता है। सज्जन की दृष्टि कमरे की विशालता को देखकर चकित रह जाती है। दूर पर एक कोने में सैनिक वर्दी पहने हुए पाँच फ़ीट छः इंच का तानाशाह दिखाई देता है जो अपनी मेज़ पर सिर झुकाये हुए पढ़ रहा है।

सज्जन के सलाम करते ही तानाशाह तपाक के साथ कुर्सी से उठकर उससे हाथ मिलाता है। थोड़ी देर में बातों का सिल-सिला शुरू हो जाता है। तानाशाह की चमकती हुई आँखें, मज़बूत हाथ और भारी चेहरा सज्जन को आकृष्ट करते हैं। वह उसकी बातों की सफ़ाई और चरित्र की दृढ़ता को देखकर दंग रह जाता है।

यही ढङ्ग है जिसके द्वारा मुसोलिनी अपने मिलनेवालों पर बड़ा प्रभाव डालता है। वह 'पैलेज़ो वेनेज़िआ' में सरकारी काम करता है, और वहाँ से थोड़ी दूर पर 'विला टोर्लोनिया' में अपने परिवार के साथ रहता है। उसकी स्त्री डोना राचेल गिडी कुछ दिनों तक मिलान में रही, परन्तु बाद में वह रोम में आकर उसके साथ रहने लगी। उससे मुसोलिनी के पाँच बच्चे हैं।

वास्तव में मुसोलिनी ही एक ऐसा डिक्टेटर है जो अपने परिवार का पूरा ध्यान रखता है। नैपोलियन की भाँति वह अपने परिवार के लोगों का विश्वास करता है, परन्तु बहुत-से लोगों की मित्रता में विश्वास नहीं करता। अनेक वर्षों तक

उसका एकमात्र मित्र उसका भाई आर्नेल्डो रहा, जो बाद में पोपोलो डी इटैलिया का सम्पादक हो गया। आर्नेल्डो की अचानक मृत्यु पर ड्यूस के हृदय पर बहुत चोट पहुँची। वह अपनी पुत्री एडा को बहुत प्यार करता है जो बिलकुल उसी की जीती-जागती तसवीर है। उसके पति काउन्ट सियानो को मुसोलिनी ने परराष्ट्र-मंत्री बना दिया है। उसके दो बड़े पुत्र विटोरियो और ब्रूनो युद्ध में लड़ चुके हैं। अपने दो छोटे बच्चों रोमेना और एना-मेरिया को मुसोलिनी स्वयं पहली बार वायुयान में उड़ाकर ले गया था।

मुसोलिनी बहुत ही नियमित जीवन व्यतीत करता है। वह प्रातःकाल ही उठ बैठता है, खुली हुई खिड़की में कुछ गहरी साँसें लेता है और शीघ्र ही स्नान के लिए चला जाता है। वह स्वयं हजामत बनाता है, यद्यपि अधिकतर इटली के निवासी नाई से हजामत बनवाना पसन्द करते हैं। तब वह घुड़सवारी के कपड़े पहनता है, साथ ही साथ दो-तीन प्रातःकालीन समाचारपत्रों पर भी दृष्टि डालता जाता है।

वह दूध का कलेवा करता है। साढ़े सात बजे वह घोड़े की सवारी करने के लिए निकलता है। इसमें उसको बहुत आनन्द आता है। वह पक्का घुड़सवार है। साढ़े आठ बजे वह विला टोर्लोनिया वापस आ जाता है, और नौ बजे से कुछ मिनट पहले कार में बैठकर पैलज़ो वेनेज़िआ में आ जाता है, जहाँ पर वह दो बजे तक ठहरता है। इस समय वह खाना खाने जाता है, और वापस आकर रात के आठ बजे तक काम करता है।

वह थोड़ा खाना खाता है और अक्सर कई दिनों तक भोजन नहीं करता। वह मटर, सोयाबीन, तरकारी और फल अधिक खाता है। मेज़ पर रक्खी हुई फलों की टोकरी की ओर संकेत करते हुए उसने अमरीका के एक मिलनेवाले से कहा,

"मेरे लगातार स्वास्थ्य का रहस्य यह है—फल, फल, फल। सुबह को मैं दूध और फल खाता हूँ; दोपहर को मैं दलिया और फल खाता हूँ और शाम को मैं फल खाता हूँ। मैं गोश्त कभी नहीं खाता। हाँ, कभी कभी मछली ज़रूर खाता हूँ।" हिटलर की तरह वह न तो शराब पीता है और न सिगरेट ही पीता है। अपनी युवावस्था में मुसोलिनी स्त्रियों का शौक़ीन था, परन्तु आगे चलकर उसने अपना स्वभाव बदल दिया।

नियमित जीवन और सादगी के कारण वह ५७ वर्ष की अवस्था में भी पूर्णतया हृष्ट-पुष्ट है। उसका शरीर भारी, मज़बूत और गठा हुआ है; और उसकी आँखों की चमक से उसकी क्रियाशीलता का पता चलता है। मुसोलिनी की भाँति लगातार डेस्क पर बैठकर काम करनेवाले ऐसे थोड़े ही आदमी होंगे जो शारीरिक शक्ति में भी उसके समान हों। अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए मुसोलिनी बहुत प्रकार के व्यायाम करता है। अपनी युवावस्था में वह द्वन्द्व-युद्ध ख़ूब लड़ता था। घूँसेबाज़ी भी उसने सीखी। गर्मियों में वह समुद्र के किनारे ओस्टिया पर तैरता है, या टाइबर नदी के मुहाने पर नाव चलाता है। जाड़ों में वह बर्फ़ पर स्केटिंग करता है।

इन समस्त व्यायामों के कारण वह लगातार काम कर सकता है। उसको शारीरिक अथवा मानसिक थकावट नहीं मालूम पड़ती। दिन में वह कभी आराम नहीं करता। राष्ट्र के अधिकतर कामों को वह अपने मस्तिष्क में रखता है। नित्यप्रति ९ बजे से २ बजे तक वह मंत्रियों तथा विभिन्न विभागों के प्रधानों से लगातार रिपोर्टें सुनता है। उनसे बातें करते समय वह अक्सर कहता है, "उन कामों को मुझसे कहने में समय नष्ट मत करो जो अच्छी तरह हो रहे हैं। मैं केवल उन कामों के विषय में सुनना चाहता हूँ जो ग़लत हो रहे हैं।"

एक अँगरेज़ ने ड्यूस से एक बार पूछा, "आप जिन लोगों से मिलते हैं उनमें से बहुत-से विशेषज्ञ अपने विषयों में आपकी अपेक्षा अधिक जानते होंगे। आप उनको विभिन्न विभागों में अपने इच्छानुसार कार्य करने से किस प्रकार रोकते हैं?"

उसने उत्तर दिया, "मेरी स्मरण-शक्ति आवश्यकता से अधिक अच्छी है। जब कभी मैंने किसी विषय पर वाद-विवाद किया है या जिस विषय को मैंने पढ़ा है, उसकी समस्त बातें मुझे सालों तक याद रहती हैं। उन मातहतों से, जिनको मैंने दीर्घ काल से नहीं देखा है, बातचीत करते समय मैं पिछली बातों को दुहराता हूँ और कुछ खास बातों पर ज़ोर देता हूँ। जब वे जानते हैं कि मुझे उनके समस्त कार्यों का पता है, तब वे मुझसे अपने विभाग की किसी बात को छिपा नहीं सकते।"

चार या पाँच बजे के लगभग मुसोलिनी अन्य लोगों से मिलता है। ये लोग विभिन्न देशों और जातियों के होते हैं, परन्तु उसमें एक विशेषता यह है कि वे जिस प्रकार की बातचीत उससे करते हैं, उसी प्रकार वह उनको उत्तर देता है। अबीसीनिया-युद्ध के अवसर पर एक अँगरेज़ ने उससे भेंट की जो अबीसीनिया से सहानुभूति रखता था।

कमरे में घुसते ही अँगरेज़ ने ज़ोर से कहा, "तुम अबीसीनिया को कभी नहीं जीत सकते।"

मुसोलिनी ने बीस गज़ की दूरी पर खड़े होकर उत्तर दिया, "धन्यवाद। नमस्कार।" दस सेकंड में अँगरेज़ कमरे से बाहर निकाल दिया गया।

केवल एक बार सन् १९२४ ई० में मुसोलिनी बीमार पड़ा। उसके एक घातक फोड़ा निकला। रोम के डाक्टरों ने चीरने की राय दी, परन्तु ऐसी दशा में उसे दो-तीन महीने तक सरकारी काम से अलग रहना पड़ता। डाक्टर कैस्टीलानी ने इसके विरुद्ध

—— ·

राय दी, और केवल दूध पीने का आदेश दिया। छः सप्ताह तक उसने कुछ खाना नहीं खाया, परन्तु उसके मंत्री नित्यप्रति उसको अपने कामों की रिपोर्ट देते थे। मार्च, सन् १९२५ ई० में वह स्वस्थ हो गया।

ड्यूस को संगीत से बहुत प्रेम है। वह अपने मकान पर खाना खाने के बाद अक्सर वॉइलिन बजाता है। अठारहवीं शताब्दी के इटली के संगीतज्ञों से उसे विशेष प्रेम है। विदेशी लोगों में उसे बीथोवेन, ब्राम्ज़ और बाख़ अधिक पसंद हैं। उसे सिनेमा का शौक़ है, परन्तु वह उसके लिए बहुत कम समय निकाल पाता है। कुत्ते, बिल्लियाँ और शेर उसे बहुत अच्छे लगते हैं। जनरल गोयरिंग की भाँति उसने एक शेर का बच्चा पाला जो उसके घर में घूमता-फिरता था और उसकी गोद में बैठकर खेलता था। जब वह बड़ा हो गया, तब मुसोलिनी ने उसको रोम के अजायबघर में भेज दिया जहाँ पर वह कभी-कभी उसे देखने जाता है। तेज़ मोटर चलाने में उसे बड़ा आनन्द आता है। जब वह 'पोपोलो डी इटैलिया' का सम्पादक था तब उसने पहली बार वायुयान चलाना सीखा था। वह अक्सर वायुयान-द्वारा बाहर जाता है और किसी बात का भय नहीं करता।

मुसोलिनी बहुत अध्ययनशील है। मैसारिक को छोड़कर कोई भी वर्तमान राजनीतिज्ञ साहित्य से इतना अधिक परिचित नहीं है। उसने अपने ऐतिहासिक ज्ञान से लुडविग को चकित कर दिया। उसकी लिखने में विशेष रुचि है और वह बहुत अच्छा लेखक है। केवल वही एक ऐसा वर्तमान राजनीतिज्ञ है जिसकी मानसिक प्रतिभा पूरी तरह से बढ़ी-चढ़ी है। फ्रांसीसी और जर्मन-भाषाओं का उसे अच्छा ज्ञान है, और वह आसानी से उनको बोल सकता है। सन् १९२५ ई० में उसने मिस गिब्सन से अँगरेज़ी भी पढ़ी। कई वर्ष उसने सम्पादन-कार्य किया। अब

भी वह 'पोपोलो डी इटैलिया' में अक्सर अपने लेख निकालता है, परन्तु उन पर अपना नाम नहीं देता।

मुसोलिनी धन की चिन्ता नहीं करता है। उसका सरकारी मासिक वेतन ८,००० लेरा (लगभग १३५ पौंड) है। अपने 'आत्म-चरित्र' के लिए उसे अमरीका से ५,००० पौंड मिले, जिनमें से उसने कुछ रोम के ग़रीबों को बाँट दिया। कहा जाता है कि बहुत दिनों तक हर्स्ट प्रेस से उसको काफ़ी आमदनी होती रही। सन् १९३५ ई० से उसने समाचार-पत्रों में लगातार लेख देना छोड़ दिया क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति इतनी नाज़ुक हो गई कि वह अपने विचारों को साफ़-साफ़ ज़ाहिर नहीं करना चाहता था।

केवल मुसोलिनी ही ऐसा वर्तमान डिक्टेटर है जो धर्म से समझौता कर सका है। सन् १९२९ ई० में लैटरेन की संधि ने इटली में चर्च और राष्ट्र के सम्बन्धों को निश्चित कर दिया। कुछ दिनों बाद मुसोलिनी और पोप में फ़ासिस्ट युवकों की शिक्षा के सम्बन्ध में मतभेद हो गया। सन् १९३२ ई० में ड्यूस पोप के पास गया। उसने चर्च में झुककर प्रार्थना की और कहा जाता है कि बाइबिल के आदर्श को स्वीकार किया। वह जवानी में अपने पिता की भाँति ईश्वर में विश्वास नहीं करता था। बाद में वह बड़ा धार्मिक हो गया। अब वह प्रतिदिन प्रार्थना करता है।

मुसोलिनी बहुत स्पष्ट वक्ता है। अक्टूबर, सन् १९३७ ई० में बोलोग्ना में एक भाषण देते हुए उसने कहा, "मैं दुनिया के सामने एक जैतून की शाखा फैलाता हूँ। यह शाखा ८० लाख सङ्गीनों के जंगल से निकली है, और बहुत ही तेज़ है।"

जर्मनी के एक पत्रकार से भेंट करते हुए उसने कहा, "हमने एक बहुत बड़ा क़दम आगे रक्खा है। हमने रोम-बर्लिन-धुरी

बनाई है। यह योरप को मज़बूत बनाने की शुरूआत है। समझते हो, मैं योरप के संयुक्त-राष्ट्रों में विश्वास नहीं करता। यह एक आदर्श है जो ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टिकोण से असम्भव है।......हम युग-परिवर्तन का अनुभव कर रहे हैं जिससे राजनीतिक और सामाजिक आदर्शों का अन्त हो रहा है। लोकतंत्रशासन समाप्त हो गया। भविष्य जनता की प्रतिक्रिया पर निर्भर है। लोकतंत्रशासन खिसकती हुई बालू के समान है। हमारा राष्ट्रीय आदर्श चोटी की चट्टानों की तरह मज़बूत है।"

शीघ्र ही स्पेन में ड्यूस ने अपने शब्दों की सचाई साबित की।

अन्य डिक्टेटरों की भाँति मुसोलिनी के वध के लिए भी कई बार प्रयत्न किया गया। पहली बार एक समाजवादी ज़ंज़ीबोनी ने उसको बन्दूक से मारने की कोशिश की। वह पैलेज़ो चिगी के सामने एक होटल के कमरे में छिप गया। उसके पास आस्ट्रिया की एक राइफ़िल थी जो लम्बे निशाने के लिए बहुत ठीक थी। वह अन्तिम क्षण पर पकड़ लिया गया। उसके साथी भी पकड़े गये।

दूसरा प्रयत्न अप्रैल, सन् १९२६ ई० में किया गया जब कि एक अँगरेज़ स्त्री ने मुसोलिनी पर ओषधि-अन्तर्राष्ट्रीय-सभा खोलते समय गोली चलाई। गोली से उसकी नाक घायल हो गई। ड्यूस ने स्त्री पर कृपा की और उसको इटली से बाहर निकाल दिया।

तीसरा आक्रमणकारी लुसीटी था जिसने उस पर कार चलाते समय बम फेंका। बम कुछ पीछे गिरा। बहुत-से आदमी सड़क पर घायल हुए, परन्तु मुसोलिनी बच गया।

अक्टूबर में एक और आक्रमण हुआ। एक क्रांतिकारी लड़के ने मुसोलिनी पर गोली चलाई। गोली उसके सीने पर लगी,

परन्तु उसके एक विशेष प्रकार के वस्त्र ने उसकी रक्षा की। लड़का पकड़ा गया।

सन् १९३१ ई० में माइकेल शिरू के घर में अनेक बम निकले। कहा जाता है कि वह मुसोलिनी को मारना चाहता था। वह पकड़ा गया और गोली से मार दिया गया।

सन् १९३२ ई० में मुसोलिनी का एक पुराना समाजवादी साथी एन्जिलो शारडेलेटो, जो उससे बदला लेने को रोम आया था, पकड़ा गया और मार डाला गया।

लगभग बारह बार मुसोलिनी के वध की कोशिश की गई, परन्तु किसी में सफलता नहीं मिली। इससे पता चलता है कि वह बड़ा भाग्यशाली है। हिटलर भी अपने शत्रुओं से अनेक बार बच गया।

मुसोलिनी कहता है, "यदि मैं आगे बढ़ता हूँ, तो मेरे पीछे चलो! यदि मैं पीछे हटता हूँ, तो मुझको मार डालो! यदि मैं गिरता हूँ, तो मुझसे बदला लो।" इन आशाओं पर ही वह इटली के निवासियों को उत्साह दिलाता हुआ सफलता के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

स्टेलिन

मा का लाल

मा स्कूल के दरवाज़े पर खड़ी है। जार्जिया के निवासियों की वेश-भूषा में यह अधेड़ स्त्री कितनी सुन्दर है! उसकी पुतलियाँ काली हैं—इतनी काली कि वे आँखों की सफ़ेदी में तैरती हुई-सी दिखाई देती हैं।

उसके कपड़े साफ़ हैं। तैंतीस वर्ष की अवस्था में ही दुःख की झलक उसके चेहरे पर खिंची है। उसके चार बच्चों में केवल एक ही शेष है जो उसके पास खड़ा है, और जिस पर वह कुछ डरती हुई-सी प्यार की दृष्टि डाल रही है।

लड़का कुछ लम्बा है, और दुबला-पतला भी। उसका शरीर कोमल है, और बाल काले। वह कुछ सुस्त-सा है। मा उसको चूमकर कह रही है, "मेरा सोसो बड़ा अच्छा लड़का है। मैंने उसे कभी नहीं मारा। दो साल हुए तब उसके पिता का देहान्त हो गया। मैं उसको मोची नहीं बनाना चाहती, क्योंकि वह बड़ी मिहनत से पढ़ता है। वह एक पादरी बनने योग्य है।"

पादरी, जिससे वह बातें कर रही है, लड़के को पुश्किन सड़क पर एक अँधेरी इमारत में ले जाता है, और स्कूल में दाखिल कर लेता है।

स्थान है जार्जिया में टिफ़लिस, और वर्ष है १८६३ का। स्त्री है एकाटेरीना जुगाशविली—गोरी के एक मोची की विधवा। लड़का है जोज़ेफ़, "सोसो", जो भविष्य में स्टेलिन के नाम से संसार के छठे भाग का स्वामी हुआ।

काकेसस पर्वत की ऊँची चोटियों के पीछे जार्जिया का देश है। मंगोल, हूण, यूनानी, तुर्क, यहूदी आदि लोगों ने आकर यहाँ

पर अनेक युद्ध किये। प्रोमेथियस यहाँ पर चट्टान से बाँधा गया, और जैसन ने 'गोल्डेन फ़्लीस' का पता लगाया। घोड़ों पर सवार होकर, विजय की पताका फहराते हुए, सिकन्दर, चंगेज़ ख़ाँ, तैमूरलंग आदि अनेक वीर यहाँ पर आये। अनेक धार्मिक युद्ध यहाँ पर लड़े गये और तलवार की धार से ईसाई-धर्म स्थापित किया गया।

यह गड़रिया राजाओं का देश था जो पहाड़ी राजाओं के अंतिम उत्तराधिकारी थे। ज़ार ने, जो अत्यंत लालची था, तीस साल की लड़ाई के बाद इस देश पर अपना शासन स्थापित किया। परन्तु उसका शासन भी कमज़ोर रहा, और मुसलमान तथा अरमीनिया के बादशाह इस पर अक्सर आक्रमण करके लूट-मार करते रहे।

जार्जिया के लड़के स्टेलिन ने अपनी मातृभूमि के साथ किये गये अत्याचारों का भविष्य में बदला लिया, और समस्त रूस को एक कड़ी चट्टान की तरह मज़बूत बना दिया।

जब सन् १८७६ ई० में स्टेलिन का जन्म हुआ, तो एक शक्ति, जो ज़ारशाही के खुले हुए अत्याचारों की अपेक्षा कहीं अधिक विनाशकारी थी, जार्जिया के पुराने आर्थिक ढाँचे को पतन की ओर लिये जा रही थी। यह नई शक्ति थी—सस्ता सामान।

विसारिओं जुगाशविली अन्तिम मोचियों में से एक था। वह गोरी के राजकुमारों और किसानों के लिए हाथ के सिले हुए जूते बनाता था। जब जार्जिया का निवासी गवर्नर और मोची परस्पर मिले तो दोनों ने एक-दूसरे को शान के साथ सलाम किया।

सन् १८६० ई० तक ये दिन समाप्त हो चुके थे। औद्योगिक क्रान्ति योरप से वहाँ आ पहुँची थी। रूस में भी पूँजीपतियों ने अपना स्वार्थ-साधन शुरू कर दिया था। बाकू में तेल था; पहाड़ियों पर, जहाँ भेड़ें चरती थीं, सोना आदि अन्य धातुएँ

थीं। सबका शोषण प्रारम्भ हो गया। जार्जिया की राजधानी टिफलिस में एक पूँजीपति ने कारख़ाना खोल दिया जिसमें बहुत सस्ते दामों में जूते बनने लगे।

आज़ाद विसारिश्रों को गोरी के बाग़ की झोंपड़ी का छोटा कारख़ाना छोड़ना पड़ा और टिफ़लिस के कारख़ाने में नौकरी करनी पड़ी। अब वह एक क़स्बे का निवासी हो गया। उसका स्वभाव गरम था, और वह कभी-कभी अपनी स्त्री को मारने से भी नहीं हिचकता था। वह चाहता था कि उसी की भाँति उसका लड़का भी कारख़ाने में नौकरी करे। परन्तु मा के आग्रह से सोसो गोरी के स्कूल में भर्ती हो गया। वह पढ़ने में तेज़ था, परन्तु उसकी असली पढ़ाई पर्वतों पर होती थी जहाँ पर वह भेड़ों को चराता, घोड़ों पर चढ़ता और उनका पीछा करता था। वह अपना छुट्टी का समय इसी प्रकार व्यतीत करता था। वह अपने साथियों का एक जत्था रखता था और स्वयं उनका नेता था। जब उसको पादरी बनने की शिक्षा दी जा रही थी तब वह एक डाकू बनने की तालीम ले रहा था। काकेसस पर्वत में डाकू बनना वीरता की निशानी मानी जाती है। डाकुओं का लोग रोब मानते हैं और सम्मान करते हैं। सोसो का पिता उसको अक्सर मारता था। इसका प्रभाव सोसो के हृदय पर ऐसा पड़ा कि वह ईश्वर और मनुष्यों से प्रेम करना छोड़कर अपने पिता से भी घृणा करने लगा।

विसारिश्रों जुगाशविली सख़्त मिहनत करता था और ख़ूब शराब पीता था। कुछ दिनों में उसकी मृत्यु हो गई। यदि एकाटेरीना इतनी अच्छी मा नहीं होती और इतना कठिन परिश्रम नहीं करती, तो सोसो को भूखों मरना पड़ता।

परन्तु अब चिन्ता के दिन समाप्त हो चुके थे और सोसो टिफ़लिस में पादरी बनने जा रहा था। अपने बच्चे की उन्नति

को देखकर मा ख़ुशी से फूली नहीं समाती थी क्योंकि वह ईश्वर से प्रार्थना कर चुकी थी कि वह उसको केवल एक पुत्र दे जो जीवित रह सके।

टिमटिमाता हुआ दीपक अपना पीला प्रकाश स्कूल के अँधेरे कमरे में फैला रहा है। आधे दर्जन झुके हुए सिर उसकी किरणों को दूरवर्ती कोनों तक पहुँचने से रोक लेते हैं।

दीपक के सबसे समीप एक नौजवान बैठा है जिसके बाल काले हैं। धुँधले प्रकाश में उसके चेहरे का रंग उन पृष्ठों की तरह लगता है जिनको वह ज़ोर से पढ़ रहा है।

सन्नाटा छा जाता है। नौजवान की भौंहों में बल पड़ गया है, और उसकी जमी हुई आँखें पुस्तक पर छपे हुए शब्दों की अपेक्षा कुछ और खोज रही हैं। जोज़ेफ़ 'अतिरिक्त-मूल्य*' पर कार्लमार्क्स के विचार पढ़ रहा है, परन्तु एक ऐसा अवतरण आ जाता है जो ठीक समझ में नहीं आता। एक कष्टप्रद समस्या है। दस आँखें चिन्तित होकर उसके चेहरे पर गड़ी हुई हैं। यदि जुगाशविली उसका अर्थ नहीं निकाल सकता, तो भला और कौन उसको समझ सकता है?

ओहो! वह समझ गया। अपनी भारी और कड़ी आवाज़ में, कुछ-कुछ हिचकते हुए, वह समझाता है कि मार्क्स का क्या आशय था। शिष्यों के गम्भीर चेहरे हिलते हैं और ख़ुशी से खिल उठते हैं।

जार्जिया के धार्मिक स्कूल में इस नौजवान-द्वारा बनाई गई ख़ुफ़िया सभा की यह साप्ताहिक मीटिंग है। सोसो स्वयं मार्क्स के सिद्धान्तों को भलीभाँति नहीं जानता है, परन्तु आधी रात को वह दूसरों को उन पर शिक्षा देता है और स्वयं भी उससे लाभ उठाता है।

* Surplus value

यह सोसो की आन्तरिक शक्ति है। वह मार्क्स के सिद्धान्तों को उसी प्रकार स्वीकार करता है जिस प्रकार सेन्ट पाल ने ईसाई-धर्म को स्वीकार किया।

बहुत वर्ष बीतने पर जब लुडविग ने उससे पूछा, "मैं समझता हूँ कि बचपन में घर पर आपके साथ बुरा बर्ताव किया गया। यही कारण है कि आप इतने बड़े क्रान्तिकारी हो गये।" स्टेलिन ने उसकी ओर ध्यान से देखा और कहा, "यह सब कुछ नहीं। मेरे माता-पिता मज़दूरी करते थे। अन्य मज़दूरों के साथ-साथ उनसे भी बुरा व्यवहार किया जाता था। रूसी पूँजीवाद संसार में सबसे अधिक क्रूर था। ज़ार की सरकार बहुत ही बुरी और मूर्ख थी। मैंने सोचा कि मार्क्सवादी ठीक रास्ते पर हैं।"

परन्तु जब सोसो एक पादरी बनने की शिक्षा ले रहा है, टर्की में आर्मीनिया के निवासियों का लगातार क़त्ल हो रहा है। दक्षिणी रूस में भी यह जाति-द्वेष फैल जाता है। टिफ़लिस में भी यह लहर उठती है। देशभक्त और क्रान्तिकारी ज़ार की नीति का विरोध करते हैं। मार्क्सवादी उसको बदनाम करते हैं। सोसो उनमें प्रमुख है। वह कहता है, "यही है शत्रु! उसके विरुद्ध जो भी हथियार चला सको, चलाओ।"

इस समय, जब सोसो अपने साथियों को मार्क्स के सिद्धान्त समझा रहा है, वह यह नहीं देखता कि एक सातवाँ आदमी चुपचाप खड़ा हुआ है। वह ख़ुफ़िया पुलिस का एक सिपाही है जो सोसो के प्रत्येक शब्द को अपनी डायरी में दर्ज करता जा रहा है।......

स्टेलिन लिखता है, "दूसरे दिन सुबह के नौ बजे नाश्ते की घंटी बजी। हम खाने के कमरे में गये; और जब हम लौटे तो

हमको पता चला, हमारी सब चीज़ें तितर-बितर पड़ी थीं। किसी ने उनकी खोज की थी।

जुगाशविली के कमरे में समाजवादी लेख और पुस्तकें पाई गईं जिनमें मार्क्स की 'डास कैपिटाल' भी थी। स्कूल की कौंसिल ने दोषी को बुलाया। उसी दिन एक नोटिस लगा दी गई, "समाजवादी विचारों के कारण जोज़ेफ़ जुगाशविली स्कूल से निकाल दिया गया है।"

एकाटेरीना की आशाओं पर पानी फिर गया। वह खूब फूट-फूटकर रोई।

दूसरे दिन जोज़ेफ के पाँचों साथी भी स्कूल से निकाल दिये गये। वे उससे आकर मिल गये। उसने कहा, "चर्च को मानने-वाले बहुत-से हैं। हमारी पार्टी बहुत छोटी है। हम लोग अब शक्ति संगठित करेंगे, क्योंकि हमारा चर्च-जीवन सदैव के लिए समाप्त हो गया।"

एडेमी होटल में पहली बार जोज़ेफ़ की दक्षिणी रूसी समाजवादी आन्दोलन के नेताओं से भेंट हुई। ये नेता प्रचार के लिए टिफ़्लिस में भेजे गये थे। सोसो ने इन नेताओं को अपनी समस्त पिछली घटनायें सुनाईं, और स्कूल से निकाले जाने का कारण भी बताया। उन्होंने लड़के की चमकती हुई आँखों में उज्ज्वल भविष्य का संकेत पाया और उसको अपने दल का सदस्य बनाया। सोसो के जीवन की यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना है।

'अँधेरे बाज़ार' के मज़दूरों को संगठित करने का काम सोसो के सुपुर्द किया गया। उसने उचित समझा कि वह स्वयं एक दूकान पर नौकरी कर ले ताकि वह मज़दूरों से भलीभाँति मिल सके। महीनों तक वह एक सौदागर की दूकान पर नौकरी करता रहा। अब उसे अपने साथियों की शिकायतों का पता चला।

कुछ दिनों बाद 'अँधेरे बाज़ार' के मज़दूरों में एक अजीब अशान्ति फैल गई। एक कमेटी बनाई गई जिसने निश्चय किया कि मज़दूरों को हड़ताल कर देनी चाहिए। सोसो उनका नेता था। निश्चित समय पर हड़ताल शुरू हुई। भयभीत सौदागरों ने पुलिस से सहायता के लिए प्रार्थना की। कैसक आ गये। कुछ लोग घायल हुए और कुछ मारे गये। परन्तु मज़दूरों ने साहस नहीं छोड़ा। बाज़ार की सब दूकानें बन्द हो गईं।

सोसो अब कॉमरेड कोबा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। वह अपना नाम भूल गया और उसने अपनी मा का रक्खा हुआ प्यारा नाम भी भुला दिया। ज़ार की पुलिस कोबा के पीछे लगी हुई थी। उसका वारन्ट निकल गया। उसको अपनी रक्षा के लिए बाटूम के बन्दरगाह में शरण लेनी पड़ी।

लेनिन का प्रभाव

बाटूम की जेल में सन्नाटा छाया हुआ है। एक छोटे-से कमरे में मोमबत्ती के प्रकाश में एक हट्टा-कट्टा नौजवान एक लेख पर आँख गड़ाये हुए धीरे-धीरे कुछ गुनगुना रहा है। बीच-बीच में एक धीमी-सी मुस्कान उसके ओठों पर आ जाती है। मालूम पड़ता है कि वह किसी बड़े रहस्य को सुलझाकर अपनी सफलता पर हँस रहा है। उसकी आँखें धीरे-धीरे झपकने लगती हैं, और उसकी हँसी अंधकार में विलीन हो जाती है।

नौजवान है बंदी कोबा। लेख है लेनिन का। समय है रात के १२ बजे का।

बाटूम में आने पर कोबा को मालूम हुआ कि वहाँ पर उसके क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार भलीभाँति हो सकेगा। लोगों ने उसका स्वागत किया। शीघ्र ही उसने ज़ार के पक्षपातियों के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया।

फ़रवरी, सन् १६०१ ई० में पुलिस उसकी देख-भाल करने लगी। वह पकड़ा गया, परन्तु उस पर किसी प्रकार का दोष सिद्ध नहीं किया जा सका। अगले मार्च में उसने एक आन्दोलन में भाग लिया जो शीघ्र ही विद्रोह में बदल गया। पुलिस ने विद्रोहियों पर गोली चलाई और बहुत-से विद्रोही मारे गये। कोबा को फिर भागना पड़ा।

इस समय तक लेनिन के लेख योरप में प्रचलित हो गये थे। उन पर बहुत वाद-विवाद होता था। कुछ दिनों साइबेरिया में रहने के बाद लेनिन स्विटज़रलैंड में आगया था और वहाँ पर अपने

साथियों का संगठन कर रहा था। उसके दृढ़ निश्चय और प्रौढ़ विचारों ने लोगों पर बड़ा प्रभाव डाला। शीघ्र ही वह उनका नेता बन गया और क्रान्तिकारियों का एक दल बनाने लगा। वह साथियों की संख्या पर अधिक ज़ोर नहीं देता था, परन्तु कुछ चुने हुए साथियों में विश्वास करता था जो किसी प्रकार की आपत्तियों से न घबड़ायें। अपने 'इस्करा' नामक पत्र में लेनिन अपने विचारों को बहुत ज़ोरदार शब्दों में व्यक्त करने लगा।

कोबा पर लेनिन के विचारों का बड़ा प्रभाव पड़ा। टिफ़लिस में ही लेनिन के लेखों से वह आकृष्ट हुआ था। उसने कहा, "लेनिन एक असाधारण व्यक्ति है। वह पार्टी का पहाड़ी गिद्ध है।"

कोबा ने अब 'सू-डक-सू' के क़ब्रिस्तान में एक छापाख़ाना खोल लिया। वहाँ पर वह लेनिन के विचारों का प्रचार करने लगा। बहुत-से जार्जिया-निवासी मुसलमान औरतों के वेश में बुर्क़ा डालकर कोबा के पास आने लगे। पुलिस को पता चल गया। कोबा पकड़ा गया और जेल में भेज दिया गया।

बाटूम की जेल में ही मोमबत्ती के प्रकाश में कोबा ने लेनिन के लेख पढ़े।

लंदन में लेनिन ने रूसी मार्क्सवादी पार्टी की कांग्रेस में अपने विचार व्यक्त किये। उसकी नीति यह थी कि (१) पार्टी सशस्त्र हिंसा का कार्य-क्रम स्वीकार करे, (२) किसी दूसरी पार्टी से किसी प्रकार का समझौता न करे और (३) पार्टी चुने हुए दृढ़ निश्चयवाले क्रान्तिकारियों का एक जत्था हो।

मार्क्सवादी कांग्रेस दो भागों में विभक्त हो गई—बोल्शेविकी और मेन्शेविकी। उस समय से ये शब्द संसार के इतिहास में ख़ूब प्रचलित हुए हैं। लेनिन बोल्शेविकी पार्टी में था जो हिंसा-द्वारा क्रांति करना चाहती थी। मेन्शेविकी दल-विधान को पसन्द

करता था। अगले दस वर्ष तक दोनों दल एक-दूसरे का बहुत विरोध करते रहे।

बाटूम की जेल में बैठे हुए कोबा को हिंसा-द्वारा क्रान्ति करनेवालों का कार्य-क्रम पसन्द आया और वह लेनिन का पक्का अनुयायी बन गया।

अठारह महीने जेल में रहने के बाद कोबा तीन साल के लिए साइबेरिया में निर्वासित कर दिया गया। हज़ारों मील पैदल चलकर वह साइबेरिया पहुँचा। यहाँ पर एक छोटे-से गाँव में वह रहने लगा।

अब कोबा ने लेनिन के लिए एक पत्र लिखा। कुछ दिनों बाद अपने पत्र का उत्तर पाकर उसके आनन्द की सीमा न रही। बहुत वर्षों बाद स्टेलिन ने उस पहले पत्र के विषय में कहा, "मैंने उस पत्र को जला दिया, जैसा कि प्रत्येक क्रांतिकारी को करना उचित था ताकि वह पत्र और किसी के हाथ न पड़े, परन्तु मैं इस कार्य के लिए अपने को कभी क्षमा नहीं कर सकता, क्योंकि इस मामले में भी मैंने नियमों का इतना अधिक पालन किया कि पत्र को सुरक्षित नहीं रक्खा।"

एक साल बाद कोबा साइबेरिया के गाँव से ग़ायब हो गया और कुछ दिन बाद काकेसस में सिपाही की वर्दी में दिखाई पड़ा। वह बड़ी तेज़ी से अपने साथियों का संगठन करने लगा, और 'स्ट्रगल ऑव दी प्रोलीटेरियट' नामक एक समाचार-पत्र का सम्पादन करने लगा। वह बोल्शेविक पार्टी का सदस्य बन गया और पार्टी की आनेवाली कांग्रेस का प्रतिनिधि चुना गया।

सन् १६०५ में पार्टी ने अपनी वार्षिक कांग्रेस फ़िनलैंड में टैमरफ़ोर्स नामक स्थान पर की। कोबा यहाँ पर मौजूद था। यह लेनिन से उसकी पहली भेंट थी।

कोबा ने सोचा था कि पार्टी के सभापति लेनिन का व्यक्तित्व बहुत अच्छा होगा, और वह बड़ी शान के साथ एक बड़े कमरे में घुसेगा जहाँ पर तालियों की ध्वनि में वह सभापति का आसन ग्रहण करेगा। परन्तु वास्तव में बात कुछ और ही हुई। कोबा ने देखा कि एक बड़े कमरे के कोने में कुछ आदमी बैठे हुए बात-चीत कर रहे थे। लेकिन, जो सभापति का आसन ग्रहण किये हुए था, एक बहुत सीधा-सादा-सा मनुष्य था। उसके सिर के बाल उड़ गये थे और वह एक छोटी-सी दूकान का कम वेतन पानेवाला व्यापारिक यात्री-सा लगता था। परन्तु जब उसने देखा कि सब लोग उसकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहे हैं, और उसकी दलीलें तथा विचार बहुत उच्च कोटि के हैं, तब उसके हृदय में लेनिन की महत्ता और सादगी के कारण उसके प्रति असीम श्रद्धा उत्पन्न हुई।

कांग्रेस के समाप्त होने पर कोबा ने संगठन का काम फिर शुरू कर दिया।

क्रांतिकारियों की आशा थी युद्ध। लेनिन इस बात को जानता था कि किसानों का विद्रोह ज़ारशाही को नहीं मिटा सकता। हड़तालें भी सफल नहीं हो सकती थीं। अल्पसंख्या क्रान्ति के बिना शक्ति नहीं छीन सकती थी। साथ ही साथ वह भली-भाँति समझता था कि जब तक हथियार सरकारी इमारतों में सुरक्षित थे, तब तक क्रान्ति सफल नहीं हो सकती। लेनिन का विश्वास था कि यदि रूसी सिपाही किसी युद्ध में असफल होकर लौटें, तो वे अवश्य उसके आन्दोलन को सहायता देंगे। उसने बहुत-से लोगों को समष्टिवादी बनाना उचित नहीं समझा। लोकतंत्रवादी बहुमत का शासन लेनिन को पसन्द नहीं था। उसका विचार यह था! जब ठीक समय आयेगा, तब दृढ़ निश्चयवाले कुछ लोग ही सरकार की शक्ति को छीन लेंगे और

अपनी इच्छा के अनुसार क्रान्ति कर सकेंगे। जब ज़ार निकोलस द्वितीय ने जापान से लड़ाई शुरू कर दी, तब जनेवा में लोगों को कुछ आशा बँधी, जब युद्ध का परिणाम रूस के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ, तब लेनिन ने निश्चित समझा कि रूस क्रान्ति के लिए तैयार था।

अब क्रान्तिकारी आन्दोलन की एक भयंकर लहर फैली। रोस्टोव के शहर में बहुत बड़ी हड़ताल हुई। यूकराइन और काकेसस में अनेक विद्रोह हुए। बाकू में, जो कैस्पियन सागर के निकट तेल का बहुत बड़ा केन्द्र था, विद्रोह की आग धधक उठी। ज़ारशाही थरथराने लगी।

मॉस्को की सड़कों पर क्रान्ति बड़ी तेज़ी से फैली। गवर्नर को अचानक ही लोगों ने घेर लिया। क़िले के सिपाही घबड़ाये। पहले-पहल ऐसा मालूम हुआ कि क्रान्तिकारी शहर पर अधिकार कर लेंगे। लेनिन और उसके साथी वेश बदलकर सेन्टपीटर्सबर्ग पहुँचे ताकि वे विद्रोह को अपने अधिकार में ले लें। उनका सबसे पहला काम यह था कि वे मास्को के क़िले के सिपाहियों के पास सामान न पहुँचने दें। कुछ लोगों का विचार था कि सेन्टपीटर्सबर्ग में भी वैसा ही एक विद्रोह प्रारम्भ कर दिया जाय ताकि वहाँ के सिपाही मास्को के सिपाहियों को सहायता न दे सकें। कुछ ने सोचा कि मास्को और सेन्टपीटर्सबर्ग के बीच की रेल की पटरी काट दी जाय। रेल के आदमियों ने हड़ताल कर दी और दोनों शहरों के बीच रेलें बन्द हो गईं।

क्रान्तिकारियों ने मज़दूरों और विद्यार्थियों में क्रान्ति का जोश पैदा किया, परन्तु अधिक लोग शामिल न हो सके। केवल कुछ मज़दूर और कुछ मल्लाह तैयार हुए। हथियारों की कमी थी। इसी समय ख़बर मिली कि सरकार सैनिकों-द्वारा रेल चलाने का प्रबन्ध कर रही है। लेनिन को देर हो गई। सैनिकों को

भड़काने की कोशिश की गई, परन्तु उसमें असफलता मिली। गाड़ियाँ सैनिकों से भर भरकर पीटर्सबर्ग से मास्को को रवाना हो गईं। सैनिकों के पहुँचते ही क्रान्तिकारियों को मॉस्को में दबा दिया गया।

कोबा क्रोध से जल उठा। उसने कहा, "क्रान्ति की तैयारी का यह कौनसा ढंग है? शब्द, शब्द, कोरे शब्द, जब केवल हथियारों की आवश्यकता थी।"

लेनिन ने चुपचाप कहा, "कुछ चिन्ता नहीं। हमको एक भयंकर सबक़ मिला है। भविष्य में हम ठीक काम करेंगे।"

नये सैनिकों ने शीघ्र ही मॉस्को की सड़कों को साफ़ कर दिया। पुलिस ने बहुत-से आदमी गिरफ़्तार किये। दूकानें फिर खुल गईं और सड़कों पर गाड़ियाँ दौड़ने लगीं।

ज़ार की सरकार ने तलवार की धार से क्रान्ति के चिह्नों को मिटा दिया। मार्क्सवादी नेताओं में परस्पर मतभेद हो गया। जनता का विश्वास उनके ऊपर से हट गया। आर्थिक सहायता बन्द हो गई। क्रान्तिकारियों की संख्या तेज़ी से घटने लगी। जनता को अपने पक्ष में करने के लिए एक क्रान्तिकारी समाचार-पत्र को प्रकाशित करने की आवश्यकता थी, परन्तु उनके पास रुपया नहीं था। चंदा मिल नहीं सकता था, और क्रान्तिकारी अधिकतर ग़रीब थे। लेनिन निराश था, परन्तु कोबा ने कहा, "मैं आपके लिए रुपया लाऊँगा।"

कोबा का एक मित्र था, जिसका नाम था कामो। कामो दृढ़ निश्चयवाला व्यक्ति था और हृदय से ज़ार से घृणा करता था। वह जार्जिया का रहनेवाला था और पहाड़ियों की तरह लूट-मार में बहुत निपुण था।

जून, सन् १९०७ ई० में कोबा को पता चला कि एक बहुत

बड़ी सरकारी रक़म सेन्टपीटर्सबर्ग से टिफ़लिस को भेजी जा रही है। कोबा ने उसे लूटने के लिए जाल रचा।

तेईस जून को दिन के दस बजे सिपाहियों से सुरक्षित कुछ गाड़ियाँ टिफ़लिस के डाकख़ाने से जार्जिया के सरकारी बैंक के लिए रवाना हुईं। एक गाड़ी में ख़ज़ानची और मुनीम बैठे थे। शेष में सैनिक अफ़सर थे। ख़ज़ानची के पास सन्दूक़ रक्खे थे जिनमें ३,००,००० से अधिक रुबिल (रूसी सिक्के) थे। सड़कें आदमियों से भरी हुई थीं। सब लोग अपने-अपने कामों में लगे थे।

सड़क के कोने पर वाइसराय के मकान के पास एक स्त्री एक अख़बार लिये हुए खड़ी थी। जैसे ही भीड़ कोने की ओर मुड़ी, स्त्री ने अपना अख़बार ऊपर को उठाया; दूसरे ही क्षण लगातार छः बम गिरे, जिनसे शहर काँप उठा, स्थान धुएँ से भर गया। आदमी चिल्लाये, स्त्रियाँ चीख़ीं और घोड़े हिनहिनाये। लगभग एक मील तक खिड़कियों के शीशे टूट गये।

सैनिक अफ़सर के वेश में एक घुड़सवार चौराहे पर उतरा और उस गाड़ी की ओर बढ़ा जिसमें रुपया रक्खा था। तेज़ी के साथ रुपयों का थैला लेकर वह घोड़े पर चढ़ा और भाग गया।

घुड़सवार था कामो, बम फेंकनेवालों में था कोबा।

जब पुलिस और सेना उस स्थान पर आई, तब वहाँ पर कुछ मरे हुए और कुछ घायल लोग पड़े हुए मिले। इनमें से उस जत्थे का कोई आदमी नहीं था जिसने लूट-मार की थी।

उसी रात को वे लोग पहाड़ों पर डरशेट के गाँव में परस्पर मिले। शोरगुल समाप्त हो चुका था, पुलिस प्रत्येक स्थान को देख चुकी थी, परन्तु लुटेरों को नहीं पा सकी। धन हिफ़ाज़त के साथ टिफ़लिस में छिपा दिया गया था।

रूस में खलबली मच गई। मार्क्सवादियों ने कोबा को बदनाम किया। वह मार्क्सवादी पार्टी के काकेसस के जत्थे से निकाल दिया गया। केवल लेनिन ने उसका पक्ष लेते हुए कहा, "लूटनेवालों को लूटो।"

इस समय कोबा की अवस्था अट्ठाईस वर्ष की थी। वह एक लड़की को प्यार करने लगा था। वह अक्सर उसके घर जाता, नदी के किनारे उससे बातचीत करता और उसे अपने जीवन की घटनायें सुनाता था। दोनों का सम्बन्ध घनिष्ठ हो गया। उसने लड़की से विवाह कर लिया। लड़की का नाम था स्वानिज्ञ। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम था याशा। इस समय पार्टी के धन से कोबा को पंद्रह रूबिल वेतन के रूप में मिलते थे।

निर्वासन

सन् १६०८ ई० के धावे में रूसी पुलिस ने कुछ क्रान्तिकारियों को पकड़ने में सफलता प्राप्त की। एक मनुष्य जिसका नाम निजेरेज़ था और जिसकी अवस्था लगभग तीस वर्ष की थी, गिरफ़्तार किये हुए क्रान्तिकारियों में से था। पुलिस ने उसको पुराना क्रान्तिकारी सिद्ध करने की चेष्टा की, परन्तु उसमें सफलता नहीं मिली; क्योंकि इस नाम का कोई भी पुराना क्रान्तिकारी नहीं था। इसलिए उसको तीन वर्ष के लिए निर्वासित किया गया और वह मॉस्को के उत्तर में वोलोग्डा की जेल में भेज दिया गया।

पुलिस नहीं जानती थी कि निजेरेज़ नाम से गिरफ़्तार किया गया आदमी वही था जो टिफ़लिस में सोसो के नाम से और बाद में कोबा के नाम से प्रसिद्ध था।

एक साल बाद कोबा जेल से भाग आया और अब वह सेन्टपीटर्सबर्ग में रहने लगा। इस बार उसने अपना नाम चिजीकोव रख लिया। उसने अपनी दाढ़ी और मूछें छोटी करवा लीं ताकि पुलिस उसको पहचान न सके। एक दिन वह सेन्ट-पीटर्सबर्ग से बाटूम चला गया। वहाँ पर पुलिस ने उसको पहचान लिया और गिरफ़्तार कर लिया। इस बार उसको छः वर्ष की सज़ा दी गई।

कोबा को ये छः सालें सोल्विचडोग्स में बिताने थे, परन्तु कुछ वर्षों के बाद वह वहाँ से भाग आया। वह सेन्टपीटर्स-बर्ग की ओर फिर रवाना हुआ, परन्तु वह वहाँ आ भी नहीं पाया था कि फिर गिरफ़्तार कर लिया गया और जेल में भेज दिया

गया। चौथी बार फिर उसने भागने के लिए जाल रचा, और इस बार भी उसको सफलता मिली।

इस प्रकार सन् १९१२ ई० में वह प्रेग में आया जहाँ पर मार्क्सवादी पार्टी अपनी कांग्रेस कर रही थी। यहाँ पर उसका स्वागत किया गया, और वह केन्द्रीय कमेटी का सदस्य चुन लिया गया।

कमेटी के अन्य सदस्यों की भाँति उसके लिए आवश्यक था कि वह विदेशों में यात्रा करे ताकि वह कुछ विदेशी भाषायें भी सीख सके। परन्तु कोबा रूस को नहीं छोड़ना चाहता था।

वह सेन्टपीटर्सबर्ग में कार्यकारिणी समिति के सदस्य के रूप में लौटा। उसको पार्टी के लिए एक समाचारपत्र निकालने का काम सुपुर्द किया गया। कुछ दिनों में उसने 'प्रैव्डा' नामक पत्र निकाला। इस पत्र में पहली बार स्टेलिन नाम निकला।

स्टेलिन वास्तव में जार्जियन नाम जुगाशविली का रूसी अनुवाद है। जुगा को रूसी भाषा में स्टाल कहते हैं। वास्तव में उसका शरीर स्टील (फ़ौलाद) की भाँति मजबूत था। इसी लिए उसका नाम भी स्टेलिन पड़ा। उसका यह नाम सबसे अधिक प्रचलित हुआ, और अभी तक वह इसी नाम से प्रसिद्ध है।

अप्रैल, सन् १९१२ ई० में रूसी पुलिस ने स्टेलिन को पकड़ लिया जो इवानोविच के नाम से रहने लगा था। अब वह पाँचवीं बार जेल में भेज दिया गया। इस बार भी वह तीन साल के लिए निर्वासित कर दिया गया। परन्तु सितम्बर में वह फिर भाग आया। वह क्रेकाऊ में लेनिन से मिलने पहुँचा।

लेनिन से मिलकर और उससे आवश्यक आदेश लेकर स्टेलिन फिर सेन्टपीटर्सबर्ग आ गया। जो कार्य उसके सुपुर्द किया गया था उसके लिए ऊँची राजनीतिक शिक्षा की आवश्यकता थी। इस बार मार्क्सवादियों ने ड्यूमा के चुनाव में भाग लिया। उनको

सोलह स्थान मिल गये। लेनिन ने स्टेलिन को पार्टी के पार्लियामेंटरी जत्थे का प्रधान बना दिया।

अब वह तेज़ी से काम करने लगा। पुलिस ने पहले कोई छेड़छाड़ नहीं की। 'प्रैव्डा' का दैनिक प्रकाशन हुआ। उसके ग्राहकों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। स्टेलिन अब अच्छा पत्रकार हो गया। उसकी लेखन-शैली बहुत साफ़ और सीधी थी। इससे पता चलता है कि उसका मानसिक विकास काफ़ी हो चुका था।

स्टेलिन ने अपनी सफलता की सूचना लेनिन को दी। पार्टी फिर से शक्तिशाली हो गई थी। सन् १९०५ ई० की हानि बहुत कुछ पूरी हो चुकी थी।

परन्तु इसी समय, जब स्टेलिन अपने को सुरक्षित समझता था और उसको अपना भविष्य बहुत आशाजनक दिखाई पड़ता था, दो सिपाहियों ने आकर उसको गिरफ़्तार कर लिया। उसने उनका विरोध किया, परन्तु एक न चली। दारोग़ा ने उसके पिछले जीवन का पूरा चिट्ठा उसके सामने रख दिया। स्टेलिन आश्चर्य में पड़ गया। उसने समझा कि उसका भविष्य अन्धकारमय था।

एक भयंकर क्रान्तिकारी के रूप में उसके भाग्य का निपटारा हुआ। कई बार वह साइबेरिया भेजा जा चुका था। परन्तु वहाँ से वह बार-बार भाग आया था। इस बार सरकार ने उसको आर्कटिक सागर से केवल १५ मील की दूरी पर कुलीका नामक गाँव में भेज दिया, जहाँ पर केवल चार या पाँच ही घर थे। यहाँ पर उसको रॉबिन्सन क्रूसो की भाँति जीवन व्यतीत करना पड़ा। उसको अपनी आवश्यकता की समस्त वस्तुएँ स्वयं संचित करनी पड़ीं। शिकार करके वह अपना पेट भरता; यदि किसी दिन उसको शिकार नहीं मिलता तो भूखों मरना पड़ता। पुलिस हर समय उसकी चौकसी के लिए रहती ताकि वह वहाँ

से भाग न जाय। यहाँ पर उसकी दशा इतनी खराब थी कि उसको भागने की कोई सूरत नहीं दिखाई देती थी।

स्टेलिन आर्कटिक सागर के किनारे पर बैठ जाता। तीन झोंपड़ी के कुलीका के गाँव में रूस का भावी भाग्य-विधाता शिकार खेलता, मछली पकड़ता और किसी न किसी प्रकार अपनी भूख को शान्त करता था।

वह एकान्त को बुरा नहीं समझता, क्योंकि वह उसकी गम्भीर प्रकृति के अनुकूल था। सामने चमकती हुई बर्फ़-राशि फैली थी। अँधेरी रातों में वह कमरे के अन्दर बन्द हो जाता। सुबह को उठता, अपने सामने दूर तक फैले हुए वीरान की ओर दृष्टि डालता और फिर कुछ लकड़ियाँ जलाकर ठंडे ख़ून को गरम करता था। वह खाना खाता, कुछ पढ़ता और फिर बन्दूक़ लेकर शिकार की खोज में बाहर निकल जाता था। गोधूलि के समय वह वापस आता; फिर कुछ खाता, पढ़ता, और लिखता था। रात को सोते समय कभी-कभी जंगली जानवर उसकी नींद को तोड़ देते थे।

महीने बीत गये। शायद ही कभी किसी राजनीतिक क़ैदी से उसकी भेंट हो जाती, जिससे वह अपने हृदय के उद्गार व्यक्त कर सकता था। उसने कई बार भागने की भी कोशिश की, परन्तु वह असफल हुआ।

कुछ दिन बाद उसका भाग्य-सितारा चमका। जून, सन् १९१४ ई० में सर्बिया की पिस्तौल चली जिससे सोता हुआ योरप जाग उठा। महायुद्ध प्रारम्भ हो गया। स्टेलिन ने समझा कि वह शीघ्र ही मुक्त कर दिया जायगा।

ज़ार का पद-त्याग

जिस समय स्टेलिन साइबेरिया में निर्वासन के दिन व्यतीत कर रहा था, रूस की आन्तरिक दशा में बहुत परिवर्तन हो गया था। रूस के मज़दूरों और किसानों में जाग्रति उत्पन्न हो गई थी। देश में मज़दूरों ने अनेक हड़तालें कीं, और ज़ार की हालत चिन्ताजनक थी। इसी समय सन् १९१४ ई० में योरपीय महायुद्ध प्रारम्भ हो गया जिसने ज़ार के स्वेच्छाचारी शासन का अन्त कर दिया।

ज़ार के पतन के प्रधान कारण थे—(१) युद्ध में ज़ार की नीति की असफलता; (२) ज़ार की पत्नी का उस पर अनुचित प्रभाव और (३) जनता का बढ़ता हुआ आन्दोलन।

अपने पूर्वजों की भाँति ज़ार निकोलस द्वितीय स्वेच्छाचारी शासन में विश्वास करता था। उसका कथन था, "स्वेच्छाचारी शासन-द्वारा ही रूस का अस्तित्व रह सकता है और उसमें सुख तथा शांति स्थापित हो सकती है।" रूस की प्रतिनिधि सभा ड्यूमा के सम्बन्ध में उसकी राय थी, "ड्यूमा क्रांतिकारी प्रचार का प्लेटफ़ार्म है।" सन् १९१३ ई० में उसने ड्यूमा की शक्ति को कम करने की पूरी कोशिश की। परन्तु उसके कामों में उसने अधिक छेड़-छाड़ नहीं की।

जनता की ज़रूरतों का ध्यान न रखते हुए और उसके आन्दोलन की चिन्ता न करते हुए, ज़ार अपने परिवार के साथ आनन्द का जीवन व्यतीत करता था। लगभग समस्त राज-नीतिक और व्यक्तिगत समस्याओं में वह रानी की बात मानता था। रानी की प्रवृत्ति धार्मिक थी। वह अन्धविश्वासों को मानती थी और ज़ार के स्वेच्छाचारी शासन का पूरा समर्थन

करती थी। उसने एक बार ज़ार को लिखा, "मेरे जीवन में विश्वास, धर्म और यीशु का प्रेम बहुत ही महत्त्व रखते हैं, और मेरे जीवन के बाईस सालों से इनका गहरा सम्बन्ध रहा है।"

रानी के कोई पुत्र नहीं था। उसको बड़ी चिन्ता थी कि किसी प्रकार उसके एक पुत्र उत्पन्न हो जो जीवित रहकर ज़ार का उत्तराधिकारी बने। वह 'ईश्वर-भक्तों' में अधिक विश्वास करती थी और उनका सम्मान भी करती थी ताकि उनके आशीर्वाद से उसके कोई पुत्र उत्पन्न हो। कुछ दिनों बाद उसके एक पुत्र ने जन्म लिया, परन्तु जन्म-दिन से ही उसको एक भयङ्कर बीमारी ने घेर लिया। इसी समय रास्पुटिन नामक एक साधु उसके पास आया। वास्तव में वह एक ग़रीब किसान था जिसको घोड़ों की चोरी करने के कारण घर से भागना पड़ा था। उसने सन्यासियों के वस्त्र धारण कर लिये थे, अपने बाल बढ़ा लिये थे और लोगों पर अपना प्रभाव डालना शुरू कर दिया था। शीघ्र ही उसकी प्रसिद्धि राज-दरबार में पहुँची। जब वह ज़ार तथा उसकी पत्नी के पास पहुँचा, तब उसने उन दोनों को विश्वास दिलाया कि वह उनके एकमात्र पुत्र का इलाज करके उसको ठीक कर देगा। दैवयोग से राजकुमार की दशा ठीक हो गई। रास्पुटिन ने रानी के ऊपर इतना प्रभाव जमाया कि रानी उसको ईश्वर के भेजे हुए दूत की भाँति मानने लगी। अब रास्पुटिन बड़ा घमंडी हो गया। वह जनता तथा राजदरबारियों के साथ बुरा व्यवहार करने लगा। परन्तु रानी ने लोगों की शिकायतों की कुछ भी चिन्ता नहीं की और राजा से उसकी प्रशंसा करती रहीं।

इसी बीच में युद्ध आरम्भ हो गया। ज़ार स्वयं सेनापति बनना चाहता था। उसके सहकारियों ने राय दी कि वह स्वयं पेट्रोग्रेड में रहे और किसी दूसरे व्यक्ति को सेनापति बना दे।

ज़ार ने एक न मानी और वह स्वयं प्रधान सेनापति बन गया। राज्य की देख-भाल के लिए उसने ज़ैरीना एलैग्ज़ेन्ड्रा को छोड़ दिया जो रास्पुटिन की राय से राज्य का प्रबन्ध करने लगी।

ज़ार युद्ध में चला गया। रानी स्वयं युद्ध के कामों में भाग लेने लगी। वह स्वयं अपनी लड़कियों के साथ अस्पतालों में जाती और घायलों की देख-भाल करती थी। २२ अगस्त, सन् १९१५ ई० में रानी ने ज़ार को लिखा, "आप युद्ध में अपनी वीरता-द्वारा रूस के सामने एक आदर्श रखिए। आपकी विजय रूस के इतिहास में एक शानदार घटना होगी। ईश्वर आपके देश और सिंहासन को आपकी मज़बूती-द्वारा बचायेगा। ईश्वर ने आपको राजसिंहासन दिया और आपने अपना कर्तव्य-पालन किया। वे लोग जो आपसे डरते हैं और आपके कार्यों को नहीं समझ सकते, थोड़े ही समय में आपकी बुद्धिमानी को समझ जायँगे। जैसा कि हमारे मित्र (रास्पुटिन) कहते हैं। इसका परिणाम बहुत ही अच्छा होगा।" ज़ार ने इसका उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे ऊपर गर्व करने का अधिकारी हूँ, जैसा कि मैं अभी तक करता रहा हूँ, क्योंकि तुमने ही मुझे अपने विचारों में मज़बूत रहने का साहस दिलाया और मुझको यह पद स्वीकार करने की राय दी।"

अपने विश्वास में दृढ़ होकर रास्पुटिन के आदेशों को मानकर और राजा का समर्थन पाकर, ज़ैरीना ने मंत्रि-मंडल के उन लोगों को निकालना शुरू किया जिनमें वह विश्वास नहीं करती थी। जिन लोगों ने राजा को प्रधान सेनापति का पद ग्रहण करने की राय नहीं दी थी और जो रास्पुटिन का विरोध करते थे, उनको राजदरबार से निकाल दिया गया। अब रास्पुटिन ने अपनी इच्छा के अनुसार लोगों को उनके स्थान पर रक्खा। ड्यूमा के नेताओं पर अविश्वास प्रकट किया गया। ज़ैरीना

राजनीतिक समस्याओं पर ज़ार को अपना आदेश भेजने लगी। रास्पुटिन केवल राज्यप्रबन्ध में ही नहीं, वरन् युद्ध की नीति में भी अपनी राय देने लगा और रानी उसकी बात को पूर्ण रूप से मानने लगी।

इसी समय रूस की सेना युद्ध में बुरी तरह पराजित हुई। पंद्रह लाख सिपाहियों में साढ़े पाँच लाख मारे गये। कुछ घायल हुए और बन्दी कर लिये गये। ज़ार ने और लोगों को युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने के लिए बुलाया। सिपाहियों की दुर्दशा थी। उनके पास हथियार नहीं थे और न उनके खाने-पीने का ही अच्छा प्रबन्ध था। बेचारे युद्ध की धधकती हुई आग में योंही झोंक दिये गये।

समस्त रूस में अशान्ति फैल गई। साधारण जनता तथा राज्यकर्मचारी ज़ार की नीति को आलोचना करने लगे। लोगों के हृदयों में ज़ार को हटाने की प्रबल इच्छा जाग्रत हो उठी।

मज़दूर लोग पहले से ही ज़ारशाही से घृणा करते थे। लेनिन और उसके साथियों ने प्रारम्भ से ही युद्ध में भाग लेने की नीति का विरोध किया। उन्होंने कहा कि यह युद्ध पूँजीपतियों का युद्ध है जिसमें भाग लेने से मज़दूरों को आज़ादी नहीं मिल सकती। युद्ध के शुरू होते ही लगभग एक लाख मज़दूरों ने हड़ताल कर दी; और जैसे जैसे युद्ध तेज़ी पकड़ता गया, हड़तालों की संख्या भी बढ़ती गई। फ़रवरी सन् १९१७ ई० तक रूस के समस्त मज़दूर मज़बूती के साथ ज़ार के विरुद्ध हो गये।

अब किसान, मध्यमवर्ग, रईस और शाही परिवार के ड्यूक भी मिलकर ज़ार पर दोष लगाने लगे और कहने लगे, "दरबार के षड्यन्त्रियों को मार डालो। ड्यूमा को बुलाओ और पार्लियामेंट का शासन स्थापित करो।"

अनेक प्रकार की ख़बरें उड़ने लगीं। रानी को रास्पुटिन के

साथ बदनाम किया गया। जनता को यह भी विश्वास हो गया कि रानी के नेतृत्व में एक पार्टी काम कर रही थी जो जर्मनी से सहानुभूति रखती थी। रास्पुटिन पर सबसे अधिक दोष लगाया गया।

दिसम्बर, सन् १९१६ ई० में एक बहुत बड़ी भीड़ सड़कों पर इकट्ठी हो गई। उसने रास्पुटिन का बध कर डाला। जनता को कुछ शान्ति मिली, और इस वध को राष्ट्र के लिए बहुत हितकर माना गया।

भीड़ ने एक नई सरकार स्थापित करने की योजना की। ज़ार कुछ शान्ति प्राप्त करने के लिए सेना के निवासस्थान में चला गया। ज़ैरीना भी उसके पीछे पीछे गई। उसने ज़ार को उत्साह दिलाया, "मज़बूत रहो। पीटर दी ग्रेट, इवान दी टैरीबल, सम्राट् पॉल की भाँति बनो! अपने पैरों के नीचे सबको कुचल डालो!"

सेन्टपीटर्सबर्ग में भीड़ ने सड़कों पर नारे लगाने शुरू किये। जब सैनिक जत्थे उसके सामने आये, तब लोग मोटरों पर चढ़ गये। ज़ार ने कौसक्स को आन्दोलन दबाने के लिए भेजा, परन्तु उन्होंने गोली नहीं चलाई। निकोलस ने जनरल खावाबालोव को क्रांति को कुचलने की आज्ञा दी, परन्तु उसने उत्तर दिया कि सेना क्रांतिकारियों से मिल गई है।

दो मार्च को ज़ार ने अपने पुत्र के पक्ष में त्याग-पत्र दे दिया। तीन मार्च, सन् १९१७ ई० को बन्दीगृह में जाते समय रेल में उसने अपनी डायरी में लिखा, "मुझे लम्बी और गहरी नींद आई।... जागकर मैंने जूलियस सीज़र के सम्बन्ध में पढ़ा।"

अब नई सरकार का नेता—केरेन्सकी हो गया। उसने अपने प्रसिद्ध वक्तव्य में कहा, "मैं रूस को योरप का सबसे अधिक स्वतन्त्र राष्ट्र बनाना चाहता हूँ।"

कुछ दिनों बाद नई सरकार ने घोषणा निकाली जिसके द्वारा समस्त राजनीतिक निर्वासितों को स्वतंत्र कर दिया गया।

स्टेलिन साइबेरिया से चल पड़ा। उसने रूस में आकर देखा कि रूसी पूँजीवाद और ज़ारशाही पतन के गर्त में चले गये थे। परन्तु अभी क्रान्ति के पथ में अनेक कठिनाइयाँ थीं। असली क्रान्तिकारियों में से किसी ने भी इस अवसर पर भाग नहीं लिया था, और स्टेलिन तथा उसके साथियों का विश्वास था कि यह क्रान्ति असली क्रान्ति नहीं थी।

वास्तव में सच्ची अवस्था का पता लगाने के लिए बहुत ही गहरी दृष्टि की आवश्यकता थी। ज़ार अभी तक जीवित था। ड्यूमा शक्तिशाली हो रही थी। केरेन्सकी नेता बन रहा था। स्टेलिन ऐसी अवस्था में रूस के भविष्य के सम्बन्ध में कोई निश्चय नहीं कर सका। प्रजातंत्रवादी सरकार में बोल्शेविक प्रतिनिधियों की हँसी उड़ाई जाने लगी। जब उनका कोई सदस्य ड्यूमा में बोलने के लिए खड़ा होता तो लोग पैर घिसते, शोर मचाते और उस पर हँसते थे।

स्टेलिन प्रेव्डा का सम्पादन करने लगा। साथ ही साथ पार्टी का मैनेजर भी हो गया। प्रेव्डा के लेखों में वह सरकार की कड़े शब्दों में आलोचना करने लगा। पार्टी की कौंसिलों में वह अधिक वादविवाद नहीं करता था और बैठा-बैठा चुपचाप सिगरेट पीता रहता था।

इस समय स्टेलिन ने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया। उसकी पार्टी किसी प्रकार का ठीक निश्चय नहीं कर सकी थी। ऐसे अवसर पर यदि यह स्वतंत्रतापूर्वक बोलता रहता, तो शायद आगे चलकर उसको भी अनेक कठिनाइयों का उसी प्रकार सामना करना पड़ता जिस प्रकार अन्य लोगों को करना पड़ा।

असफल क्रांति

फ़िनलैंड के रेलवे स्टेशन पर बड़ी चहल-पहल है। लाल वर्दी पहने हुए सोवियट सिपाहियों की भीड़ से स्टेशन भर गया है। सेन्ट पीटर्सबर्ग के क़िले से मोटरें लगातार स्टेशन के लिए रवाना हो रही हैं। लोगों के चेहरों पर ख़ुशी और विस्मय के चिह्न दिखाई पड़ रहे हैं। दो सिपाही परस्पर बात-चीत कर रहे हैं :—

पहला सिपाही, "क्या जर्मनी से गाड़ी आ रही है ?"

दूसरा सिपाही, "हाँ ! जर्मनी से। और एक अजीब बात यह है कि गाड़ी बन्द है।"

पहला सिपाही, "जी ! क्या कहा ? गाड़ी बन्द है ?"

दूसरा सिपाही, "जी हाँ ! चारों ओर से बन्द है, बन्द ! समझे ?"

इतने ही में धड़धड़ करती हुई गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर आकर खड़ी हो जाती है। लोग तेज़ी के साथ गाड़ी की ओर दौड़ते हैं। एक छोटी-सी खिड़की से एक मामूली क़द का आदमी कूदकर प्लेटफ़ार्म पर खड़ा हो जाता है। लोग उसका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ते हैं। भीड़ ज़ोर से नारे लगाती है, "लेनिन की जय ! लेनिन की जय !"

सन् १९०५ ई० की क्रांति की असफलता के बाद लेनिन स्विटज़रलैंड चला गया था। वहाँ पर रहकर उसने एक पत्र का सम्पादन किया और अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाई। जब उसको पता चला कि ज़ार ने पद-त्याग कर दिया, तब उसने

समझा कि उसको रूस चलना चाहिए। परन्तु प्रश्न यह था कि वह रूस किस प्रकार पहुँचे।

रूस की पश्चिमी सीमा पर जर्मन, आस्ट्रियन, हंगेरियन, तुर्की और बलगेरियन सेनायें पड़ी हुई थीं। यदि लेनिन और उसके साथी उस ओर से जाने का प्रयत्न करते तो उनको जर्मनी से आज्ञा लेनी पड़ती। रूस को जाने की दूसरी सड़क अँगरेज़ों और फ़्रांसीसियों के अधिकार में थी।

लेनिन ने चुपचाप इस बात को मालूम करने की कोशिश की कि अँगरेज़ तथा फ़्रांसीसी उसे जाने की आज्ञा दे सकते थे या नहीं। उसे पता चला कि वे लोग रूस में केरेन्सकी की सरकार के कार्य से प्रसन्न थे, क्योंकि सरकार ने वचन दिया था कि वह इँग्लैंड तथा फ़्रांस के पक्ष में युद्ध जारी रक्खेगी। इसलिए उधर से जाने की कोई आशा नहीं रही।

अब उसने जर्मनी से बातचीत करनी शुरू की। जर्मनी की सरकार केरेन्सकी की नीति के विरुद्ध थी, क्योंकि वह जर्मनी के विरुद्ध युद्ध जारी रखना चाहता था। इसलिए उसने लेनिन को अपने साथियों के साथ जर्मनी से होकर रूस जाने की आज्ञा दे दी। एक समझौता लिखा गया जिसके अनुसार लेनिन अपने साथियों के साथ स्वतंत्रतापूर्वक बंद गाड़ी में जा सकता था ताकि और कोई व्यक्ति उस गाड़ी में न बैठ सके।

स्वागत-समिति के अध्यक्ष चेज़ ने लेनिन के आने पर कहा, "कॉमरेड लेनिन! सोवियट तथा क्रांति के नाम पर हम लोग रूस में आपका स्वागत करते हैं। अब लोकतंत्रवाद का प्रधान कार्य यह है कि हमारी क्रांति की बाहरी तथा भीतरी शत्रुओं से रक्षा की जाय।"

लेनिन ने ऊपर की ओर देखा। जब चेज़ ने अपना वक्तव्य समाप्त किया तब नवागन्तुक ने तेज़ी के साथ कुछ शब्द कहे

और वह स्टेलिन के साथ आगे बढ़ा। लेनिन को एक कॉर की छत पर बैठाया गया। वहाँ से वह चिल्लाया, "यह पूँजीवादी लड़ाई योरप में गृह-युद्ध का प्रारम्भ है। युद्ध करनेवाली सरकार का नाश हो। सांसारिक क्रांति की प्रातःकालीन झलक दिखाई दे रही है।"

दूसरे दिन प्रेव्डा के सम्पादकीय में एक नोट छपा, "युद्ध को जारी रखकर केरेन्सकी ने रूसी मज़दूरों और किसानों को मौत के घाट पहुँचाना चाहा।...हम आपको एक क्रान्ति के लिए बुला रहे हैं, क्योंकि अभी तक हमारी क्रान्ति नहीं हुई है। हमारे शत्रु देश की सीमा के बाहर नहीं हैं, वरन् देश में ही हैं। यदि युद्ध की कुछ भी आवश्यकता है, तो हमको भीतरी शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध लड़ना चाहिए।"

लेनिन ने कहा, "हमको प्रजातंत्र शासन की आवश्यकता नहीं है। हमको मध्यम-वर्ग का लोकतंत्र शासन नहीं चाहिए। हमको मज़दूरों और किसानों की सोवियट के अतिरिक्त और किसी सरकार की ज़रूरत नहीं है।" अब सोवियट सरकार की स्थापना की गई, और दो सरकारें काम करने लगीं।

स्टेलिन इस समय शान्त था। थोड़े ही दिनों में उसने लेनिन के समस्त कार्य-क्रम को स्वीकार कर लिया। वह उन सात लोगों की कमेटी में नियुक्त किया गया जिनका काम यह था कि वे जनता की शत-प्रतिशत क्रान्ति का प्रयत्न करें। वह अपने कार्य में संलग्न हो गया।

स्टेलिन के सुपुर्द तीन काम किये गये। पहला तो यह कि वह सरकार और ड्यूमा की शक्ति क्षीण करे, दूसरा यह कि वह सोवियट में बोल्शेविक लोगों का बहुमत स्थापित करे; और तीसरा यह कि वह सशस्त्र विद्रोह की तैयारी करे। प्रैव्डा के लेखों में स्टेलिन केरेन्सकी की सरकार का घोर शब्दों में विरोध करने लगा।

इसी बीच में एक दूसरा क्रान्तिकारी जो शक्ति तथा प्रसिद्धि में लेनिन से कुछ ही कम था फ़िनलैंड के रेलवे स्टेशन पर आ गया था। यह था लेवन ट्रॉट्स्की। सन् १६०५ ई० के विद्रोह में ट्रॉट्स्की ने प्रधान भाग लिया था। अब वह तेज़ी के साथ संघर्ष में कूद पड़ा।

'मॉडर्न सरकस' में प्रत्येक रात्रि को ट्रॉट्स्की मज़दूरों, सिपाहियों और मल्लाहों की बड़ी-बड़ी भीड़ों को व्याख्यान देने लगा। उसके भाषण इतने क्रान्तिकारी और जोशीले होते, कि लोगों को बैठने के लिए जगह नहीं मिलती; वे जगह के लिए एक-दूसरे से लड़ते; बच्चे मा-बाप के कंधों पर बैठकर बड़े ध्यानपूर्वक उसको सुनते, और बीच-बीच में लोग तालियाँ पीटते थे।

इस समय स्टेलिन का लोगों पर विशेष प्रभाव नहीं था। न तो वह ट्रॉट्स्की की भाँति अच्छा वक्ता ही था और न उसका व्यक्तित्व ही बहुत शानदार था। वह एक ख़ाकी कुरता पहनता था जिसके बटन ग़ायब थे। उसके काले बाल खुले हुए और उसकी मोटी मूँछें झुकी हुई रहती थीं। उसका चेहरा भारी था, और वह बुद्धू-सा लगता था। परन्तु उसमें संगठन करने की बड़ी शक्ति थी। उसने ज़ारिट्सीन की रक्षा करने में इस शक्ति का विशेष परिचय दिया। यही कारण है कि यह नगर आजकल स्टेलिनग्रेड कहलाता है।

ज़ारिट्सीन पर ह्वाइट्स ने आक्रमण कर दिया था। वॉरोशिलोफ १५,००० सशस्त्र मज़दूरों और किसानों को लेकर नगर की ओर बढ़ा। उससे पहले स्टेलिन लगभग सौ सैनिकों को लेकर नगर में पहुँचा। वहाँ पर उसने देखा कि जनता बोल्शेविकों के विरुद्ध थी। लोगों का जीवन ज़ार के समय का-सा था। चाय और क़हवा की दूकानें खुली हुई थीं। बाग़ों में गाना-बजाना होता था और नाच तथा ऐयाशी भी जारी थी।

स्टेलिन ने शीघ्र ही सम्पूर्ण नगर की दशा बदल दी। क़हवा की दूकानें बन्द हो गईं; नाच और गाना समाप्त हुआ; और जनता ने सड़कों पर शोर-गुल मचाना बन्द कर दिया। उसने संगठन को मज़बूत किया, और अपने समस्त कार्यों की सूचना लेनिन को दी। इसी समय वॉरोशिलोफ सेना लेकर शहर में आ गया। अब स्टेलिन और वॉरोशिलोफ मिलकर काम करने लगे। स्टेलिन ने ट्रॉट्स्की के नियुक्त किये हुए उन सब सैनिकों को बन्दी कर लिया जिन्होंने शहर की रक्षा भली-भाँति नहीं की। ट्रॉट्स्की ने तार दिया, "इन लोगों को शीघ्र छोड़ दो।" स्टेलिन ने उत्तर दिया, "इस पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है।"

ट्रॉट्स्की, जो इस समय मास्को में था, स्टेलिन के इस कार्य से अप्रसन्न हो गया। वह लेनिन के पास गया और उससे कहा कि वह स्टेलिन को ज़ारिट्सीन से बुला ले। लेनिन इस संकट के समय में ट्रॉट्स्की को नहीं छोड़ना चाहता था, इसलिए उसने स्टेलिन को बुला लिया। लौटते समय स्टेलिन ट्रॉट्स्की से मिला जो युद्ध का नेता था। ट्रॉट्स्की ने उसको एक व्याख्यान दिया जिसको उसने ऊपरी तौर से बड़े ध्यानपूर्वक सुना। इससे स्टेलिन को यह आशा थी कि ट्रॉट्स्की सेना में रक्खे हुए उसके नौजवानों को नहीं निकालेगा। परन्तु ट्रॉट्स्की ने कहा, "तुम्हारे नियुक्त किये हुए नौजवान क्रान्ति का नाश कर रहे हैं। मैं ज़ारिट्सीन को सोवियट प्रजातन्त्र के अन्तर्गत लाने जा रहा हूँ।"

स्टेलिन हँसा। यह उसके लिए बहस करने का अवसर नहीं था। उसने सोचा कि एक समय आयेगा जब वह इसका उत्तर देगा। वह शीघ्र ही लेनिन के पास गया।

इस समय लेनिन की दशा अच्छी नहीं थी। फ़्रांस और इँग्लैंड केरेन्सकी की सहायता कर रहे थे, क्योंकि वे रूस में भी

लोकतंत्र शासन स्थापित करना चाहते थे। युद्ध को बन्द कर देने के पक्ष में होने के कारण बोल्शेविकों को 'जर्मनी के जासूस' कहकर बदनाम किया जा रहा था। केरेन्सकी की सरकार ने कहा कि इसी लिए लेनिन को जर्मनी से बन्द गाड़ी में भेजा गया था। मई में बहुत से मज़दूरों तथा सिपाहियों ने केरेन्सकी की सरकार का शासन स्वीकार कर लिया।

जून में जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की तैयारी की गई। इँग्लैंड तथा फ़्रांन्स के आदेश से केरेन्सकी की सरकार रूस में युद्ध के लिए जोश पैदा करने लगी। १६ तारीख़ को जर्मनों ने आक्रमण किया, और रूसी सेना को पीछे हटना पड़ा। सिपाही अपने-अपने स्थानों को छोड़कर भाग खड़े हुए। उन्होंने अफ़सरों को मार डाला।

जुलाई में पैट्रोग्रेड की सड़कें एक बहुत बड़ी भीड़ से भर गईं। सिपाहियों के जत्थे के जत्थे, जिनको यह डर था कि युद्ध में उनको मौत के घाट उतरना पड़ेगा, मज़दूरों से मिल गये और शान्ति के पक्ष में हो गये। उन कारख़ानों में जिनमें युद्ध का सामान बनता था हड़ताल कर दी गई। सरकार के उदार सदस्य अपना स्थान छोड़कर चले गये। परन्तु भीड़ केरेन्सकी के शासन का अन्त करना चाहती थी। राजधानी में मशीनगनों की कम्पनियाँ विद्रोह करने के लिए तैयार थीं। औद्योगिक स्थानों पर सशस्त्र मज़दूरों के जत्थे विद्रोह में शामिल हो गये थे। रेलवे में बोल्शेविक सिपाही सरकारी सेना से भरी हुई गाड़ियों में आग लगाने का उपाय कर रहे थे। फिर भी नेताओं को अपनी जीत का निश्चय नहीं था। वे विद्रोह के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं थे। भीड़ में हलचल मच गई। लोगों ने कहा, "हम विद्रोह कर रहे हैं। चाहे तुम हमारा साथ दो या न दो।" नेताओं ने विद्रोह में भाग लिया।

अकस्मात् सरकारी सैनिक जत्थे युद्ध से लौटकर आ गये। उन्होंने भीड़ पर गोली चलाई। लोग भागने लगे। बोल्शेविक पार्टी को दबा दिया गया। केरेन्सकी की सरकार ने घोषणा की कि विद्रोह समाप्त कर दिया गया।

ट्राट्स्की क्रैस्टी के जेल में क़ैद कर लिया गया। लेनिन फ़िनलैंड को भाग गया। गोधूली के समय स्टेलिन भी चुपचाप शहर से बाहर निकला और सफल क्रान्ति की योजना करने लगा।

'विन्टर पैलेस' का पतन

विद्रोह की आग धधककर कुछ समय के लिए बुझ गई। बची-खुची चिनगारियाँ जहाँ-तहाँ उड़कर पहुँच गईं और एक प्रचंड ज्वाला के लिए तैयारी करने लगीं। केरेन्सकी की सरकार के तीन चुभते हुए काँटे—लेनिन, स्टेलिन और ट्रॉट्स्की निकल चुके थे। परन्तु एक भीतरी काँटा उसको दिन-रात बेचैन कर रहा था। यह काँटा था प्रधान सेनापति कोर्नीलोव। केरेन्सकी और कोर्नीलोव एक-दूसरे को हृदय से घृणा करते थे और प्रत्येक शासन की बागडोर अपने हाथ में लेना चाहते थे। कोर्नीलोव ने अपने सिपाहियों का भलीभाँति संगठन कर लिया ताकि अवसर पाते ही वे देश पर अपना अधिकार स्थापित कर लें। यह बात स्पष्ट हो गई कि वह सरकार का अन्त करना चाहता था।

बोल्शेविक चुपचाप इस परिस्थिति से लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे थे। कॉमरेड स्टेलिन अपने काम में संलग्न था। वह 'रेड गार्ड' नामक सशस्त्र मज़दूर सिपाहियों के संरक्षण में प्रैव्डा के दफ़्तर से नित्य प्रति क्रांतिकारी पर्चे छाप छापकर निकालने लगा। ये पर्चे बहुत ही ज़ोरदार भाषा में लिखे जाते थे और जनता की पसन्द के अनुकूल होते थे। स्टेलिन ने मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा "रोटी! शान्ति! भूमि!" निराश बोल्शेविकों ने फिर अपना सिर उठाया। कुचले हुए मज़दूर और सिपाहियों के हृदय में फिर जोश पैदा हुआ। दबी हुई जनता में फिर जान पड़ गई।

सरकार ने प्रैव्डा को बन्द कर दिया। कुछ ही दिनों में स्टेलिन ने 'मज़दूर और सिपाही' नामक दूसरा पत्र निकाला। बड़े मोटे और साफ़ अक्षरों में लिखा था "रोटी! शान्ति! भूमि!" सरकार ने इस पत्र को भी बन्द कर दिया, और स्टेलिन

को किसी प्रकार का पत्र निकालने की आज्ञा नहीं दी गई। उसने पूछा, "क्या मैं एक विज्ञापन छाप सकता हूँ?" पुलिस को इसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का आदेश नहीं मिला था, इसलिए उसने स्वीकृति दे दी। अब स्टेलिन ने एक विज्ञापन लिखा,

"रोटी! शान्ति! भूमि!"

सेनापति कोर्नीलोव ने अपना शासन स्थापित करने का निश्चय कर लिया। उसकी सेना पैट्रोग्रेड की ओर बढ़ने लगी। सरकार ने घोषणा कर दी, "प्रधान सेनापति को पद-च्युत किया गया।" केरेन्सकी ने तार दिया, "पेट्रोग्रेड की ओर बढ़ते हुए सैनिक जत्थों को रोक दिया जाय।"

कोर्नीलोव ने कहा, "इस आज्ञापत्र को फाड़ डालो और पैट्रोग्रेड की ओर बढ़ो।"

युद्ध-सचिव ने लिखा, "सेनापति कोर्नीलोव ने शत्रुओं के सामने से मुँह मोड़ लिया। इसलिए वह दोषी ठहराया जाता है।"

प्रधान सेनापति ने उत्तर दिया, "सरकार ने जर्मनों के साथ विश्वासघात करके अपनी प्रतिष्ठा का नाश किया। इसलिए उसको हटाया जाता है।"

निराश होकर केरेन्सकी ने बोल्शेविकों से सहायता माँगी। स्टेलिन चुपचाप लेनिन के पास गया। लेनिन ने स्वीकृति दे दी। ट्रॉट्स्की छोड़ दिया गया; और लोग भी मुक्त कर दिये गये। मल्लाहों की भीड़ स्टेलिन के पास लग गई। उन्होंने कहा, "हम बोल्शेविक पार्टी के समर्थक हैं, केरेन्सकी के नहीं।" स्टेलिन ने कहा, "इस समय केरेन्सकी के लिए लड़ो।"

मल्लाह युद्ध के लिए तैयार हुए। कारखानों के मज़दूरों ने बन्दूकें, चाक़ू, पिस्तौलें आदि हथियार ले लिये। उनके जत्थे युद्ध के लिए चल दिये। कोर्नीलोव के आते ही लड़ाई शुरू हो गई।

परन्तु उसकी सेना युद्ध-क्षेत्र को छोड़कर भाग खड़ी हुई। बोल्शेविकों ने अपने शत्रुओं से खूब बदला लिया। अनेक शत्रु क़त्ल कर दिये गये, और कोर्नीलोव परास्त हुआ।

बोल्शेविक पार्टी पर लगाये गये समस्त बन्धन तोड़ दिये गये। ट्रॉट्स्की और ज़िनोवीव फिर भाषण देने लगे। स्टेलिन का प्रेस स्वतन्त्रतापूर्वक पत्र छापने लगा। इस समय पार्टी का मतभेद मिट गया, और सब लोग मिलकर शासन की बागडोर अपने हाथों में लेने के लिए प्रयत्न करने लगे। एक सैनिक क्रान्तिकारी कमेटी बनाई गई जिसका काम लोगों में क्रान्ति के लिए जोश पैदा करना था।

× × ×

समय तेज़ी से दौड़ता चला जा रहा है। इतिहास पल-पल बदलता जा रहा है। रूस एक महान् क्रान्ति के लिए तैयारी कर रहा है—ऐसी क्रान्ति जैसी विश्व के इतिहास में शायद ही कभी सुनी गई हो।

स्मोल्नी इन्स्टीट्यूट जहाँ पर ज़ारशाही के दिनों में नवयुवतियाँ नाच-गान किया करती थीं, क्रांति का केन्द्र बन रहा है। बोल्शेविकों ने उसको अपने अधिकार में कर लिया है। उसके फ़र्श पर सैनिक, मल्लाह और मज़दूर अपनी मशीनगनों में चुपचाप तेल लगा रहे हैं। प्रत्येक क्षण सन्देशवाहक तेज़ी के साथ हाँफते हुए चले आ रहे हैं। तार की घंटी लगातार बज रही है।—तारीख़ है ६ नवम्बर, सन् १९१७ ई०।

थोड़ी देर में एक स्त्री प्रैव्डा से लगातार दौड़ती हुई आती है और कहती है कि सरकार ने प्रैव्डा के दफ़्तर में ताले डाल दिये। सैनिकों का एक जत्था शीघ्र ही ताले तोड़ने के लिए भेजा जाता है। सम्पादक स्टेलिन फिर अपने पत्र को बेच रहा है।

दिन भर आज्ञा-पत्र आते हैं, वाद-विवाद चलता है और

मनसूबे बँधते हैं। रात में सिपाही और मल्लाहों के जत्थे जहाँ-तहाँ आग लगा देते हैं। वे नेताओं से लगातार पूछ रहे हैं, "हम कब आक्रमण करें।"

प्रातःकाल, नवम्बर ७। सशस्त्र सैनिकों के जत्थे आगे बढ़ रहे हैं। कुछ खटखट होती है, शोर मचता है, परन्तु एक भी गोली नहीं चलती। तड़के से पहले ही शहर पर अधिकार कर लिया जाता है। क़िले के सिपाही हथियार डाल देते हैं।

स्मोल्नी में सुनसान छाया हुआ है। दीपक धीरे-धीरे टिमटिमा रहे हैं। लेनिन रास्ते में चला आ रहा है। ट्रॉट्स्की रात भर काम करते करते कुछ थक गया है। स्टेलिन का जोश उबल रहा है, और वह प्रैव्डा की पहली प्रति देख रहा है।

दोपहर को क्रांतिकारी जत्थे 'विन्टर पैलेस' पर आक्रमण करने के लिए तैयार होते हैं।

केरेन्सकी का 'विन्टर पैलेस' में पता नहीं है। सुबह से पहले उसने तार-द्वारा अपने सेनापतियों को बुलाया। बोल्शेविकों ने डाकख़ाने पर अधिकार कर लिया है। वे रास्ते में सेनापतियों को गिरफ़्तार कर लेते हैं। सात बजे तक प्रधान मंत्री का तार काट दिया जाता है।

केरेन्सकी कार में बैठकर सैनिकों के स्थान को रवाना हो जाता है। उसे आशा है कि सैनिक जत्थे उसकी सहायता करेंगे। वह नहीं जानता कि वह पैट्रोग्रेड से सदैव के लिए रवाना हो रहा है।

रात होते ही विन्टर पैलेस के दीपक बुझ जाते हैं। गोली चल रही है। एक भयंकर ज्वाला लहराती है, और फिर अँधेरा छा जाता है। पैलेस के चारों ओर सड़कों पर एक बहुत बड़ी सरकारी सेना पड़ाव डाले है। सिपाही आपस में बहस कर रहे हैं और सिगरेट पी रहे हैं। शराब का दौर चल रहा है।

वे अभी तक किसी प्रकार का निश्चय नहीं कर सके हैं। अग्नि के प्रकाश में चमकता हुआ स्टेलिन का जोशीला शरीर कभी-कभी दिखाई पड़ जाता है। कुछ लोग उसकी विजय के नारे लगा रहे हैं, और कुछ उसको बुरा-भला कह रहे हैं।

आधी रात को पैलेस में प्रवेश हो रहा है। सिपाही और मल्लाह दरवाज़ों को तोड़कर भीतर घुस रहे हैं। अब गोली बन्द होती है, परन्तु अनेक सरकारी सिपाही भीड़ से कुचल जाते हैं।

महल के भीतर अफ़सर बन्दूकें लिये हुए खड़े हैं। उनके पीछे बन्द दरवाज़े में रूस की सरकार अब भी परिस्थिति के सम्बन्ध में विचार कर रही है। उसके नेता का पता नहीं है। प्रधान सेनापति दरवाज़े पर खड़ा होकर पूछ रहा है, "क्या हम अन्त समय तक मुक़ाबिला करेंगे।" तेज़ी के साथ उत्तर मिलता है, "नहीं, नहीं। अब ख़ून बहाना उचित नहीं है। आख़िर, महल पर तो अधिकार हो ही गया है। हम आधिपत्य स्वीकार करते हैं।" पहरेदार एक ओर हट जाते हैं। भीड़ मंत्रियों को गिरफ़्तार करके जेल में भेज देती है। सुबह के दो बजकर दस मिनट हुए हैं। तारीख़ है ८ नवम्बर।

एक मामूली क़द का आदमी प्लेटफ़ार्म पर आकर खड़ा हो जाता है। उसके कपड़ों पर सैकड़ों धब्बे पड़े हैं। बहुत दिनों से उसने अपने कपड़े नहीं बदले हैं। यह है क्रांति का नेता लेनिन। मेज़ पर घूँसे की आवाज़ करते हुए लेनिन कह रहा है, "साथियो! क्रांति सफल हो चुकी है। पुरानी सरकार पलट दी गई। रूस के इतिहास में एक नवीन युग प्रारम्भ होता है।" उसके दोनों ओर दो व्यक्ति खड़े हैं; स्टेलिन और ट्रॉट्स्की।

तीनों आदमी, रूस की प्राचीन प्रथा के अनुसार, आनन्द में मग्न होकर एक दूसरे को चूमते और गले मिलते हैं।

स्टेलिन और ट्रॉट्स्की का संघर्ष

क्रान्ति में बोल्शेविकों की विजय हुई। अब सोवियट सरकार स्थापित की गई। नेता था लेनिन; सहायक थे स्टेलिन, ट्रॉट्स्की, ज़िनोवीव, कैमेनेव, रिकोव, बुखारिन, टोम्सकी, कैलीनिन और फैलिज़ ज़ेरिन्सकी। ट्रॉट्स्की क्रान्तिकारी सरकार का पहला परराष्ट्र-मन्त्री नियुक्त किया गया। स्टेलिन अल्पसंख्यक जातियों का मन्त्री बनाया गया। आगे चलकर ट्रॉट्स्की युद्ध-सचिव बन गया और स्टेलिन पार्टी का मन्त्री रहा। लेनिन का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था और उसके अन्तिम दिन समीप आ रहे थे। ऐसी अवस्था में स्टेलिन और ट्रॉट्स्की में भावी नेतृत्व के लिए संघर्ष होना स्वाभाविक था। इस संघर्ष के अन्य कारण भी थे।

ट्रॉट्स्की एक यहूदी पूँजीपति का पुत्र था। स्टेलिन जार्जिया के एक ग़रीब किसान का लड़का था। इसलिए दोनों के स्वभाव एक-दूसरे से पृथक् थे। ट्रॉट्स्की के दिमाग़ में अमीरी और अधिकार की बू भरी हुई थी। स्टेलिन सीधा-सादा जोशीला नौजवान था। ट्रॉट्स्की स्टेलिन से घृणा करता था। जब कभी कमेटी की मीटिंग होती और उसमें स्टेलिन बोलने के लिए खड़ा होता, तब ट्रॉट्स्की अख़बार को पढ़ता रहता और इस प्रकार स्टेलिन के प्रति अपनी आन्तरिक घृणा प्रकट करता था।

क्रान्ति के प्रारम्भ में भी दोनों में मतभेद था। यह मतभेद धीरे-धीरे बढ़ने लगा, और आगे चलकर भयंकर संघर्ष में परिवर्तित हो गया। दोनों के राजनीतिक विचार भी एक-दूसरे से भिन्न थे। दोनों सोवियट यूनियन के लिए भिन्न-भिन्न नीति

आवश्यक समझते थे। ट्रॉट्स्की अन्तर्राष्ट्रीयता में विश्वास करता था। उसका विचार था कि रूस की क्रान्ति में सफलता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि समस्त योरप में क्रान्ति उत्पन्न की जाय। स्टेलिन का विचार इसके विपरीत था। उसका कहना था कि पहले रूस में क्रान्ति को सफल बनाया जाय और उचित नीति-द्वारा रूस का संगठन किया जाय। इस प्रकार रूस के आदर्श को लेकर अन्य देश भी क्रान्ति कर सकेंगे। दोनों अपने-अपने मत पर मज़बूत थे और शक्ति प्राप्त करने के लिए परस्पर संघर्ष कर रहे थे।

सन् १९२३ ई० में लेनिन का स्वास्थ्य बहुत गिर गया। उसे लकवा मार गया। उसका दाहिना हाथ और बायाँ पैर बेकाम हो गया। उसने अन्त समय तक उसी वीरता के साथ मृत्यु का सामना किया जिस प्रकार वह अपने जीवन में शत्रुओं से लड़ता रहा।

रूस को पतन से बचाने के लिए अपनी मृत्यु से दो साल पहले लेनिन ने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के पास एक वसीयत लिखकर भेज दी थी। रूस के इतिहास में इस वसीयत का बहुत महत्त्व है। इसके अनुसार लेनिन ने स्टेलिन और ट्रॉट्स्की को अपना उत्तराधिकारी बनाया। इस प्रकार दो अन्य प्रसिद्ध क्रान्तिकारी—जिनोवीव और कैमेनेव—उत्तराधिकार से वंचित कर दिये गये। वसीयत में स्टेलिन और ट्रॉट्स्की के विषय में लिखा है, "इन दो आदमियों का सम्बन्ध पार्टी में आसानी से फूट पैदा कर सकता है।" इससे पता चलता है कि लेनिन कितना गम्भीर और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था।

लेनिन की मृत्यु के दूसरे दिन उसकी विधवा ने इस वसीयत को पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सुपुर्द कर दिया।

स्टेलिन इस समय केन्द्रीय कमेटी का मंत्री था। उसने पार्टी में उस वसीयत को ख़ूब ज़ोर से पढ़ा। जब वह ट्रॉट्स्की से सम्बन्ध रखनेवाले अवतरण पर पहुँचा, तब उसने इस वाक्य पर बहुत ज़ोर दिया—"यह केवल संयोग की बात नहीं है कि हमारी पार्टी में आने से पहले ट्रॉट्स्की मेन्शेविक था।"

ट्रॉट्स्की कुछ घबड़ाकर बीच में बोल उठा, "कृपया इस अवतरण को फिर से पढ़िए।" स्टेलिन ने उस वाक्य को दोबारा पढ़ा और प्रत्येक शब्द पर ख़ूब ज़ोर दिया। कोई भी नहीं बोला। यहाँ से दोनों में असली संघर्ष शुरू हो गया।

लेनिन की वसीयत में लिखा था कि स्टेलिन और ट्रॉट्स्की दोनों रूस का प्रबन्ध करें। ऊपरी तौर से यह बहुत अच्छा विचार था क्योंकि दोनों मिलकर रूस की बहुत उन्नति कर सकते थे। परन्तु दोनों की नीति एक-दूसरे से इतनी भिन्न थी कि सहयोग की कोई आशा नहीं थी। इसलिए संघर्ष ज़रूरी हो गया।

लेनिन की मृत्यु के समय ट्रॉट्स्की की अवस्था स्टेलिन से अधिक अच्छी थी। ट्रॉट्स्की चारों ओर प्रसिद्ध हो चुका था, और जनता पर उसका पूरा अधिकार था। रूस के गृह-युद्ध के तीन वर्षों में वह समस्त देश में भ्रमण कर चुका था। उसने 'लाल सेना' का संगठन किया था, और सिपाही उसकी आज्ञा का पालन करते थे।

यदि इस अवसर पर ट्रॉट्स्की में शीघ्रतापूर्वक आगे क़दम रखने की शक्ति होती और वह अपने अनुयायियों की सहायता से शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने का प्रयत्न करता, तो उसको सफलता प्राप्त करने में विशेष कठिनाई नहीं होती। परन्तु ट्रॉट्स्की मौक़े पर चूक गया। अपने 'आत्म-चरित्र' में वह लिखता है कि उस समय वह इतना बीमार था कि तार का उत्तर तक देने की सामर्थ्य उसमें नहीं थी।

दूसरी ओर स्टेलिन बड़ी सावधानी के साथ आगे बढ़ रहा था। एक एक करके वह केन्द्रीय कमेटी के समस्त सदस्यों से मिला, और उनको अपनी ओर मिला लिया। जब ट्रॉट्स्की स्वस्थ हुआ तब उसको मालूम हुआ कि पार्टी उसका साथ छोड़ चुकी थी।

स्टेलिन ने एक और चाल चली। वह भली-भाँति समझता था कि ट्रॉट्स्की का प्रभाव लेनिन से कुछ ही कम था। अब लेनिन की मृत्यु हो चुकी थी। इसलिए उसने सोचा कि यदि लेनिन की विशालता और महत्ता का पूर्णरूप से प्रदर्शन किया जाय, तो लोग ट्रॉट्स्की को उसके सामने बहुत छोटा समझने लगेंगे। लेनिन के मृत शरीर को चिरकाल तक सुरक्षित रखने का प्रबन्ध किया गया। लाल चौराहे पर उसके लिए एक बहुत बड़ी समाधि बनाई गई। ट्रॉट्स्की ने इसका विरोध किया। उसने कहा कि समाजवादी क्रांति में किसी भी मनुष्य को इतना ऊँचा स्थान नहीं देना चाहिए। परन्तु उसकी एक न चली। वास्तव में स्टेलिन चाहता था कि रूस की क्रान्ति में ट्रॉट्स्की का नाम लेनिन के साथ न रहे। यही नहीं, स्टेलिन ने लेनिन की किताबों को क्रांति की बाइबिल बना दिया, और इस प्रकार लेनिन को क्रांति का ईश्वर प्रसिद्ध कर दिया ताकि लोग ट्रॉट्स्की को भूल जायँ।

जनवरी में ट्रॉट्स्की को युद्ध-सचिव के पद से हटा दिया गया। मई तक उसको कोई पद नहीं दिया गया। बाद में वह 'कनसेशन बोर्ड' का प्रधान नियुक्त किया गया। अब ट्रॉट्स्की ने जनता को स्टेलिन के विरुद्ध संगठित करने का प्रयत्न किया। उसने सभायें कीं, पर्चे लिखे और अपनी एक पार्टी बनाई जिसमें हज़ारों आदमी शामिल हो गये।

केन्द्रीय कमेटी के मंत्री के रूप में स्टेलिन ने ट्रॉट्स्की की शक्ति का नाश करना चाहा। यह काम उतना ही कठिन था जितना कि

ज़ारशाही का विनाश, क्योंकि जनता पर ट्रॉट्स्की का बहुत प्रभाव था। उसने महसूस किया कि उसे एक ही व्यक्ति से नहीं वरन् एक संस्था से लड़ना था। यह संस्था थी ट्रॉट्स्की के अनुयायियों की।

स्टेलिन ने चौदहवीं कांग्रेस की। इस कांग्रेस में उसने ट्रॉट्स्की को पार्टी से नहीं निकाला। वह जानता था कि उस समय ट्रॉट्स्की को निकालना उसके लिए हानिकारक सिद्ध होगा। वह अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बड़ी सावधानी के साथ परास्त करना चाहता था।

अब ट्रॉट्स्की के अनुयायियों ने पार्टी में फूट डालनी शुरू की, और पार्टी के अन्तर्गत एक और पार्टी बनाने की योजना की। स्टेलिन ने इस अवसर पर बड़ी दृढ़ता से काम लिया। उसने कहा, "दो पार्टी नहीं हो सकतीं। केवल एक ही पार्टी रह सकती है। ट्रॉट्स्की और लेनिन के अनुयायी एक ही जगह पर नहीं रह सकते हैं।" उसने पार्टी के सदस्यों को उत्साह दिलाया और अपने विरोधियों को पूर्णरूप से दबा दिया। ट्रॉट्स्की लिखता है, "विरोधियों को पीछे हटने के लिए बाध्य होना पड़ा।"

ट्रॉट्स्की अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। इसी समय स्टेलिन ने चीन की क्रान्ति में हस्तक्षेप किया। ट्रॉट्स्की का मत था कि स्टेलिन ने चीन की क्रान्ति को ठीक तौर से नहीं समझा। स्टेलिन ने चिआङ्ग-काई-शेक से सन्धि कर ली थी। ट्रॉट्स्की ने इसका विरोध किया, क्योंकि इससे चीन की साधारण जनता को हानि पहुँचने की सम्भावना थी। विरोधी-दल फिर अपना सिर उठाने लगा।

आन्दोलन तेज़ी के साथ ज़ोर पकड़ने लगा। ट्रॉट्स्की के पक्ष में सड़कों पर प्रदर्शन किये जाने लगे। पहले-पहल लेनिनग्रेड में

अक्टूबर सन् १९२७ ई० में एक बड़ी भीड़ ने ट्रॉट्स्की की नीति का समर्थन किया। कुछ दिनों बाद बोल्शेविक क्रान्ति के दसवें जन्म-दिन को मनाते समय फिर एक प्रदर्शन किया गया। स्टेलिन ने इस समय बड़ी मज़बूती से काम लिया। भीड़ को शक्ति के द्वारा पीछे हटा दिया गया। ट्रॉट्स्की की मोटर पर गोली चलाई गई। एक मनुष्य कुल्हाड़ी लेकर कार पर चढ़ गया और उसने शीशों को तोड़ डाला। ट्रॉट्स्की को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका साथियों-सहित अन्त कर दिया जायगा। शायद इस समय उसका विचार ठीक था। यदि वह पार्टी को लेकर सामना करता तो उसकी बुरी तरह पराजय होती। नवम्बर में उसने अपने साथियों से कहा कि बड़ी सभायें संगठित करने की ज़रूरत नहीं है।

परन्तु स्टेलिन चुप बैठनेवाला आदमी नहीं था। उसने ट्रॉट्स्की को पार्टी से बाहर निकाल दिया। दिसम्बर में पार्टी की १५वीं कांग्रेस के अवसर पर उसने ट्रॉट्स्की के समस्त साथियों को पार्टी से बाहर निकलवा दिया, और उनको क्रांति का विद्रोही ठहराया।

ट्रॉट्स्की का रूसी मध्य एशिया के एक भाग को निर्वासन कर दिया गया। उसको आशा थी कि उसके साथी स्टेशन पर उसकी रक्षा कर सकेंगे, परन्तु सिपाहियों ने उसके जाने के समय का किसी को पता नहीं लगने दिया। वह मॉस्को से ३,००० मील की दूरी पर भेज दिया गया। यह जनवरी, सन् १९२८ ई० की घटना है।

ट्रॉट्स्की वर्ष भर अपने मित्रों से पत्र-व्यवहार करता रहा। अभी तक वह रूस के विरोधी-दल का नेता रहा, और अपने दल को उचित सलाह देता रहा। स्टेलिन ने उसके नाम से आने-जानेवाली समस्त डाक रोक दी। दिसम्बर में ट्रॉट्स्की के पास सूचना भेजी गई

कि वह विरोधी-दल से पत्र-व्यवहार करना बन्द कर दे, नहीं तो उसको राजनीतिक क्षेत्र से बिलकुल अलग करने का उपाय किया जायगा। ट्रॉट्स्की ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

एक महीने बाद कुछ सशस्त्र सिपाही ट्रॉट्स्की के मकान पर आये। वह रूस की सीमा से बाहर निकाल दिया गया। किसी ने भी उसको बचाने का प्रयत्न नहीं किया। १२ फ़रवरी, सन् १९२९ ई० को वह योरपीय तुर्की के लिए रवाना हो गया। एक बार फिर ट्रॉट्स्की ने कोशिश की कि वह इँग्लैंड, या फ्रांस या अमरीका पहुँच सके जहाँ से वह आन्दोलन को बढ़ा सके। परन्तु इन राष्ट्रों ने उसको भीतर घुसने से रोक दिया। वह नार्वे पहुँचा, परन्तु वहाँ से निकाल दिया गया। अब वह मैक्सिको चला गया। कुछ दिनों बाद उसके साथी उसको वृद्ध समझने लगे। स्टेलिन को ट्रॉट्स्की से व्यक्तिगत भय नहीं रहा, परन्तु उसका आन्दोलन अभी बन्द नहीं हुआ था, क्योंकि ट्रॉट्स्की ने चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संस्था संगठित की जिसका उद्देश्य था स्टेलिन को हटाकर ट्रॉट्स्की को शक्तिशाली बनाना।

अब स्टेलिन तथा ट्रॉट्स्की के संघर्ष का एक नया युग प्रारम्भ हुआ। इस युग में किरोव का वध विशेष महत्त्व रखता है। किरोव स्टेलिन का घनिष्ठ मित्र था और लेनिनग्रेड-पार्टी का प्रधान था। किरोव स्टेलिन का उत्तराधिकारी नामज़द किया जा चुका था। स्टेलिन की मृत्यु के पश्चात् शासन की बागडोर उसी को दी जाती परन्तु एक दिन अकस्मात् संसार में यह ख़बर फैल गई कि किरोव का वध कर दिया गया। किसी को भी इस बात में संदेह नहीं रहा कि ट्रॉट्स्की के अनुयायियों ने किरोव का वध किया। मॉस्को की सरकारी सूचना में भी उन्हीं पर दोषारोपण किया गया। स्टेलिन ने कहा, "ट्रॉट्स्की के साथियों ने

अपनी नीति बदल दी है। अब जनता के संगठन से उन्हें सन्तोष नहीं है। वे लोगों का वध कर रहे हैं।"

किरोव के वध से स्टेलिन के हृदय पर बहुत चोट पहुँची। उसने उसकी मृत्यु का बदला लेना शुरू किया। जिन लोगों पर ज़रा भी सन्देह हुआ कि उन्होंने किरोव के वध में भाग लिया, वे सब गिरफ़्तार कर लिये गये। इस प्रकार सैकड़ों आदमी जेल में डाल दिये गये। इसके बाद अपराधियों को प्राण-दंड देना प्रारम्भ हुआ।

एक रिपोर्ट में इन दंडों का विवरण इस प्रकार है, "स्टेलिन ने ट्रॉट्स्की को सन् १६२६ ई० में पार्टी से निकाला। सन् १६२६ में उसको निर्वासित कर दिया। कैमेनेव और ज़िनोवीव सन् १६२६ ई० में पार्टी से निकाल दिये गये, और अगस्त, सन् १६३६ ई० में उनको प्राण-दंड मिला। प्रैव्डा का प्रधान सम्पादक बुखारिन सन् १९२६ ई० में निकाल दिया गया, और सन् १९३८ ई० में उसको भी प्राण-दंड मिला। रिकोव भी, जो कैमेनेव का उत्तराधिकारी था, मरवा डाला गया। टोम्सकी, जो ट्रेड यूनियन की कौंसिल का प्रधान था, सन् १९३० ई० में पार्टी से अलग कर दिया गया। जब अगस्त, सन् १९३६ ई० में उसका वारंट निकला, तो उसने आत्म-हत्या कर ली। पुरानी पार्टी के सदस्यों में केवल स्टेलिन जीवित है। अन्य समस्त मौत के घाट उतर चुके हैं।"

लेनिन के साथियों में जैनूकिज़ को दिसम्बर, सन् १९३७ ई० में प्राण-दंड मिला। गैमरनिक ने ३१ मार्च, सन् १९३७ ई० में आत्म-हत्या कर ली क्योंकि उसकी गिरफ़्तारी का आज्ञापत्र निकल चुका था। ओसिन्सकी जेल में है। जाटाकोव को सन् १९३७ ई० में प्राण-दंड दिया गया। कैलीनिन और वोरोसिलोव अभी तक अपने पदों पर काम कर रहे हैं।

रैडक को सन् १९२८ ई० में साइबेरिया के लिए निर्वासित कर दिया गया और सन् १९३७ ई० में उसे जेल भेज दिया गया। राकोस्की सन् १९२९ ई० में साइबेरिया भेज दिया गया, और मार्च सन् १९३८ ई० से वह जेल में है। सेरेबजाकोव को फ़रवरी, सन् १९३७ ई० में प्राण-दंड दिया गया।

सन् १९३१ ई० में जब लेडी एस्टर ने स्टेलिन से मिलते हुए पूछा, "आप कब तक मनुष्यों को मारते चले जायँगे," तब उसने शीघ्र ही उत्तर दिया, "जब तक इसकी आवश्यकता रहेगी।"

समष्टिवाद का विकास

ट्रॉट्स्की के पतन के पश्चात् शासन की बागडोर पूर्णरूप से स्टेलिन के हाथ में आगई। अब वह रूस का डिक्टेटर बन गया। रूस की उन्नति के लिए उसे अनेक समस्याओं को हल करना था। किसानों की समस्या प्रमुख थी।

एक प्रकार से लेनिन ने किसानों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था। उसने किसानों को सर्वहारावर्ग (Proletariate) में शामिल नहीं किया था। यदि वह ऐसा करता तो रूस में सर्वहारावर्ग के शासन के अर्थ होते किसानों का शासन, क्योंकि रूस में किसानों की संख्या अन्य लोगों से कहीं अधिक है। लेनिन के विचार से किसानों को सर्वहारावर्ग की सहायता करनी चाहिए, उस पर अधिकार नहीं करना चाहिए। इसी दृष्टिकोण को लेकर लेनिन के समय में एक बड़ा प्रोपेगेन्डा किया गया।

किसानों की दशा ख़राब थी। वे अपना पेट भरने के लिए तो अन्न उत्पन्न कर लेते थे, परन्तु उनके जानवर भूखों मरते थे। इसलिए वे पशुओं को क़साइयों के यहाँ बेचने लगे और उससे अपनी भूख मिटाने लगे। समस्त किसान मॉस्को की नीति के विरुद्ध थे। यद्यपि किसान-युद्ध का कोई भय नहीं था, तथापि किसानों की आर्थिक दशा बहुत चिन्ताजनक थी। लगभग ३० प्रतिसैकड़ा भूमि बोना बन्द कर दिया गया।

किसानों और मज़दूरों की दशा में सुधार करने के लिए स्टेलिन ने पंचवर्षीय योजना निकाली। पहले-पहल रूस का औद्योगीकरण निश्चित हुआ। नये-नये उद्योगों को चलाने के लिए धन की ज़रूरत हुई। देशवालों से ऋण लिया गया। साथ ही

साथ मज़दूरों के लिए खाने का प्रबन्ध भी किया गया, क्योंकि भूखे मज़दूर उचित रूप से काम नहीं कर सकते थे।

ट्रैक्टर* के आधार पर कृषि-सम्बन्धी एक नया कार्य-क्रम बनाया गया। कैनेडा की भाँति रूस भी मशीन-द्वारा खेती के लिए उपयुक्त है। खेती के लिए बड़े-बड़े मैदान पड़े हुए हैं, जो बड़े पैमाने पर जोतने के लिए बहुत ठीक हैं। परन्तु प्रधान समस्या थी छोटे-छोटे किसानों की। किसानों के पास थोड़ी-थोड़ी भूमि थी जिस पर उनका आधिपत्य था। उनका विश्वास था कि ईश्वर ने भूमि किसानों के लिए बनाई है। स्टेलिन ने यह अधिकार उनसे ले लिया, यद्यपि जोतने के लिए भूमि उन्हीं के पास रही।

परन्तु ट्रैक्टर-द्वारा छोटे-छोटे खेतों को जोतने में कुछ लाभ नहीं था। ट्रैक्टर से लाभ तभी होता है जब लगभग दस मील तक एक ही ओर जोता जाय; और यदि बीस ट्रैक्टर एक ही दिशा में समानान्तर चलाये जायँ तो और भी अधिक लाभ होता है। जितनी ही अधिक दूर तक जितनी ही अधिक संख्या में ट्रैक्टर का प्रयोग किया जायगा, उतना ही अधिक लाभ होगा।

ऐसी दशा में ट्रैक्टर से पूरा पूरा लाभ उठाने के लिए यह आवश्यक था कि भूमि का राष्ट्रीकरण कर दिया जाय, या किसानों को एकत्र करके बड़े पैमाने पर खेती करवाई जाय। स्टेलिन ने भूमि का राष्ट्रीकरण करने का निश्चय किया। सम्भवत: यह निश्चय रूस की क्रान्ति का सबसे बड़ा निश्चय था और पंचवर्षीय योजना का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अंग था।

अब अमरीका तथा इँग्लैंड से बहुत बड़ी संख्या में ट्रैक्टर मँगवाये गये। विदेशी इंजीनियर और होशियार कारीगर रूस में बुलाये गये। ट्रैक्टर बनाने के लिए कारख़ाने खोले गये। दो साल

---

* खेत जोतने की एक विशेष प्रकार की मशीन।

में ही पंचवर्षीय योजना की कृषि-सम्बन्धी सफलता से सोता हुआ रूस जाग उठा।

स्टेलिन ने घोषणा की कि प्रथम पंचवर्षीय योजना ९३·७ प्रति-सैकड़ा सफल रही। वास्तव में उसका प्रयास बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। चार साल में औद्योगिक सम्पत्ति चौगुनी हो गई। फ़ौलाद की उपज ४० प्रति-सैकड़ा बढ़ गई और लोहा ८४ प्रति-सैकड़ा बढ़ गया। ट्रैक्टर, मोटर, हवाई जहाज़ आदि बनाने के उद्योग देश में तेज़ी से चल पड़े। बड़े-बड़े नये नगर बसाये गये जो कारख़ानों के केन्द्र हो गये। विदेशों से मशीनें मँगाई गईं ताकि भावी पंचवर्षीय योजनायें भी पूर्णरूप से सफल हो सकें। खानें खोदी गईं जिसका परिणाम यह हुआ कि इस समय सोने की खानों के दृष्टिकोण से रूस संसार का तीसरा महान् देश है। बेकारी समाप्त हो गई।

इस योजना के महत्त्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम भी हुए। रूस एक मज़बूत राष्ट्र हो गया। बहुत बड़ी लोहे और कोयले की खानें खोदी गईं और हथियार बनाये गये। इससे रूस की सैनिक शक्ति बहुत बढ़ गई। हवाई शक्ति में रूस संसार का एक बहुत बड़ा देश हो गया।

दूसरी पंचवर्षीय योजना और भी अधिक सफल हुई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य था रूस में कृषि-सम्बन्धी उन्नति करना। बड़े पैमाने पर राष्ट्र की ओर से खेती कराई गई। पैदावार पहले की अपेक्षा कई गुनी अधिक बढ़ गई। जंगल और बंजर भूमि खेती के योग्य बनाई गई। परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में रूस के किसानों की दशा बहुत अच्छी हो गई। बेकारी नष्ट हो गई और लोग सुखी तथा धनसम्पन्न हो गये। सैनिक संगठन भी किया गया। वायुयान बनाये गये, और रूस की हवाई शक्ति संसार के सब देशों से अधिक हो

गई। इस प्रकार कृषि तथा उद्योग दोनों में ही पंचवर्षीय योजना ने रूस की दशा बहुत अच्छी कर दी और रूस संसार में एक बहुत ही शक्तिशाली देश हो गया।

सोवियट अर्थशास्त्र का प्रमुख सिद्धान्त यह है कि उपज प्रयोग के लिए की जाय, लाभ के लिए नहीं। 'प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार काम करेगा और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार वेतन पायेगा।' समष्टिवादी पार्टी अपने को एक केन्द्रीय संगठन के रूप में मानती है जिसका कर्त्तव्य यह है कि प्रत्येक मनुष्य को राष्ट्र की ओर से काम दे और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करे। कोई व्यक्ति प्राइवेट लाभ नहीं उठा सकता है। समष्टिवादी पार्टी की नीति का आधार है राष्ट्र का हित। राष्ट्र के हित के सामने व्यक्ति-विशेष के हित की चिन्ता नहीं की जाती। राष्ट्र के कर्मचारी भी अपने परिश्रम के अनुसार साधारण वेतन पाते हैं। उनको अन्य लोगों की अपेक्षा कम वेतन मिलता है। सिद्धान्त यह है कि समस्त उपज जन-साधारण के हित में लगाई जाय, कोई व्यक्ति-विशेष उससे लाभ न उठा सके। राजनीतिक लोकतन्त्रवाद का नाम नहीं है, परन्तु आर्थिक समानता का पूरा ध्यान रक्खा जाता है।

इस सिद्धान्त को पूर्णतः क्रियात्मक बनाना बहुत कठिन है। यद्यपि रूस में क्रियात्मक रूप से बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो गई है, तथापि कुछ कठिनाइयाँ अभी शेष हैं। उदाहरण के लिए सोवियट-निवासी कुछ शर्तों पर मकानों पर अधिकार रख सकते हैं। क़स्बों में छोटे-छोटे मकान ख़रीदे जा सकते हैं और वे व्यक्तिगत सम्पत्ति हो जाते हैं। परन्तु एक व्यक्ति एक से अधिक मकान नहीं रख सकता। सोवियट का नागरिक पुस्तकालय रख सकता है। वह मोटर ख़रीद सकता है, नौकर रख सकता है और प्राइवेट कारोबार भी कर सकता है; परन्तु

ऐसी दशा में उस पर इतना कर लगा दिया जाता है कि वह किसी प्रकार का लाभ नहीं उठा सकता। एक डाक्टर या वकील यदि राष्ट्र का नौकर नहीं है तो वह प्राइवेट प्रैक्टिस भी कर सकता है।

सिद्धान्त की दृष्टि से वेतन की कोई संख्या निश्चित नहीं की गई है। प्राइवेट तौर से कोई व्यक्ति रुपया उधार नहीं दे सकता। परन्तु सेविङ्ग-बैंक में रुपया जमा करने का उसे अधिकार है। सन् १९३५ ई० में लगभग साढ़े चार करोड़ व्यक्तियों का रुपया बैंक में जमा था। बैंक से उनको आठ प्रति-सैकड़ा ब्याज मिलता है।

एक विशेष बात यह है कि रूस में एक बड़े आदमी और छोटे आदमी की आमदनी में विशेष अन्तर नहीं है। अन्य पूँजीवादी देशों में एक मिलपति तथा एक मज़दूर की आमदनी में आकाश-पाताल का अन्तर होता है। परन्तु रूस में ऐसा नहीं है, क्योंकि वहाँ पर सब सम्पत्ति का राष्ट्रीकरण हो गया है। यद्यपि कलात्मक और औद्योगिक योग्यता के अनुसार वेतन भी कम-ज्यादा होता है, परन्तु उसकी संख्या में विशेष अंतर नहीं होता। रूस की लगभग १७ करोड़ जन-संख्या में शायद ही दस मनुष्य ऐसे मिलेंगे जिनकी आमदनी ५,००० पौंड प्रति-वर्ष हो। इस सम्बन्ध में दो बातें विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

पहली तो यह कि सोवियट यूनियन में कोई भी व्यक्ति उपज के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार नहीं रख सकता। एक मनुष्य धन एकत्र कर सकता है और उसे दूसरे व्यक्ति को दे सकता है, परन्तु धन पैदा करने के साधनों पर वह अधिकार नहीं कर सकता।

दूसरी बात यह है कि सोवियट यूनियन में कोई भी मनुष्य

व्यक्तिगत लाभ के लिए श्रमिक का अनुचित प्रयोग नहीं कर सकता है।

पारिवारिक जीवन में स्वतंत्रता के साथ-साथ कुछ प्रतिबन्ध भी हैं। तलाक़ की प्रथा प्रचलित है, परन्तु पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने की पूरी कोशिश की जाती है। गर्भपात को पहले प्रोत्साहित किया जाता था, परन्तु अब उसको रोका जा रहा है। बच्चों को पहले पूरी स्वतंत्रता दी जाती थी, परन्तु अब उनको अपने माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य सिखाया जाता है। एक नये क़ानून के अनुसार बच्चे को छोड़नेवाले व्यक्ति को एक वर्ष की जेल दी जाती है।

स्कूलों और विश्वविद्यालयों में परीक्षा-प्रथा प्रचलित है। शिक्षकों को छात्रों के ऊपर नियंत्रण रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पी०-एच०, डी० आदि की डिग्रियाँ जो पहले हटा दी गई थीं अब फिर दी जाने लगी हैं। प्रारम्भिक दस वर्षों में सोवियट यूनियन में मॉक्र्स के दृष्टिकोण से सम्बन्ध रखनेवाली अर्थशास्त्र की शिक्षा पर विशेष ज़ोर दिया जाता था। अब इतिहास, भूगोल आदि विषयों की शिक्षा आवश्यक समझी जाती है। मॉस्को के विश्वविद्यालय में शेली और कीट्स की पुस्तकें भी पढ़ाई जाती हैं।

सोवियट नीति के सम्बन्ध में 'लेनिनिज़्म' नामक पुस्तक में स्टेलिन स्वयं लिखता है—

(१) पूँजीवादीवर्ग की शक्ति नष्ट कर दी गई है और उसके स्थान पर सर्वहारावर्ग की शक्ति काम कर रही है।

(२) उपज के साधन—भूमि, कारख़ाने आदि—पूँजीपतियों से लेकर मज़दूरों और किसानों के अधिकार में कर दिये गये हैं।

(३) उपज की वृद्धि स्पर्धा के सिद्धान्त के लिए अथवा पूँजी-

पतियों के लाभ के लिए नहीं होती, बल्कि मज़दूरों की क्रमानुसार उन्नति के लिए होती है।

(४) राष्ट्रीय आमदनी का वितरण मज़दूरों और किसानों की आर्थिक अवस्था को क्रमानुसार उन्नत करने के दृष्टिकोण से होता है।

(५) मज़दूरों और किसानों की आर्थिक दशा में क्रमानुसार उन्नति होने से उनको यह गारंटी मिल जाती है कि अधिक उपज होने से उन पर कोई आपत्ति नहीं आयेगी और वे कभी बेकार नहीं रहेंगे।

(६) सर्वहारावर्ग का देश पर आधिपत्य है। मज़दूर और किसान पूँजीपतियों के लिए परिश्रम नहीं करते हैं, वरन् अपने हित के लिए काम करते हैं।

स्टेलिन इस बात पर बहुत ज़ोर देता है कि सन् १९१७ ई० की रूस की क्रान्ति इतिहास की अन्य क्रान्तियों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। अन्य क्रान्तियों-द्वारा या तो केवल राजनीतिक परिवर्तन ही हुआ, या केवल आर्थिक दशा ही बदली, परन्तु रूस की क्रान्ति-द्वारा दोनों परिवर्तन साथ-साथ हुए। राजनीतिक क्षेत्र में एक पार्टी को हटाकर दूसरी पार्टी के हाथ में शक्ति आई और आर्थिक क्षेत्र में एक नीति को हटाकर दूसरी नीति स्थापित हुई।

नवम्बर, सन् १९३६ ई० में सोवियट कांग्रेस की एक बैठक हुई जिसके अनुसार सोवियट शासन के विकास के लिए एक नया विधान रक्खा गया। यह विधान एक कमेटी-द्वारा बनाया गया था जो जुलाई, सन् १९३५ ई० में बैठी थी और जिसका सभापति स्टेलिन था। इस कमेटी के दस उपसभापति थे जिनमें रूस के लगभग सभी बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ थे। कमेटी ने एक वर्ष काम किया, उसके बाद यह विधान जनता के सम्मुख रक्खा गया।

नये विधान के अनुसार दो चेम्बर बनाये गये। छोटे चेम्बर के सदस्य वोट के आधार पर जनता-द्वारा चुने गये और बड़े चेम्बर के सदस्य विभिन्न अल्पसंख्यक जातियों के प्रतिनिधियों से चुने गये। दोनों चेम्बरों के सदस्यों की सम्मति से क़ानून पास किये जाते हैं। नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की जाती है। विधान के द्वारा देश के समस्त मनुष्यों को वेतन पर काम, आराम के लिए समय और निःशुल्क शिक्षा की गारंटी दी गई है। लोगों को बातचीत, प्रेस तथा सभाओं में भाग लेने के लिए स्वतन्त्रता दी गई है।

मॉस्को में स्टेलिन और उसके सहकारी समस्त शासन की बागडोर अपने हाथ में रखते हैं। दोनों चेम्बरों को उनकी नीति का पालन करना पड़ता है। चेम्बरों का काम जनता की आवश्यकताओं को स्टेलिन के सम्मुख रखना और उसकी नीति को जारी करना है।

परराष्ट्र-नीति

सोवियट यूनियन के स्थापित होने के समय से रूस की परराष्ट्र-नीति शान्ति की रही है। कार्ल रैडेक ने जनवरी, सन् १९३४ ई० में लिखा, "सोवियट-सरकार का उद्देश्य यह है कि राष्ट्र को एक नये युद्ध से बचावे। इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिए सोवियट यूनियन बड़ी दृढ़ता के साथ सोलह वर्ष से प्रयास करती रही है। सोवियट परराष्ट्र-नीति की केन्द्रीय समस्या यह है कि शान्ति की रक्षा की जाय और देश को विदेशी युद्धों में भाग लेने से रोका जाय। सोवियट यूनियन शान्ति चाहती है, क्योंकि शान्ति के ही द्वारा समाजवादी राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है।"

स्टेलिन ने स्वयं दिसम्बर सन् १९३४ ई० में कहा, "हमारी परराष्ट्र-नीति प्रत्यक्ष है। इस नीति का उद्देश्य है शान्ति स्थापित करना और अन्य देशों से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाना। रूस किसी पर आक्रमण करने की धमकी नहीं देता। हम शान्ति के पक्ष में हैं और शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु हम अन्य लोगों की धमकी से नहीं डरते और युद्ध का प्रचार करनेवाले लोगों का सामना करने के लिए तैयार हैं। जो लोग हमारे देश पर आक्रमण करने का प्रयत्न करेंगे, उनको हम अच्छी तरह बतला देंगे और समझा देंगे कि हमारे सोवियट बाग़ में घुसने का क्या परिणाम होता है।"

रूस ने सन् १९२८ ई० में ही राष्ट्र-संघ के पास सर्वदेशीय निःशस्त्रीकरण का प्रस्ताव भेजा था। अगले साल शान्ति क़ायम रखने के लिए रूस ने पोलैंड, रूमानिया तथा फ़ारस से समझौते कर लिये। सन् १९३२ ई० में लिटविनोव जिनेवा में निःशस्त्री-

करण सभा में शामिल हुआ और उसने निःशस्त्रीकरण के पक्ष में बहुत प्रयत्न किया। आगे चलकर रूस ने फ़िनलैंड तथा ज़ेकोस्लावाकिया से भी समझौता कर लिया। सन् १९३४ ई० में रूस ने राष्ट्र-संघ का सदस्य बनने के लिए कोशिश की और वर्ष के अंत तक वह राष्ट्र-संघ का सदस्य बन गया।

सन् १९३५ ई० तक रूस योरपीय राष्ट्रों के मामलों में काफ़ी हिस्सा लेने लगा। इसी वर्ष फ़्रांस के साथ एक संधि की गई। ज़ेकोस्लावाकिया भी जर्मनी के भय से इस संधि में शामिल हो गया। यह निश्चित हुआ कि यदि ज़ेकोस्लावाकिया पर कोई आक्रमण हो तो फ़्रांस और रूस उसकी सहायता करेंगे। इस संधि का उत्तर जर्मनी ने राइनलैंड को जीतकर दिया। बोल्शेविज़्म का मुक़ाबिला करने के लिए जर्मनी तथा जापान में एक समझौता हो गया।

जब इटली ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया, तो रूस के परराष्ट्र-मंत्री लिटविनोव ने निश्चय किया कि इटली का अबीसीनिया पर आक्रमण रूस के लिए हितकर सिद्ध होगा, क्योंकि पूँजीवादी इटली पूँजीवादी इँगलैंड के विरुद्ध था। यह बात मॉर्क्स के सिद्धान्त के अनुसार रूस के लिए हितकर थी। परन्तु परिणाम कुछ और ही हुआ। लिटविनोव को स्टेलिन से कहना पड़ा कि युद्ध के प्रारम्भ होने पर इँगलैंड ने इटली को अपने उद्देश्य की पूर्ति में सहायता दी। स्टेलिन ने लिटविनोव के कथन को स्वीकार कर लिया, परन्तु उससे उसे सन्तोष नहीं हुआ।

स्टेलिन भली-भाँति जानता था कि समझौतों में जब तक मज़बूती न हो तब तक वे बेकार हैं। परन्तु लिटविनोव समझौतों के बहुत पक्ष में था। सन् १९३६ ई० में इस बात का लगभग निश्चय हो गया कि जर्मनी और जेकोस्लावाकिया में युद्ध प्रारम्भ हो जायगा। इँगलैंड के युद्ध में शामिल होने की कोई सम्भावना

नहीं थी। अँगरेज़ी समाचार-पत्रों में अनेक लोगों का विरोध किया गया। किसी को भी इस बात का ध्यान नहीं था कि स्पेन में गृह-युद्ध शुरू हो जायगा। रूस को स्पेन से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। परन्तु जब जर्मनी और इटली बाग़ियों को सहायता देने लगे, तब लिटविनोफ का विचार हुआ कि इँगलैंड और फ्रांस आदि स्पेन की सरकार की सहायता करेंगे। स्टेलिन पहले यह नहीं समझ सका कि स्पेन में जर्मनी और इटली मार्क्सवाद को रोकने के लिए हस्तक्षेप कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे इँगलैंड की शक्ति नष्ट करना चाहते थे।

समष्टिवाद के नेता के रूप में स्टेलिन ने उचित समझा कि वह स्पेन को सहायता दे। उसने टैंक, वायुयान और हथियार भेजे, परन्तु वह सिपाहियों को अधिक संख्या में नहीं भेज सका। स्पेन की सरकार रूस की सहायता से बड़ी मज़बूती के साथ जनरल फ़्रैंको का मुक़ाबिला करती रही। लिटविनोफ का विचार था कि इँगलैंड और फ़्रांस स्पेन की ओर से अवश्य इटली और जर्मनी के विरुद्ध लड़ने लगेंगे। परन्तु ये दोनों देश युद्ध से अलग रहे।

अब स्टेलिन को सन्देह होने लगा कि कहीं ऐसा न हो कि पूँजीवादी देश परस्पर मिलकर सोवियट यूनियन पर आक्रमण कर दें। ख़ुफ़िया पुलिस से उसे पता चला कि युद्ध से अलग रहने के बदले में इँगलैंड को तुर्किस्तान दिया जायगा। मास्को में यह खबर फैल गई कि जापान और जर्मनी मिलकर रूस पर आक्रमण करने का विचार कर रहे हैं। परन्तु सन् १९३७ ई० में इस प्रकार का कोई भय नहीं रहा। जुलाई में जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया। रूस ने समझा कि अपने व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए इँगलैंड को जापान से लड़ना पड़ेगा।

परन्तु ऐसा नहीं हुआ। रूस ने चीन को सहायता दी, और चीन सफलतापूर्वक जापान का मुक़ाबिला करता रहा।

अब ज़ेकोस्लावाकिया पर जर्मनी के आक्रमण की पूरी सम्भावना हो गई। सन् १९३७ ई० में फ़्रांस के प्रधान मन्त्री ब्लम ने कहा, "यदि ज़ेकोस्लावाकिया पर आक्रमण होगा, तो फ़्रांस यह समझेगा कि उसी पर आक्रमण हुआ है।" सोवियट रूस ख़ामोश था, परन्तु लोगों का विचार था कि यूकराइन-द्वारा जर्मन-आक्रमण को रोकने के लिए रूस ज़ेकोस्लावाकिया की सहायता करेगा। लिटविनोफ ने स्टेलिन से कहा कि यदि जर्मनी ने ज़ेकोस्लावाकिया पर आक्रमण किया तो समस्त योरप में युद्ध फैल जायगा, क्योंकि यदि समझौते की शर्तों को पूरा करने के लिए फ़्रांस ने जर्मनी पर आक्रमण किया, तो ब्रिटेन फ़्रांस की सहायता के लिए बाध्य हो जायगा। ऐसी दशा में समष्टिवादी रूस को पूँजीवादी देशों के युद्ध में भाग नहीं लेना चाहिए।

सितम्बर, सन् १९३८ ई० में स्टेलिन का लिटविनोफ की नीति पर से विश्वास हटने लगा, क्योंकि म्यूनिच के समझौते के अवसर पर रूस का कोई प्रतिनिधि नहीं बुलाया गया। पूँजीवादी देशों के प्रधान—हिटलर, मुसोलिनी, दलेदियर और चेम्बरलेन—म्यूनिच में एकत्र हुए, और उन्होंने ज़ेकोस्लावाकिया के भाग्य का निबटारा किया, परन्तु रूस की बात भी नहीं पूछी गई। स्टेलिन के हृदय पर बहुत आघात पहुँचा।

कुछ दिनों बाद चेम्बरलेन और हिटलर ने परस्पर वचन दिया कि इँगलैंड और जर्मनी कभी युद्ध नहीं करेंगे। परन्तु हिटलर चेम्बरलेन की कमज़ोरी को जानता था। उसने शीघ्र ही ज़ेकोस्लावाकिया पर आक्रमण करके उसको जर्मनी में मिला लिया, और न तो फ़्रांस और न इँगलैंड ही उस अभागे देश

की सहायता के लिए युद्ध में शामिल हुए। स्टेलिन तथा लिट-विनोफ को पूँजीवादी देशों की फूट देखकर कुछ सन्तोष हुआ।

२२ मार्च, सन् १६३६ ई० को हिटलर ने मेमल पर अधिकार कर लिया और इस बात को ज़ाहिर कर दिया कि वह डैनज़िग पर भी अधिकार करना चाहता था। चेम्बरलेन ने भयभीत होकर ३१ मार्च को पोलैंड को गारंटी दी कि यदि जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया तो इँगलैंड पोलैंड की ओर से युद्ध में शामिल हो जायगा। इस अवसर पर चेम्बरलेन ने रूस से कोई सलाह नहीं ली और न किसी प्रकार का सहयोग ही माँगा। ७ अप्रैल को इटली ने अलबानिया को जीत लिया। इँगलैंड ने इस बार भी रूस की सम्मति न लेकर १३ अप्रैल को यूनान और रूमानिया को गारंटी दी कि यदि कोई देश उन पर आक्रमण करेगा, तो इँगलैंड उनकी सहायता करेगा।

१५ अप्रैल को चेम्बरलेन ने मास्को में अपने राजदूत-द्वारा स्टेलिन के सामने यह प्रस्ताव रखवाया कि रूस भी पोलैंड और रूमानिया को जर्मनी के विरुद्ध गारंटी दे दे। रूस ने इसका उत्तर दिया कि यदि इँगलैंड और फ़्रांस वास्तव में शान्ति स्थापित करना चाहते हों, तो सभी देशों पर आक्रमण रोकें। इसलिए उसने तीन शर्तें रक्खीं—(१) इँगलैंड, फ़्रांस तथा रूस में एक-दूसरे को सहायता देने का पैक्ट किया जाय, (२) एक बहुत बड़ी सेना रक्खी जाय, और (३) बाल्टिक सागर से लेकर कृष्ण-सागर तक समस्त राष्ट्रों को सहायता देने की गारंटी दे दी जाय।

तीन सप्ताह तक ब्रिटिश सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया। बाद में एक उत्तर भेजा गया जिसमें सोवियट सरकार के प्रस्ताव का कोई समर्थन नहीं था, और इँगलैंड ने अपने पुराने प्रस्ताव को दुहराया था। अब स्टेलिन को सन्देह होने लगा कि इँगलैंड

और फ्रांस रूस को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में डालना चाहते हैं और स्वयं उससे बचना चाहते हैं। इसलिए १० मार्च को उसने समष्टिवादी पार्टी की कांग्रेस के अवसर पर कहा:—

"हमको बहुत सावधान रहना चाहिए और ऐसे युद्ध-प्रिय लोगों के कहने पर, जो और लोगों द्वारा आग में से बादाम निकलवा कर स्वयं खाने के आदी हैं, अपने देश को युद्ध में नहीं डालना चाहिए।"

जब स्टेलिन ने देखा कि इँगलैंड और फ्रांस अपने हित-साधन के लिए रूस को युद्ध में झोंकना चाहते हैं और लिट-विनोफ समझौते के लिए बहुत उत्सुक है तब उसने लिटविनोफ को परराष्ट्र-मंत्री के पद से हटा दिया, और मोलोटोव को उसके स्थान पर नियुक्त किया। अब मास्को से एक प्रस्ताव भेजा गया कि लार्ड हैलीफेक्स (जो उस समय इँगलैंड का परराष्ट्र-मंत्री था) स्वयं रूस आकर समझौते की शर्तों को तय कर ले। परन्तु हैलीफेक्स रूस नहीं गया। बहुत दिनों तक समझौते की बातचीत चलती रही, परन्तु कोई निश्चित फल नहीं निकला। अंत में जब पोलैंडवालों ने रूस की सहायता लेने से इनकार कर दिया, तब समझौते की बातचीत समाप्त हो गई।

लेनिन का विचार था कि समाजवादी राष्ट्र बहुत वर्षों तक पूँजीवादी राष्ट्रों के साथ-साथ चलता रहेगा। ऐसी दशा में यदि पूँजीवादी राष्ट्र समाजवादी राष्ट्र का विनाश न करना चाहें, और उससे सन्धि करना चाहें, तो सोवियट यूनियन का हित इसी में होगा कि वह उनसे अच्छा सम्बन्ध रक्खे। स्टेलिन की पर-राष्ट्र नीति का आधार यही है। पहले उसने इँगलैंड तथा फ्रांस से समझौता करने का प्रयत्न किया, परन्तु जब उसको मालूम हुआ कि ये देश अपने स्वार्थ के सामने रूस की चिन्ता नहीं करते, तब उसने उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। इधर

जर्मनी रूस से संधि करने का प्रयत्न कर रही थी। हिटलर जानत था कि अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए यह आवश्यव है कि वह रूस से संधि कर ले। रूस ने भी जर्मनी से समझौत करने में अपनी कोई हानि नहीं समझी। २३ अगस्त, सन् १९३ ई० में जर्मनी तथा रूस में एक पैक्ट हो गया जिसके अनुसा यह निश्चित हुआ कि दोनों देश एक-दूसरे पर आक्रमण नह करेंगे, और यदि कोई तीसरा देश दोनों में से किसी एक प आक्रमण करे, तो दूसरा तीसरे की सहायता नहीं करेगा। इसवे अतिरिक्त पैक्ट की और भी कई शर्तें थीं। इस प्रकार रूस क जर्मनी का भय नहीं रहा, और यह भी सन्देह मिट गया वि पूँजीवादी देश मिलकर रूस पर आक्रमण कर देंगे।

सन् १९१४ के योरपीय महायुद्ध से पहले डैनज़िग जर्मन का एक भाग था, परन्तु युद्ध के बाद उसको पोलैंड में मिल दिया गया। डैनज़िग के जर्मनों को पोलैंड की सरकार के विरु बहुत-सी शिकायतें थीं। जर्मनी ने इसमें हस्तक्षेप किया। पहल सितम्बर को डैनज़िग में नाज़ी पार्टी के नेता हर फोर्सटर घोषणा कर दी कि डैनज़िग जर्मनी में मिला दिया गया। हिटल ने इस घोषणा का समर्थन किया और शीघ्र ही पोलैंड प आक्रमण किया। रूस और जर्मनी का पैक्ट हो चुका था इसलिए रूस इस युद्ध में तटस्थ रहा। पोलैंड की अन्त में पराज हुई। हिटलर ने पोलैंड को जर्मनी में मिला लिया। पोलैंड के भाग—यूक्राइन तथा श्वेत रूस—जहाँ पर रूसवालों की संख्य अधिक थी, रूस को दे दिये गये। इस विभाजन की नीति लिए रूस की अलोचना की जाती है, परन्तु वास्तव में बात य थी कि यदि रूस इन भागों पर अधिकार नहीं कर लेता तो जर्मनी में मिला लिये जाते जिससे रूस को सदैव जर्मनी से भ रहता।

अब रूस के सम्मुख फिनलैंड की समस्या उपस्थित हुई। तटस्थता के सिद्धान्त को पूरी तरह से अपनाने के लिए रूस को यह आवश्यक था कि वह अपनी सीमा को सुरक्षित बनावे। रूस को भय था कि कहीं फिनलैंड की ओर से पूँजीवादी देश उस पर आक्रमण न कर दें। लेनिनग्रैड पर फिनलैंड की सीमा से सफलतापूर्वक तोपों-द्वारा आक्रमण किया जा सकता था। ऐसी दशा में रूस ने फ़िनलैंड के सामने अपनी सीमा कुछ पीछे हटाने के लिए एक प्रस्ताव रक्खा। उसने हांगो के बन्दरगाह पर अपनी सेना रखने के लिए आज्ञा माँगी, क्योंकि ऐसी दशा में लेनिनग्रैड की ओर आते हुए जहाज़ी बेड़े को वहाँ से रोका जा सकता था। सोवियट ने लेनिनग्रैड के पास कुछ बन्दरगाह भी माँगे। इसके बदले में रूस ने कैरेलिया में कुछ भाग फ़िनलैंड को देने का वचन दिया, और एक पैक्ट-द्वारा फ़िनलैंड पर आक्रमण के समय उसकी सहायता करने का वादा किया। परन्तु फ़िनलैंड की सरकार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। मार्च, सन् १९४० ई० में रूस ने फ़िनलैंड पर आक्रमण कर दिया। फ़िनलैंड की हार हुई। रूस ने फ़िनलैंड के कुछ भाग को, और आलन्द द्वीपसमूह को रूस में मिला लिया। इस प्रकार फ़िनलैंड की समस्या हल हो गई।

बाल्टिक राष्ट्रों का प्रश्न भी रूस के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था। लैटविया, लिथुआनिया और एस्टोनिया का एक बड़ा भाग सन् १९१४ ई० के योरपीय महायुद्ध से पहले रूस में शामिल था। बाल्टिक सागर के पास होने से इन राष्ट्रों का व्यापारिक तथा राजनीतिक महत्त्व बहुत था। यदि रूस का इन पर अधिकार हो जाता, तो बाल्टिक सागर से रूस सुगमतापूर्वक व्यापार कर सकता। इसके विपरीत यदि कोई अन्य पूँजीवादी देश उन पर अधिकार कर लेता, तो वह रूस पर भली-भाँति आक्रमण

कर सकता था। ऐसी दशा में रूस ने इन देशों की सरकारों से समझौते किये और बाद में उनको रूस में शामिल हो जाने के लिए बाध्य किया।

बालकन समस्या के हल करने में भी रूस का काफ़ी हाथ रहा। वास्तव में रूस का सिद्धान्त यह रहा है कि वह स्वयं तटस्थ रहे और अन्य देशों से अपनी रक्षा करने के लिए अपनी सीमा को मज़बूत बनावे। इसी लिए जब रूमानिया का विभाजन हुआ, तो रूस ने बुकोविना और बेसेरेबिया पर अपना अधिकार कर लिया। अब रूस सब ओर से सुरक्षित है।

लौह पुरुष

"नेतृत्व की कला बहुत गम्भीर विषय है। नेता को आन्दोलन से पीछे क़दम नहीं रखना चाहिए, क्योंकि ऐसा करना जन-साधारण से अलग हो जाना है। परन्तु नेता को तेज़ी से भी नहीं चलना चाहिए, क्योंकि तेज़ी से चलने से जन-साधारण का साथ छूट जाता है। जो व्यक्ति किसी आन्दोलन का नेता बनना चाहता है उसको दोनों ओर लड़ना चाहिए—उन व्यक्तियों के विरुद्ध जो पीछे क़दम रखते हैं और उनके भी विरुद्ध जो बहुत तेज़ी से चलते हैं।"

ये शब्द उस व्यक्ति के मुख से निकले थे जो आज इसी सिद्धान्त का पालन करने से संसार के छठे भाग का स्वामी बना हुआ है; रूस की जनता जिसको देवता के समान पूजती है; और संसार में जिसकी महान् शक्ति का बोलबाला है।

स्टेलिन का स्थान अन्य डिक्टेटरों से भिन्न है क्योंकि वह केवल एक राष्ट्र का नेता ही नहीं है, वरन् समष्टिवादी आन्दोलन का भी स्थापक है; जिसकी शाखायें लगभग सभी देशों में हैं।

रूस के प्रेस में वह 'महान', 'सर्वप्रिय', 'साहसी', 'बुद्धिमान', 'प्रतिभाशाली' आदि विशेषणों से सम्बोधित किया जाता है। चार नगर उसके नाम पर बसाये गये हैं—स्टेलिनग्रेड, स्टेलिनाबाद, स्टेलिनोगोरस्क, स्टेलिनिस्क। साधारण वक्तव्यों में लोग उसको 'हमारा सर्वश्रेष्ठ किसान', 'हमारा सबसे प्यारा पथ-प्रदर्शक' कहते हैं। जलसों के अन्त में कहा जाता है, "हमारा प्यारा नेता, साथी और मित्र स्टेलिन चिरजीवी हो।"

स्टेलिन संसार में सबसे अधिक बलवान् पुरुष है। उसका व्यक्तित्व बहुत विशाल है जिससे प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता है। उसका शरीर फ़ौलाद के समान मज़बूत है। इसी लिए उसका नाम स्टेलिन पड़ा है। बड़ी से बड़ी कठिनाइयों में भी स्टेलिन बड़ी दृढ़ता से काम करता है, और उनको सरल बना लेता है।

सहनशीलता, संलग्नशीलता और एकाग्रता—स्टेलिन के चरित्र की प्रधान विशेषतायें हैं। ड्यूरैन्टी के कथन के अनुसार उसका अध्यवसाय 'अमानुषिक' है। वह साम्राज्य की दीवारों को इतने धीरे-धीरे चुनता है कि उसके साथी कभी-कभी बेचैन हो जाते हैं, क्योंकि वे बनी हुई दीवार की रूप-रेखा नहीं देख सकते। वह भविष्य का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए वर्तमान को सफल बनाता है। उसकी एकाग्रता प्रसिद्ध है। जब वह किसी विषय पर बातचीत करता है, तब बड़ी सच्चाई के साथ अपने विचारों को साफ़-साफ़ व्यक्त करता है। एक बार मॉस्को के बोल्शोई थियेटर में एक जलसे के अवसर पर एक मामूली आदमी से बातचीत करने में वह इतना संलग्न हो गया कि उसे शायद यह ध्यान भी नहीं रहा कि उसके आस-पास क्या हो रहा है।

चालाकी, होशियारी और सूक्ष्मदर्शिता में वह पूर्वीय राज-नीतिज्ञों की भाँति है। वह इस बात को स्वयं स्वीकार करता है। एक जापानी राजदूत से मिलते हुए उसने एक बार कहा, "स्वागत, मैं भी तो एशियावासी हूँ।" विरोधी दल के वाम भाग के नेता ट्रॉट्स्की, ज़िनोवीन, कैमेनेव और दाहिने अंग के नेता बुखारिन, रैडेक तथा टाम्स को परास्त करने में उसने जिस चालाकी और सूक्ष्मदर्शिता से काम लिया उससे उसके चरित्र पर काफ़ी प्रकाश पड़ता है।

स्टेलिन में अपनी त्रुटियों को स्वीकार कर लेने का साहस है। लैनिनिज़्म नामक पुस्तक में उसने लिखा है, "इस सम्बन्ध

में ख़ास बात यह है कि मनुष्य अपनी त्रुटियों को स्वीकार कर ले और कम से कम समय में उनको ठीक कर ले।" इस पुस्तक के आठ सौ पच्चीस पृष्ठों में स्टेलिन ने सोवियट यूनियन के सम्बन्ध में अपने भले-बुरे विचार बहुत सफ़ाई के साथ व्यक्त किये हैं। उसने अच्छाइयों पर ज़ोर दिया है, परन्तु बुराइयों को छिपाया नहीं है। सन् १६३५ ई० के अन्त तक इस पुस्तक की बीस लाख प्रतियाँ बिक चुकी थीं।

स्टेलिन को प्रत्येक विषय की ब्योरेवार जानकारी का पूरा ध्यान रहता है। राष्ट्र से सम्बन्ध रखनेवाली छोटी से छोटी बात को भी वह ध्यानपूर्वक देखता है। हिटलर छोटी बातों की ओर ध्यान नहीं देता, परन्तु स्टेलिन प्रैव्डा तक के एक-एक अवतरण को पढ़ता है। दिन का काम प्रारम्भ करते ही वह सोवियट यूनियन के प्रत्येक भाग की रिपोर्टों को ध्यानपूर्वक सुनता है। डब्ल्यू० एच० चेम्बरलेन लिखता है कि स्टेलिन ने कई बार ऐसे ऐसे अन्यायों को स्वयं रोका है जिनसे उसका कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था।

स्टेलिन में लोगों से काम निकालने की बड़ी शक्ति है। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ और सफल संगठनकर्ता है। उसका राजनीतिक तथा व्यक्तिगत सहज-ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा है। उसको जीवन की विभिन्न दशाओं का इतना विस्तृत अनुभव है कि वह शीघ्र ही समझ लेता है कि किस व्यक्ति से किस प्रकार का काम निकल सकता है और किस नीति का पालन करने से उसको अपने कार्य में सफलता मिल सकती है। यही कारण है कि उसके साथी उसकी श्रद्धा करते हैं।

हिटलर के समान स्टेलिन एक वक्ता नहीं है परन्तु डिज़राइले की भाँति वह समस्याओं की गहराई तक पहुँचकर उनको

साफ़ तौर से व्यक्त करने की योग्यता रखता है। साधारण तौर पर प्रश्नोत्तर के ढंग को वह पसंद करता है। जब वह मार्क्स के सिद्धान्तों की व्याख्या करता है तब ऐसा प्रतीत होता है मानो सुकरात अपने शिष्यों के सामने अपने विचारों को प्रकट कर रहा हो। एच० जी० वेल्स से बातचीत करते हुए उसने अपने विस्तृत ज्ञान का परिचय दिया। सन् १९२७ ई० में अमरीका के मज़दूरों के प्रतिनिधियों से मिलते समय उसने बड़ी जटिल समस्याओं का उत्तर पूरे चार घंटे तक बड़ी सफलतापूर्वक दिया। इस बातचीत में उसने सोवियट यूनियन के उद्देश्यों का बहुत विस्तृत विवेचन किया। जब उन लोगों को सन्तोष हो गया, तब स्टेलिन ने उनसे दो घंटे तक अमरीका के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न पूछे। उसके प्रश्न बहुत गम्भीर थे और इस बात को प्रकट करते थे कि उसको अमरीका के राजनीतिक विषयों का पूरा ज्ञान है। इन छः घंटों में स्टेलिन इतना एकाग्रचित्त रहा कि सिवा बातचीत के उसने और किसी प्रकार का काम नहीं किया।

स्टेलिन लेनिन के सिद्धान्तों का पूरा अनुयायी है। अपने शत्रुओं को पराजित करने में उसने लेनिन का सहारा लिया। ट्रॉट्स्की से संघर्ष करते समय उसने कहा कि वह अपने हित के लिए नहीं, वरन् लेनिन के सिद्धान्तों की रक्षा के लिए ट्रॉट्स्की से लड़ रहा था क्योंकि ट्रॉटस्की लेनिन के सिद्धान्तों की ग़लत व्याख्या करता था। मुसोलिनी और हिटलर अपने कार्यों के परिणाम का भार अपने ऊपर रखते हैं, परन्तु स्टेलिन अपने कार्यों की पुष्टि लेनिन के सिद्धान्तों द्वारा करता है।

स्टेलिन अन्तर्राष्ट्रीय समष्टिवाद में अधिक विश्वास नहीं करता है। वह जानता है कि सोवियट यूनियन चारों ओर से पूँजीवादी शत्रुओं से घिरा हुआ है। ऐसी दशा में वह अन्य

देशों से विरोध करके रूस के हित की हानि नहीं करना चाहता। अभी वह समष्टिवाद के सिद्धान्तों को रूस में पूर्णरूप से सफलतापूर्वक स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है। कुछ ही वर्षों में उसने रूस की कायापलट कर दी है। स्टेलिन का विश्वास है कि पूँजीवादी देश आपस में लड़-भिड़कर नष्ट हो जायँगे और समष्टिवाद को स्वीकार कर लेंगे।

हिटलर

जाति-प्रेमी बालक

"क्या कहा? आस्ट्रिया के सम्राट् का गीत गाओगे।" एक लड़के ने पूछा।

"हाँ। आस्ट्रिया के सम्राट् का, और नहीं तो क्या विदेशियों का गीत गायेंगे?" दूसरे ने उत्तर दिया।

"नहीं। हर्गिज़ नहीं। हम लोग जर्मन हैं। आस्ट्रिया और जर्मनी को कोई अलग नहीं कर सकता। हम जर्मन राष्ट्र का गीत गायेंगे।" पहले ने बिगड़कर कहा।

"ऐसा कदापि नहीं हो सकता। हमारा जर्मनी से कोई सम्बन्ध नहीं। हम अपने सम्राट् का गीत गायेंगे।" दूसरे ने ज़ोर देते हुए कहा।

दोनों लड़के अपने अपने साथियों को लेकर अलग-अलग गीत गाते हैं—पहला जर्मन राष्ट्र का और दूसरा आस्ट्रिया के सम्राट् का।

स्थान है आस्ट्रिया में लिन्ज़ क़स्बे का स्कूल। समय है दिन के दस बजे का। पहला लड़का है एडोल्फ हिटलर जो आगे चलकर जर्मन-जाति का नेता और संसार का महान् राज-नीतिज्ञ बना। दूसरा है एडोल्फ का सहपाठी।

हिटलर के पूर्वज आस्ट्रिया के एक भाग वाल्डवर्टेल के निवासी थे। वहाँ के किसान ग़रीब, ईमानदार, ईश्वरभक्त तथा अशिक्षित थे। इस भाग के स्पाइटल गाँव में फ़रवरी सन् १७९२ ई० में जॉन जार्ज हिडलर का जन्म हुआ। यह एडोल्फ हिटलर का दादा था। जार्ज हिडलर ने मेरिया एना से विवाह

कर लिया। इन दोनों से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम था एलोइस हिटलर। यह एडोल्फ हिटलर का पिता था।

एलोइस का नाम हिडलर से हिटलर हो गया। कारण यह था कि उसके गाँव के किसान न तो पढ़ना ही जानते थे, और न लिखना ही। एलोइस का पिता स्वयं को हटलर कहता था। धीरे-धीरे हटलर से बिगड़ते-बिगड़ते हिटलर हो गया।

हिटलर का पिता एक छोटा अफ़सर था। उसने तीन विवाह किये। उसकी पहली पत्नी एना थी जिसकी पुत्री एन्जिला अभी तक जीवित है। सन् १८८३ ई० में उसका देहान्त हो गया। छः सप्ताह बाद एलोइस ने फ्रैन्ज़िस्का से विवाह कर लिया जिसका देहान्त एक वर्ष बाद हो गया। तीन महीने बाद ७ जनवरी, सन् १८८५ ई० में एलोइस ने क्लैरा को अपना साथी चुना। क्लैरा बहुत साहसी स्त्री थी। उसका पिता स्पाइटल नामक गाँव में एक किसान था। जब क्लैरा दस वर्ष की थी, तब वह एलोइस की पहली पत्नी एना की नौकरानी बनकर रहने लगी। कुछ दिनों बाद वह वियना चली गई। वहाँ वह दस साल रही। सन् १८८५ ई० में वह स्पाइटल को वापिस आ गई। एलोइस ने उसको देखा और उसके साथ विवाह कर लिया। इस समय क्लैरा चौबीस वर्ष की थी और एलोइस सैंतालीस का।

चार साल बाद २० अप्रैल, सन् १८८९ ई० में एडोल्फ़ हिटलर का जन्म हुआ। एडोल्फ़ के अतिरिक्त क्लैरा के दो बच्चे और भी हुए। पॉला, जो एडोल्फ से दस वर्ष छोटी है, वियना में अविवाहित जीवन व्यतीत करती है। दूसरा बच्चा एडवर्ड बचपन में ही मर गया।

जब हिटलर कुछ बड़ा हुआ, तब वह लिन्ज़ के स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया। हिटलर का पिता चाहता था कि

हिटलर भी एक अफ़सर बने, परन्तु उसका झुकान इसके विरुद्ध था। वह जंगलों में घूमता और झाड़ियों से बातचीत करता था। चाँद उसको बहुत प्यारा लगता और वह टकटकी लगाये घंटों उसकी ओर देखता रहता। वह अपने आत्म-चरित्र में लिखता है, "मैं एक अफ़सर नहीं बनना चाहता था। न तो बातचीत-द्वारा और न बहस-द्वारा ही कोई मुझे उस ओर झुका सकता था। मैंने अफ़सर बनने से साफ़ इनकार कर दिया। यदि कोई भी व्यक्ति मेरे ध्यान को उधर आकर्षित करने की कोशिश करता, तो उसका परिणाम विपरीत होता। मुझे इस बात से घृणा थी कि मैं दफ़्तर में लगातार बैठा रहूँ और फ़ार्मों के भरने में अपना जीवन नष्ट कर दूँ।" वास्तव में हिटलर और उसके पिता के जीवन तथा विचारों में बहुत अन्तर था। जॉन गन्थर लिखता है, "हिटलर का पिता शराबी था, परन्तु हिटलर ने कभी शराब नहीं पी। पिता ने तीन विवाह किये, परन्तु हिटलर ने किसी स्त्री से प्रेम नहीं किया। पिता भोग-विलासमय जीवन व्यतीत करता था, परन्तु हिटलर भोग-विलास से डरता था।"

बचपन से ही हिटलर के हृदय में जर्मन-जाति की वीरता तथा उच्चता के भाव उदय होने लगे। वह जर्मनी के महापुरुषों के जीवन-चरित्र पढ़ता और उनमें बड़ा आनन्द लेता था। परन्तु स्कूल की पढ़ाई में उसका ध्यान नहीं लगता था और उसके अध्यापक उसको 'सुस्त और बोदा' कहते थे।

इस समय आस्ट्रिया अनेक जातियों का राष्ट्र था। उत्तर तथा दक्षिण में विदेशी जातियों ने आस्ट्रिया की राष्ट्रीयता को शक्तिहीन कर दिया था और वियना भी जर्मन नगर-सा नहीं मालूम पड़ता था। राजवंश भी हर प्रकार से जेकोस्लावाकिया के पक्ष में था।

अब जाति की समस्या हिटलर के मस्तिष्क में हर समय घूमने लगी। वह सोचता, "क्या हम वैसे ही नहीं हैं जैसे अन्य जर्मन? क्या हम सब एक नहीं हैं?" वह अपने प्रश्नों का उत्तर अपने आप ही दे लेता और इस बात को सोचकर सन्तोष कर लेता कि समस्त जर्मन बिस्मार्क के साम्राज्य के सदस्य बनने के लिए पूर्ण भाग्यशाली नहीं थे।

स्कूल की सोसाइटी में हिटलर जर्मन राष्ट्र के पक्ष में अपने भाव व्यक्त करता और अपने साथियों में उनका प्रचार करता। वह जर्मन राष्ट्र की महानता के गीत गाता और अपने विरोधी छात्रों से घृणा करता। थोड़ी अवस्था में ही उसके हृदय में राष्ट्रीयता की भावनायें जाग्रत हो उठीं। शीघ्र ही वह एक कट्टर जर्मन राष्ट्रवादी हो गया। उसमें राष्ट्रीयता के भावों का विकास इतनी तेज़ी से हुआ कि पन्द्रह वर्ष की अवस्था में वह 'घरेलू देश-भक्ति' और 'सर्वप्रिय राष्ट्रीयता' के अन्तर को भलीभाँति समझने लगा।

एक बार आस्ट्रिया का आर्कड्यूक लिन्ज़ में एक इमारत की नींव डालने आया। नगर की ओर से उसके स्वागत का प्रबन्ध किया गया और सड़कों पर सिपाही क़ायदे में खड़े हो गये। स्कूल के सामने विद्यार्थी राजपरिवार के लोगों को नमस्कार करने के लिए क़तार में खड़े किये गये। प्रधान अध्यापक ने उनको सिखा रक्खा था कि जब आर्कड्यूक सामने से निकले, तब सब विद्यार्थी एक साथ मिलकर 'होख़', 'होख़' कहें।

उन दिनों 'होख़' शब्द का राजनीतिक महत्त्व था। हैप्स-वर्ग परिवार के सदस्यों को नमस्कार करने का यह राजनीतिक ढंग था, और आस्ट्रिया के असन्तुष्ट जर्मन 'होख़' के स्थान पर 'हेल' कहकर जर्मन ढंग से नमस्कार करते थे।

आर्कड्यूक के आने से दो दिन पहले हिटलर अपने सह-

पाठियों के पास गया। उसने उन पर पूरी तरह से अपना प्रभाव डाला। परिणाम यह हुआ कि जब ड्यूक आया और प्रधान अध्यापक ने नमस्कार करने के लिए संकेत किया, तब 'होख़' 'होख़' कहने के स्थान पर 'हेल' 'हेल' कहकर लड़के चिल्ला पड़े। सब लोग यह सुनकर भयभीत हो गये।

इस प्रकार एक उन्नतिशील शक्ति हिटलर के हृदय में काम कर रही थी जिसने आगे चलकर संसार की अनेक जातियों को विस्मित कर दिया। जर्मन जातीयता का अंकुर हिटलर के मस्तिष्क में प्रस्फुटित हो रहा था जो आगे चलकर एक सिद्धान्त के रूप में बदल गया। इस सिद्धान्त के शत्रुओं का विनाश करने में हिटलर ने अपनी पूरी शक्ति से काम लिया।

जब हिटलर की अवस्था चौदह वर्ष की थी, तब उसके पिता का देहान्त हो गया। एलोइस अपने पुत्र के कार्यों से कभी सन्तुष्ट नहीं रहा और उसे उसके भविष्य के विषय में सदैव आशंका रही। परन्तु हिटलर अपनी मा को बहुत प्यार करता था। मा ने उसके हृदय में महत्त्वाकांक्षा का बीज बोया और इतिहास तथा भूगोल की ओर उसका ध्यान आकृष्ट किया। वह चाहती थी कि एडोल्फ़ अपने पिता के समान न होकर एक कलाकार बने।

जब एडोल्फ़ प्रवेशिका परीक्षा में असफल रहा, तब आर्थिक कठिनाइयों के कारण उसे स्कूल छोड़ देना पड़ा। अब वह अपनी मा के पास रहकर चित्र-कला का अभ्यास करने लगा, पाँच साल में वह अच्छा चित्रकार हो गया।

सन् १९०७ में वह पहली बार वियना गया। वहाँ पहुँचकर उसने स्टेट एकेडमी के चित्र-कला-स्कूल में दाख़िला के लिए अर्ज़ी दी। यहाँ पर विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी और कुछ वज़ीफ़ा भी दिया जाता था। उसको यह सुनकर

बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके चित्र अच्छे नहीं थे इसलिए उसकी अर्ज़ी स्वीकार नहीं की गई। अब उसने शिल्पकला के स्कूल में अर्ज़ी दी। यहाँ पर परीक्षक ने उसके काम को पसन्द किया, परन्तु जब उसको पता चला कि हिटलर ने प्रवेशिका परीक्षा भी पास नहीं की थी, तब उसने अपनी अस्वीकृति दे दी।

निराश होकर हिटलर को लिन्ज़ वापिस आना पड़ा। उसकी चित्रकला-सम्बन्धी समस्त आशाओं पर पानी फिर गया। उसको अपना भविष्य अन्धकारमय दिखाई देने लगा। इसी समय उसकी मा बीमार पड़ गई। उसकी बीमारी में घर का सब रुपया ख़र्च हो गया। कुछ दिनों बाद मा का देहान्त हो गया। अब हिटलर को भूखों मरना पड़ा।

अपने पिता के मकान को बेचकर उसको कुछ रुपये मिले। एक बक्स में कुछ कपड़े रखकर वह नौकरी की तलाश में वियना की ओर चल पड़ा। उसे आशा थी कि उसे कोई अच्छी नौकरी मिल सकेगी। वह कुछ होना चाहता था—परन्तु अफ़सर नहीं।

वियना में जीवन

"जिस दिन मैं सोने के कमरे में घुसा, मैंने देखा कि मेरे बिछौने के समीप एक आदमी बैठा था जो सिवा एक पुराने पाजामे के और कुछ भी नहीं पहने था। उसके ओढ़ने-बिछाने के कपड़ों पर छोटे-छोटे कीड़े लगे हुए थे, क्योंकि वह बहुत दिनों से बुरी दशा में घूमता रहा था। मैंने उससे पूछा कि वह किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करता था। उसने उत्तर दिया कि कई दिनों से वह सड़क पर भीख माँगकर अपना पेट भरता था। उसकी आँखों से भूख इतनी साफ़ तौर से टपकती थी कि मुझे उस पर दया आ गई, और मैंने उसको खाने के लिए रोटी दी। उसने धन्यवाद के साथ रोटी ले ली, और इस बात को स्वीकार किया कि चौबीस घंटे से उसने कुछ भी नहीं खाया था। उसने मुझसे कहा कि उसका नाम हिटलर था।"

ये शब्द रेन होल्ड हैनिच-द्वारा लिखे गये हैं जो हिटलर से मीडलिंग स्टेशन पर मिला था। वास्तव में वियना आने पर हिटलर को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कुछ ही दिनों में उसका सब रुपया ख़र्च हो गया। उसके बाल बढ़ गये, कपड़े फट गये और स्वास्थ्य गिर गया। उसे भीख माँगनी पड़ी; परन्तु इन कठिनाइयों से उसे लाभ भी हुआ। जिस प्रकार मुसोलिनी ने लिखा है, "मेरे जीवन की कठिनाइयों ने मेरी आत्मा को कठोर बना दिया और मुझको सहन-शक्ति दी", उसी प्रकार हिटलर भी लिखता है, "मैं उन दिनों को धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि मैं मज़बूत हो गया, और अब कठिनाइयों को सहन कर सकता हूँ।"

कुछ दिनों बाद हिटलर एक राज के साथ गारा ढोने की मज़दूरी करने लगा। एक मज़दूर की अवस्था में उसके लिए यह आवश्यक था कि वह राजों के संघ का सदस्य बन जाय, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उसके साथी उससे अप्रसन्न हो गये। शीघ्र ही अन्य मज़दूरों से उसका झगड़ा हो गया। कारण यह था कि हिटलर अपने को अन्य मज़दूरों से अच्छा समझता और उनके राजनीतिक विचारों की आलोचना करता था। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में उसे नौकरी छोड़नी पड़ी। हिटलर लिखता है कि अन्य मज़दूरों ने उसको मार डालने की कोशिश की। इससे पता चलता है कि वहाँ पर उसकी दशा बहुत ही ख़राब हो गई थी।

अब हिटलर ने हैनिच के साथ चित्र खींचने का निश्चय किया। एन्जिला ने उसके लिए रुपये भेजे जिनसे उसने अपना व्यापार प्रारम्भ किया। कहा जाता है कि उसने न्यूमैन नामक एक यहूदी से अपने चित्रों पर कवितायें लिखवाई। हिटलर के शत्रु यह भी कहते हैं कि इसी समय वह फैनीग्रन नामक एक यहूदी लड़की को प्यार करने लगा था और उसने उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रक्खा था। परन्तु इस कथन की पुष्टि के लिए कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

इस समय हिटलर का मस्तिष्क सदैव राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से भरा रहता था। वियना में एक ओर असंख्य धन और दूसरी ओर अत्यन्त ग़रीबी देखकर वह आश्चर्य में पड़ गया। सम्राट् और उसके दरबारी भोग-विलास में लिप्त थे, परन्तु मज़दूर भूखों मरते थे। सामाजिक समस्याओं को भलीभाँति समझने के लिए वियना की दशा बिलकुल उपयुक्त थी। हिटलर ने सोचा कि वहाँ की दशा को ठीक करने के लिए दुहरे तरीक़े की आवश्यकता थी—पहला

तो यह कि अच्छे सिद्धान्तों को निकालने के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व की गहरी अनुभूति हो, और दूसरा यह कि बुरी प्रथाओं को मज़बूती के साथ नष्ट किया जाय। वह लिखता है, "मैं नहीं जानता कि उस समय मुझे किस बात से अधिक दुःख हुआ—अपने साथी मज़दूरों की बुरी आर्थिक दशा से, अथवा उनके आत्मिक विकास के नीचे दर्जे से।"

इसी समय उसने जन-साधारण के मनोविज्ञान को समझने की कोशिश की। अपने आत्म-चरित्र में वह लिखता है, "जनता उन सब कार्यों को जिनमें अधूरापन या कमज़ोरी होती है, स्वीकार नहीं करती है। वह एक स्त्री के समान है जो एक कमज़ोर पति पर अधिकार स्थापित करने की अपेक्षा एक शक्तिशाली पति के अधिकार में रहना अधिक पसन्द करती है। वह आज़ादी का प्रयोग करना नहीं जानती, और आत्मिक विकास के लिए दूसरे का अधिकार स्वीकार करने में लज्जित नहीं होती। वह अदम्य पौरुष की ओर देखती है, और उसके सामने सिर झुका देती है।" आगे चलकर हिटलर की राजनीति का यह प्रमुख सिद्धान्त हो गया।

अब हिटलर गम्भीरतापूर्वक राजनीतिक विषयों का अध्ययन करने लगा। वह इस निश्चय पर पहुँचा कि पार्लियामेंट-द्वारा शासन की व्यवस्था आस्ट्रिया के लिए पूर्णरूप से अनुपयुक्त थी। जब उसको मालूम हुआ कि आस्ट्रिया की पार्लियामेंट में जर्मनों की अपेक्षा अन्य राष्ट्रवालों का बहुमत है, तब उसको बहुत क्रोध आया। उसने पार्लियामेंट के वाद-विवाद को बाहर से ध्यानपूर्वक सुना। जब उसने देखा कि बहुत-से वक्ता जर्मन भाषा में न बोलकर स्लैव बोलियों में बोलते हैं, तब उसके हृदय पर बहुत आघात पहुँचा।

हिटलर अपने आत्म-चरित्र में लिखता है, "उफ़, कितना

झूठ, मक्कारी और दगाबाज़ी ! कितना निकृष्ट है लोकतंत्रवाद, सबसे अधिक मूर्खों का समूह ! इसमें प्रकृति के स्वाभाविक नेतृत्व के सिद्धान्त का पूर्ण बहिष्कार है।"

"लोकतंत्रवाद उत्तरदायित्व से बचने का एक घृणात्मक साधन है। बहुमत को उत्तरदायी बना देने के अर्थ हैं किसी को भी उत्तरदायी न बनाना। वे मूर्ख जो राष्ट्र को पतन की ओर ले जाते हैं केवल पदत्याग कर देते हैं।"

"बहुमत महान् पुरुषों का स्थान ग्रहण नहीं कर सकता। वह केवल मूर्खता ही नहीं, वरन् कमज़ोरी भी सूचित करता है। जिस प्रकार सौ हड्डियों के सिर विद्वान् नहीं बन सकते, उसी प्रकार सौ कायर कभी वीरतापूर्ण निश्चय नहीं कर सकते।"

हिटलर को अब निश्चय हो गया कि जर्मनों के साथ अत्याचार किया जा रहा है। इस अत्याचार का अधिष्ठाता था हैप्सवर्ग-वंश। गद्दी का उत्तराधिकारी था आर्कड्यूक फ्रैन्ज़ फर्डीनेंड। जिसका विवाह हुआ था सोफी चोटेक नामक एक ज़ेक महिला से। हैप्सवर्ग-वंश आस्ट्रिया में स्लैव शासन स्थापित करना चाहता था।

हिटलर के क्रोध की सीमा न रही। वह फिर गम्भीर अध्ययन में लग गया।

साथ ही साथ हिटलर के जातीयता के सिद्धान्त का भी विकास हुआ। यहाँ पर उसके सामने यहूदियों की समस्या उपस्थित हुई। हिटलर ने अपने पिता के समय में यहूदी शब्द सुना भी नहीं था। जब वह चौदह या पन्द्रह वर्ष का हुआ तब राजनीतिक बातचीत में उसने इस शब्द को अक्सर सुना। उस समय धार्मिक वाद-विवाद सुनकर उसके हृदय में यहूदी शब्द के प्रति कुछ घृणा उत्पन्न हुई। लिन्ज़ में बहुत थोड़े

यहूदी थे। उनका रहन-सहन अन्य लोगों की तरह हो गया था। हिटलर उनमें और जर्मन लोगों में धर्म के सिवा कोई राजनीतिक अन्तर नहीं पाता था। वियना में यहूदियों की समस्या आर्थिक तथा राजनीतिक महत्त्व रखती थी। यहाँ पर उनकी एक बहुत बड़ी संख्या थी। गैलीसिया के सूबे से यहूदियों के जत्थे के जत्थे राजधानी की ओर लगातार आते रहते थे। ये लोग कम मज़दूरी पर काम करते थे, इसलिए वियना के मज़दूरों को बड़ी कठिनाई होती थी। एक मज़दूर के रूप में हिटलर ने यहूदियों की समस्या के महत्त्व को भलीभाँति समझा था। एक यहूदी से पहली बार भेंट होने की घटना को हिटलर अपने आत्म-चरित्र में लिखता है—

"एक बार जब मैं शहर के भीतर घूम रहा था, तब मैंने एक लम्बा लबादा पहने हुए काली ज़ुल्फ़ोंवाले व्यक्ति को देखा। मेरा पहला विचार था; क्या यह एक यहूदी है ? लिन्ज़ में वे इस तरह से नहीं दिखाई पड़ते थे। मैंने उस मनुष्य पर होशियारी के साथ चुपचाप ग़ौर किया, परन्तु जितना ही अधिक ध्यानपूर्वक मैंने उस अजीब चेहरे की ओर देखा, और उसकी आकृति को समझने की कोशिश की, उतना ही अधिक यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क में उठने लगा; क्या यह जर्मन है ?"

अब उसका ध्यान इस प्रश्न की ओर आकर्षित हुआ कि यहूदियों ने राष्ट्रीय जीवन में क्या भाग लिया। वह सेमीटिक-विरोधी पत्रों को पढ़ने लगा, और वियना के प्रेस को, जो अधिकतर यहूदियों के हाथ में था, समझने की कोशिश करने लगा। प्रेस, कला, साहित्य तथा थियेटर में यहूदियों के कार्यों की खोज से उसे निश्चय हो गया कि वे लोग "एक भयंकर बीमारी थे—आत्मिक महामारी थे—जो प्राचीन समय की

ब्लैक डेथ (काली मृत्यु) से भी अधिक ख़राब थी, और जो समस्त राष्ट्र पर अपना प्रभाव डाल रही थी।"

जर्मन जाति को शक्तिशाली बनाने के लिए यह आवश्यक था कि सब जर्मनों को एकत्र किया जाय, उनको विदेशी शासन से स्वतंत्र किया जाय और उनकी ग़रीबी, कमज़ोरी, अज्ञानता तथा ख़राबी को दूर किया जाय। परन्तु यहूदी इस विचार के विरोधी थे। वे जर्मनों की कमज़ोरी से लाभ उठाते थे। उन्होंने व्यापार-संघों को ख़राब कर दिया था। समाजवादी प्रेस को उन्होंने अपने अधिकार में कर लिया था। परन्तु सबसे बुरी बात यह थी कि यहूदियों में चारित्रिक दुर्बलता बहुत थी। हिटलर लिखता है, "काले बालोंवाला यहूदी का लड़का शैतान की-सी हँसी अपने चेहरे पर लिये हुए इस घात में घंटों पड़ा रहता है कि कोई भोली-भाली लड़की उधर से निकले जिसको वह अपने ख़ून से ख़राब कर दे।" धनसम्पन्न यहूदियों को ग़रीब जर्मन लड़कियों के साथ घूमते देखकर उसका ख़ून उबल उठता, और वह उनको घृणा की दृष्टि से देखता। वह लिखता है, "सब देशों से निकाले हुए ये काले यहूदी हमारी जाति की भोली-भाली लड़कियों को ख़राब करते हैं, और इस प्रकार एक ऐसी वस्तु का नाश करते हैं जिसकी पूर्ति संसार में नहीं हो सकती। लाखों जर्मन लड़कियाँ इन भद्दे और नाटे यहूदियों-द्वारा बहकाई जाती हैं।"

अपनी जाति का यह विनाश हिटलर के लिए असहनीय था। जब उसने इस बात को महसूस किया तब वह यहूदियों का कट्टर विरोधी हो गया। दस साल बाद उसने लिखा, "मुझे विश्वास है कि मैं ईश्वर के आदेश के अनुसार कार्य कर रहा हूँ। यहूदियों से लड़ने में, मैं ईश्वर की सृष्टि की रक्षा कर रहा हूँ।"

बहादुर सिपाही

सन् १९१२ ई० के वसन्त में हिटलर म्यूनिच पहुँचा। यह जर्मन-नगर उसको वियना से कितना भिन्न मालूम पड़ा! कुछ ही दिनों में उसे म्यूनिच बहुत प्यारा लगने लगा। वह लिखता है, "संसार के प्रत्येक स्थान की अपेक्षा मेरा उस नगर से अधिक सम्बन्ध है, और इसका कारण यह है कि वह मेरे विकास में बहुत सहायक रहा है।"

म्यूनिच में पहुँचकर हिटलर अपने राजनीतिक विचारों का प्रचार करने लगा। इस समय तक उसने बोलने का खूब अभ्यास कर लिया था। अब वह म्यूनिच के मजदूरों को भाषण देने लगा। वह आस्ट्रिया के हैप्सवर्गवंश के विरुद्ध था। इसलिए वह आस्ट्रिया और जर्मनी की संधि को जर्मनी के हित के लिए हानिकारक समझता था। उसका विचार था कि जर्मनी को अपनी सीमा बढ़ाने के लिए यह आवश्यक था कि वह इँगलैंड से संधि करे, और उससे उपनिवेशों तथा सामुद्रिक शक्ति के लिए स्पर्धा न करे। यदि जर्मनी इँगलैंड से संधि नहीं करना चाहती थी, तो हिटलर के विचार से उसके लिए यह उचित था कि वह रूस से इँगलैंड के विरुद्ध संधि कर ले। परन्तु जब उसने जर्मनी की परराष्ट्र-नीति को भलीभाँति समझा, तब उसको यह मालूम करके निराशा हुई कि जर्मनी उसके सिद्धान्तों के विरुद्ध थी।

सन् १९१४ ई० में योरपीय महायुद्ध प्रारम्भ हो गया। हिटलर को यह सुनकर खुशी हुई कि आर्कड्यूक फर्डीनेंड का वध कर दिया गया और आस्ट्रिया ने युद्ध की घोषणा कर दी। उसके

विचार से जर्मनी के लिए यह एक ऐसा अवसर था जब कि वह अपना विस्तार बढ़ा सकती थी। वह हैप्सवर्गवंश के पक्ष में नहीं था। इसलिए जब आस्ट्रिया ने युद्ध प्रारम्भ किया, तब वह आस्ट्रिया की ओर से लड़ने के लिए नहीं गया। ३ अगस्त, सन् १९१४ ई० में उसने बावेरिया की सेना में भर्ती होने के लिए अर्ज़ी दी, और वह शीघ्र ही पैदल सिपाही के रूप में भर्ती कर लिया गया। अब वह आस्ट्रिया के राष्ट्र का सदस्य नहीं रहा, और सन् १९३२ ई० तक वह बिना देश का व्यक्ति रहा।

नवम्बर, सन् १९१४ ई० में उसका सैनिक जत्था युद्ध में भाग लेने के लिए फ़्लैन्डर्स गया। वहाँ पर उसने बड़ी वीरता तथा साहस का प्रदर्शन किया। अपने राजनीतिक सिद्धान्तों में वह बहुत कट्टर था, और स्वयं को अन्य सिपाहियों से अच्छा समझता था। वह अन्य लोगों से बहुत कम मिलता, और अधिकतर शान्त रहता था। अक्टूबर, सन् १९१६ ई० में एक बम के फट जाने से वह घायल हो गया, और बर्लिन के पास एक अस्पताल में भेज दिया गया। जब उसका घाव अच्छा हो गया, तब वह छुट्टी लेकर बर्लिन गया और फिर म्यूनिच चला गया।

शीघ्र ही हिटलर ने फिर पल्टन में आने के लिए अर्ज़ी दी। उसने लिखा, "मैं म्यूनिच में नहीं रहना चाहता जब कि मेरे साथी युद्ध में लड़ रहे हैं।" वह फिर बुला लिया गया। १४ अक्टूबर, सन् १९१८ ई० को एक ज़हरीली गैस से उसकी हालत ख़राब हो गई। वह लिखता है, "सुबह को मुझे कुछ दर्द-सा महसूस हुआ जो प्रत्येक पाव घंटे बाद बढ़ता गया। सात बजे के क़रीब मेरे पैर लड़खड़ाने लगे और मेरी आँखों में पीड़ा होने लगी। कुछ घंटों बाद मेरी आँखें जलते हुए कोयलों के समान होगईं और मेरे चारों ओर अँधेरा छा गया।" अब युद्ध लगभग समाप्त हो चुका था, और हिटलर युद्ध-क्षेत्र से चला आया।

पल्टन के इतिहास स पता चलता है कि हिटलर अपने कर्त्तव्य का भली भाँति पालन करता था। एक बार उसने तोपों की जलती हुई अग्नि में कूदकर अपने अफ़सर की जान बचाई। परन्तु अपने साथियों में वह विशेष महत्त्व नहीं प्राप्त कर सका। कारण यह था कि वह उनकी हँसी-मज़ाक़ तथा बातचीत में कोई विशेष भाग नहीं लेता था। कभी-कभी वह अपने राजनीतिक विचारों को बड़े ज़ोर से ज़रूर कह डालता था। जब उसके साथी उसके विचारों पर हँसते, तब वह उनको विश्वास दिलाता कि वे लोग भविष्य में उसकी बातों को भली भाँति सुनेंगे। कहा जाता है कि एक बार एक मनुष्य से यह कहते सुनकर कि जर्मनी के जीतने अथवा हारने से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, हिटलर ने उसके घूँसे मारे।

अपनी वीरता के कारण सन् १९१४ ई० में हिटलर को 'आइरन क्रास' नामक द्वितीय श्रेणी का तमग़ा मिला। ४ अगस्त, सन् १९१८ ई० में उसको प्रथम श्रेणी का 'आइरन क्रास' दिया गया। यह तमग़ा सबसे वीर सिपाहियों को प्रदान किया जाता था। पल्टन के सरकारी काग़ज़ों में हिटलर को दिये गये तमग़े का ज़िक्र नहीं मिलता है। इसलिए इस सम्बन्ध में सन्देह है कि यह तमग़ा उसको अपनी वीरता-द्वारा मिला अथवा किसी अन्य प्रकार से। हिटलर के साथी कहते हैं कि वह उसकी वीरता तथा साहस के कारण दिया गया था। एक बार जब वह सन्देश लेकर जा रहा था, तब अकस्मात् उसको लगभग सोलह फ़्रांसीसी सिपाहियों का सामना करना पड़ा। हिटलर ने उन पर गोली चलाई और उनको बन्दी बना लिया। टॉम डेल्मर से बातचीत करते हुए इस सम्बन्ध में हिटलर ने कहा कि जब वह जर्मन-सेना के पास सन्देश लेकर जा रहा था, तब गोलों की आग से बचकर वह शत्रुओं की खाई के पास पहुँच गया। वहाँ से वह

लौट नहीं सकता था। ऐसी अवस्था में सैनिक अफ़सर की भाँति उसने खाई के लोगों को आवाज़ दी "बाहर निकलो।" ज्यों ही उनका नेता बाहर आया हिटलर ने उसको गोली से मार डालने का भय दिखाकर बन्दी बना लिया। एक-एक करके उसने उसके साथियों को भी क़ैद कर लिया। इस प्रकार सोलह क़ैदियों को लेकर वह जर्मन-सेना के पास आया, और अपनी वीरता के कारण उसने प्रथम श्रेणी का 'आइरन क्रास' पाया।

युद्ध-क्षेत्र से चले आने पर हिटलर पेज़वाक के अस्पताल में दाखिल हो गया। एक दिन सुबह को कुछ मल्लाह चिल्लाते हुए निकले कि समुद्री सेना ने विद्रोह कर दिया। उन्होंने सब लोगों को विद्रोह में शामिल होने के लिए पुकार लगाई। हिटलर क्रोध में भरकर चिल्ला उठा, "थोड़े से यहूदियों के लड़के हमारे राष्ट्र की स्वतंत्रता के नेता थे। उनमें से एक भी युद्ध में नहीं गया था। इन लोगों ने मिलकर देश को बरबाद कर दिया।" दस दिन बाद खबर मिली कि युद्ध में जर्मनी की हार हुई। क़ैसर भाग गया। सेना ने विद्रोह कर दिया। बीस लाख जर्मन युद्ध में मारे गये। हिटलर लिखता है, "मैं क्रोध और शर्म से जल उठा। इस दुर्दशा को सुनकर मेरी आंखों का दर्द भाग गया। मेरे हृदय में घृणा उत्पन्न हुई। मैंने जाना कि नीच विश्वासघाती यहूदियों के कारण जर्मनी की हार हुई।"

"मैंने एक राजनीतिज्ञ बनने का प्रण कर लिया।"

नाज़ी पार्टी की स्थापना

योरपीय महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी में प्रजातंत्रशासन स्थापित किया गया। एक समाजवादी सरकार की देख-रेख में शासन-प्रबन्ध होने लगा। वर्साई की सन्धि की शर्तों से जर्मनों के हृदयों पर वज्राघात हुआ। उन पर बहुत बड़ा हर्जाना रक्खा गया, उनके देश की सीमा कम कर दी गई, और उनकी देख-भाल के लिए विदेशी सेना रख दी गई जिसके खर्चे का भार उन्हें सहन करना पड़ा। ऐसी दशा में आर्थिक व्यवस्था ख़राब हो गई। बेकारी बढ़ गई, वेतन कम हो गया, और लोग भूखों मरने लगे। मार्क्स के सिद्धान्तों का जर्मनी में प्रचार होने लगा। यहूदियों ने ऊँचे-ऊँचे पदों पर अधिकार कर लिया। एक ओर लाखों आदमियों के खाने का कोई प्रबन्ध नहीं था, और दूसरी ओर यहूदी भोग-विलासमय जीवन व्यतीत करने लगे। सड़कों पर कुत्सित दृश्य दिखाये जाने लगे। अप्रैल में बावेरिया में मज़दूरों और सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया, और म्यूनिच में सोवियट दल का शासन स्थापित हुआ। अन्य स्थानों पर भी हड़तालें की गईं। देश में चारों ओर अशान्ति फैल गई। ऐसी दशा में यदि कोई व्यक्ति जर्मनी की अवस्था को ठीक बनाकर उसको फिर से शक्तिशाली बनाने का निश्चय जनता के हृदय पर कर सकता तो अवश्य ही समस्त जर्मनी उसको हृदय से अपना लेती। हिटलर ने इन परिस्थितियों से लाभ उठाया, और वह अपने राजनीतिक विचारों का प्रचार करने का प्रयत्न करने लगा।

हिटलर इस समय म्यूनिच में था। वहाँ पर सोवियट-शासन स्थापित हो चुका था। पूँजीपतियों को बुरी तरह से दबाया जा रहा था। हिटलर ने समष्टिवादी सरकार के विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये। परिणाम यह हुआ कि २७ मई, सन् १९१९ ई० को तीन सिपाही उसको गिरफ़्तार करने के लिए आ गये। हिटलर ने उनकी ओर बन्दूक़ का निशाना लगाया, और तीनों आदमी भाग गये।

इसी बीच में बर्लिन की सरकार ने उत्तरी जर्मनी में बोल्शविकों के विद्रोह को दबाने में सफलता प्राप्त की। अब बावेरिया में शान्ति स्थापित करने के लिए एक सेना भेजी गई। जब विद्रोह दबा दिया गया, तब हिटलर ख़ुफ़िया पुलिस में भर्ती हो गया। उसका काम था मज़दूरों की सभाओं में जाना, और उनके सम्बन्ध में अपने अफ़सरों को रिपोर्ट देना। अब हिटलर ने बहुत-से साथी बना लिये और उनके साथ वह अपने कार्य-क्रम के सम्बन्ध में अक्सर बातचीत करने लगा। धीरे-धीरे उसने एक नई पार्टी की नींव डालने का निश्चय कर लिया जिसका नाम वह 'सोशल रिवोल्यूशनरी पार्टी' अर्थात् 'सामाजिक क्रान्तिकारी पार्टी' रखना चाहता था।

इसी समय उसको गोटफ़्रेड फ़्रेडर के व्याख्यान सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उसके पूँजी-सम्बन्धी विचार हिटलर को बहुत पसंद आये। वह इस परिणाम पर पहुँचा कि फ़्रेडर के पूँजी-सम्बन्धी विचारों के आधार पर एक नई पार्टी की स्थापना की जा सकती है। इसके बाद एक सभा में वह यहूदियों के विरुद्ध बोला। इस अवसर पर उसको इतनी सफलता मिली कि वह शीघ्र ही म्यूनिच की पल्टन में 'शिक्षक' के रूप में भर्ती कर लिया गया।

एक दिन हिटलर को आज्ञा दी गई कि वह 'जर्मन वर्कर्स

(मज़दूर) पार्टी' की सभा में जाकर उसके सम्बन्ध में रिपोर्ट दे। इस सभा में फेडर बोलनेवाला था। इस पार्टी का अधिष्ठाता एण्टन ड्रैक्सलर था, और उसके लगभग साठ सदस्य थे जिनमें से वास्तव में छः सदस्य पार्टी के सिद्धान्तों को पूरी तौर से मानते थे। जब फेडर अपना भाषण समाप्त कर चुका, तब एक प्रोफ़ेसर उसकी उक्तियों का उत्तर देने के लिए खड़ा हुआ। राष्ट्रीय दशा को ठीक करने के लिए उसने यह प्रस्ताव रक्खा कि बावेरिया को प्रशा से पृथक् करके आस्ट्रिया के जर्मन भाग में शामिल कर दिया जाय। यह सुनकर हिटलर को इतना क्रोध आया कि वह एकदम खड़ा हो गया और उसने वक्ता को इतनी गालियाँ सुनाईं कि वक्ता महोदय चुपचाप वहाँ से चलते बने। सभा समाप्त होने पर हिटलर वहाँ से चलने लगा। सभापति एण्टन ने उसको एक पत्र दिया जिसमें उसने अपने व्यक्तिगत विचार व्यक्त किये थे। दूसरे दिन हिटलर ने जब उस पत्र को पढ़ा, तब उसको मालूम हुआ कि सभापति के विचार उससे बहुत-कुछ मिलते-जुलते थे।

कुछ दिनों बाद इसी पार्टी की ओर से उसको एक कार्ड मिला जिसमें लिखा था कि वह पार्टी का सदस्य बना लिया गया। हिटलर को यह पढ़कर आश्चर्य हुआ। वह अपनी एक अलग पार्टी बनाना चाहता था। वह जानता था कि 'जर्मन वर्कर्स पार्टी' का कोई संघटन नहीं था और उसकी आर्थिक दशा इतनी ख़राब थी कि उसके पास रबड़ की एक मुहर तक नहीं थी। दो दिन तक वह लगातार इस विषय पर सोचता रहा। अंत में वह पार्टी का सदस्य बन गया। इस समय उसकी अवस्था तीस वर्ष की थी। वह लिखता है, "यह मेरे जीवन की परिवर्तनकारी घटना थी।"

अब हिटलर ने पार्टी का काम अपने हाथों में ले लिया।

उसने पार्टी की सभायें कीं, और स्वयं ज़ोरदार भाषण दिये। कुछ ही दिनों में पार्टी का संघटन हो गया और वह म्यूनिच की एक बड़ी राजनीतिक संस्था हो गई। हिटलर ने पार्टी का नाम 'दयात्शे आरबाइतेर पार्ते' से बदलकर 'नैत्शीनाल सोशलिस्तेन दयात्शे आरबाइतेर पार्ते' रख दिया। पार्टी का नाम बड़ा होने के कारण लोग उसे नैत्शी या नाज़ी पार्टी कहने लगे। इस प्रकार नाज़ी पार्टी की नींव पड़ी।

फ़रवरी, सन् १९२० ई० में पार्टी ने अपना कार्यक्रम सदस्यों के सम्मुख रक्खा जिसमें पच्चीस बातें थीं। हिटलर कार्यक्रम की अपेक्षा शक्ति में अधिक विश्वास करता था। उसका असली उद्देश्य यह था कि कुछ दृढ़-प्रतिज्ञ साथियों की सहायता से जर्मनी पर अधिकार कर लिया जाय। वह जानता था कि यदि राजनीतिक शक्ति उसके हाथ में आगई, तो फिर नये सिद्धान्तों के अनुसार शासन प्रारम्भ करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

अब उसने पार्टी के झंडे और तमग़े के रूप को निश्चित किया। उसने प्राचीन जर्मनी के काले, सफ़ेद और लाल रंगों को चुना, परन्तु उनका परिमाण भिन्न था ताकि वह अपनी इच्छानुसार झंडे को नया रूप दे सके। समाजवादियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसने लाल रंग को अधिक परिमाण में रक्खा। सफ़ेद रंग के ऊपर उसने काला स्वस्तिक चिह्न निश्चित किया। इस चिह्न का राष्ट्रीय महत्त्व था, क्योंकि इसको उन बाल्टिक सैनिक जत्थों ने स्वीकार किया था जो बोल्शविक सेना से लड़कर उत्तरी जर्मनी में समष्टिवादी विद्रोह को दबा सके थे। अपनी सभाओं की रक्षा के लिए उसने कुछ नौजवानों का संघटन किया जिनका नाम 'स्टॉर्म ट्रूप्स' रक्खा गया। इनका कर्त्तव्य यह था कि सभा में उपद्रव मचानेवाले लोगों को वे शीघ्र ही दंड दें और समष्टिवादी स्थानों पर आक्रमण करके उनकी

शक्ति का विनाश करें। एक बार स्वयं उसने समष्टिवादी वक्ता को मारा जिसके परिणाम में उसको चार सप्ताह की जेल की गई।

अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिटलर के लिए यह आवश्यक था कि वह कुछ दृढ़ निश्चयवाले साथियों को चुने। भाग्यवश उसे कई अच्छे साथी मिल गये। सबसे पहले उसने कप्तान रोहम को चुना। रोहम न केवल पार्टी के संगठन में ही सहायक हुआ, वरन् उसने बहुत-से सिपाहियों को पार्टी में भर्ती करके उसको शक्तिशाली भी बनाया। डैट्रिख़ एकार्ट ने पार्टी के विकास में बहुत बड़ा भाग लिया। सन् १९२३ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। सन् १९२२ ई० में गोएरिंग ने पार्टी में प्रवेश किया। उसने हवाई शक्ति को बढ़ाने में अद्भुत प्रतिभा दिखाई। रुडोल्फ हैस भी पार्टी का सदस्य हो गया। उसने अपनी योग्ता-द्वारा शीघ्र ही हिटलर से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर लिया। जार्ज स्ट्रैसर ने पार्टी में प्रवेश करके बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया और वह अन्य सदस्यों की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली प्रतीत होने लगा। इन साथियों की सहायता से हिटलर शक्ति संचित करने में सफल हो सका।

प्रारम्भ से ही हिटलर के समस्त कार्य दो मूल विश्वासों पर आधारित थे। पहला तो था व्यक्तिगत नेतृत्व का महत्त्व और दूसरा था लोगों में जोश पैदा करनेवाले प्रोपेगैण्डा की शक्ति। वह चाहता था कि बड़ी-बड़ी सभाओं में ज़ोरदार भाषणों-द्वारा जनता को अपनी ओर आकर्षित किया जाय। २४ फ़रवरी को उसने एक बहुत बड़ी सभा की, जिसमें लगभग दो हज़ार आदमी शामिल हुए। समष्टिवादी अधिक संख्या में थे, परन्तु हिटलर ने कुछ चिन्ता नहीं की। उसने इतना जोशीला भाषण दिया कि लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने अपनी उक्तियों-द्वारा नहीं, वरन् अपने जोश-द्वारा जनता को अपनी ओर खींचा।

अब वह सप्ताह में एक बार बोलने लगा। युद्ध में पराजय का सारा दोष उसने यहूदियों पर रक्खा और वर्साई की सन्धि की तीव्र आलोचना की। उसने ज़ोरदार शब्दों में कहा कि युद्ध में जर्मनी की हार के कारण थे—यहूदी और समाजवादी। पराजित जर्मनों पर इस उक्ति का बहुत प्रभाव पड़ा और उनके हृदयों में देश-भक्ति जाग्रत हो उठी। कुछ ही दिनों में हिटलर एक सप्ताह में पार्टी की दो सभायें करने लगा। धीरे-धीरे उसकी शक्ति बहुत बढ़ गई और उसके भाषणों को सुनने के लिए जर्मनों की भीड़ लगने लगी। भाषण सुनने के पश्चात वक्ता के प्रति असीम श्रद्धा उनके हृदयों में उत्पन्न होने लगी। हिटलर लिखता है, "हमारी सभायें प्रारम्भ होने से लगभग पौन घंटा पहले मज़दूरों से ठसाठस भर जाती थीं।"

कुछ दिनों बाद पार्टी किंडलकेलर चली गई, जहाँ पर लगभग पाँच हज़ार आदमी सभाओं में शामिल होने लगे। अब हिटलर ने पेरिस के समझौते के विरोध में एक बहुत बड़ी सभा करने की योजना की। उसने म्यूनिच का सबसे बड़ा हॉल सरकस क्रोन किराये पर लिया। निश्चित दिन के प्रातःकाल को उसके साथियों ने सम्पूर्ण नगर में सभा में शामिल होने के लिए घोषणा कर दी। हिटलर लिखता है, "उन दिनों यह बहुत बड़े साहस का कार्य था। यह बिल्कुल अनिश्चित था कि हम इतने बड़े हॉल को भर सकेंगे, और साथ ही साथ सभा के बीच में समाप्त हो जाने का भी भय था। यह बात निश्चित थी कि यदि इस प्रयास में असफलता रही, तो हम लोग बहुत समय तक सिर नहीं उठा सकेंगे।" परन्तु उसने कुछ भी चिन्ता नहीं की। उपद्रव को दबाने के लिए उसने ४६ मज़बूत आदमियों को पहले से तैयार कर लिया। हॉल आदमियों की भीड़ से खचाखच भर गया। हिटलर बोलने के लिए खड़ा हुआ। एक घंटे बाद शत्रुओं ने

उपद्रव के लिए संकेत किया। कुछ लोग प्लेटफ़ार्म की ओर तेज़ी से दौड़े। एकदम भूखे भेड़ियों की तरह ४६ आदमी उन पर टूट पड़े। आध घंटे में ही हॉल शत्रुओं से ख़ाली हो गया। हिटलर ने फिर बोलना प्रारम्भ किया। ढाई घंटे तक उसने ज़ोरदार भाषण दिया।

अब हिटलर ने एक सेना बनाई जिसका नाम 'रायख़सवेर' रक्खा गया। यह सेना रोहम की देख-भाल में रक्खी गई। वॉन एप के मित्रों ने चंदा दिया जिसके द्वारा पार्टी ने एक साप्ताहिक पत्र चलाया जो नाज़ी-पार्टी का प्रधान पत्र बन गया।

मार्च, सन् १९२० ई० में बर्लिन में एक विद्रोह हुआ जो 'कैप पुत्श' के नाम से प्रसिद्ध है। राष्ट्रवादी-पार्टी ने, मुख्यतः जनरल लुतविज़ की अध्यक्षता में सेना के लोगों ने, बर्लिन-सरकार को पलट दिया, और डाक्टर कैप को चान्सलर के रूप में स्थापित किया। म्यूनिच में वॉन एप और रोहम ने कैप का सहयोग देना चाहा। वे हिटलर और एकहार्ट के साथ बर्लिन पहुँचे। परन्तु वहाँ पहुँचने पर उनको मालूम हुआ कि जनता कैप के विरुद्ध हो गई थी और कैप अपने साथियों के साथ बर्लिन छोड़कर भाग गया। हिटलर को भी अपने साथियों सहित बर्लिन से भागना पड़ा। इस असफलता से उसके हृदय पर बहुत चोट पहुँची।

सन् १९२३ ई० की ग्रीष्म-ऋतु उसने एक पहाड़ी झोंपड़ी में बिताई। यहीं पर उसने अपना आत्म-चरित्र लिखना प्रारम्भ किया जो चार साल बाद प्रकाशित हुआ।

म्यूनिच पुत्श

वर्साई की सन्धि के अनुसार यह निश्चित किया गया था कि जर्मनी फ़्रांस को प्रतिवर्ष क़िस्तों के रूप में हर्जाना दे। जर्मनी की आर्थिक दशा इस समय बहुत ख़राब थी। इसलिए वह हर्जाना न दे सकी। फ़्रांस ने रूहर पर आक्रमण कर दिया जो जर्मनी के अधिकार में था। जर्मनों ने इसका विरोध किया। पहले तो उन्होंने सैनिक-शक्ति-द्वारा फ़्रांसीसियों का सामना किया, परन्तु अधिक सफलता नहीं मिली। बाद में उन्होंने हड़तालें कर दीं जिससे तमाम जर्मनी में अशान्ति फैल गई।

जर्मनी की सरकार ने विरोधियों की सहायता करने के लिए काग़ज़ का सिक्का चलाया। यह काग़ज़ का सिक्का इतनी अधिक संख्या में चला दिया गया कि उसका कोई मूल्य नहीं रहा। जर्मनी में आर्थिक संकट उपस्थित हो गया। नवम्बर में एक सोने का मार्क (जर्मनी का सिक्का) का मूल्य एक अरब काग़ज़ी मार्क के बराबर हो गया। मज़दूरों और किसानों को बहुत कष्ट हुआ, क्योंकि वस्तुओं का मूल्य गिर गया। पूँजी-पतियों ने इस परिस्थिति से ख़ूब लाभ उठाया।

इसी समय जर्मनी की नई सरकार ने रूहर में फ़्रांसीसियों की नई शर्तों को स्वीकार कर लिया। हिटलर के दृष्टिकोण से यह जर्मनी के साथ विश्वासघात था। वह शीघ्र ही पहाड़ी झोंपड़ी से चल पड़ा और जर्मनी की अन्य पार्टियों के नेताओं से मिला। एक जोशीले भाषण में उसने सरकार की नीति की आलोचना की। २६ सितम्बर, सन् १९२३ ई० को 'जर्मन फ़ाइटिंग लीग' बनाई गई और हिटलर उसका नेता बना।

रूहर में फ्रांसीसियों की शर्तों को स्वीकार कर लेने से समस्त जर्मन पार्टियाँ नई सरकार के विरुद्ध हो गई। बावेरिया के प्रान्तीय शासन का प्रधान गस्ताव वॉन काहर और सेनापति लोसो केन्द्रीय सरकार को पलट देने के लिए परस्पर सलाह करने लगे। हिटलर और वॉन लुडनडोर्फ भी उनसे मिल गये। लुडनडोर्फ योरपीय महायुद्ध में बहुत वीरता के साथ लड़ चुका था। वह कैप पुत्श में हिटलर को सहायता भी दे चुका था। हिटलर को आशा थी कि लुडनडोर्फ के विद्रोह में शामिल होने से सेना उसके पक्ष में हो जायगी। फिर बर्लिन की सरकार को पलटने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

परन्तु वॉन काहर और लोसो दृढ़निश्चय के आदमी नहीं थे। वे अभी तक हिचकते थे और इस प्रतीक्षा में थे कि अन्य स्थानों में भी विद्रोह हों। लोसो ने हिटलर से कहा, "५१ प्रति-सैकड़ा सफलता की सम्भावना होते ही मैं विद्रोह में शामिल हो जाऊँगा।" हिटलर शीघ्रता करना चाहता था। केवल एक ही साल पहले मुसोलिनी ने रोम पर धावा बोलकर सरकार को अपने अधिकार में कर लिया था। हिटलर उसके उदाहरण से लाभ उठाकर शीघ्र ही जर्मनी पर अपना अधिकार करना चाहता था।

अब हिटलर ने वॉन काहर और लोसो को अपनी ओर मिलाने के लिए एक तरकीब सोची। ८ नवम्बर को काहर और लोसो एक सभा में भाषण देनेवाले थे। हिटलर ने सैकड़ों सशस्त्र 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' (हिटलर के सिपाही) की सहायता से उस हाल को घेर लिया और द्वार पर एक मशीनगन लगवा दी। उसने अपने साथियों को लेकर हॉल में प्रवेश किया और छत पर बन्दूक़ की गोली चलाई। यह देखते ही सभा में सन्नाटा

छा गया। गोएरिंग और ग्रैफ को साथ लेकर हिटलर शीघ्र ही प्लेटफार्म पर चढ़कर अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाने लगा।

"राष्ट्रीय क्रान्ति शुरू हो गई। हॉल ६०० सशस्त्र आदमियों द्वारा घेर लिया गया है। यहाँ से कोई भी व्यक्ति नहीं जा सकता। अगर ज़रा भी उपद्रव हुआ तो मैं भीतर मशीनगन लगवा दूँगा। सेना और पुलिस हमारी ओर आगई है। बावेरिया की सरकार पलट दी गई है। राष्ट्रीय सरकार हटा दी गई। एक नई सरकार बनाई जायगी। सेना और पुलिस के अहातों पर अधिकार कर लिया गया है।"

सब लोग भयभीत हो गये। तीन हज़ार आदमियों की सभा में से किसी को भी मुँह खोलने का साहस न हुआ। हिटलर वॉन काहर, सेनापति लोसो और कर्नल वॉन सेसर को एक कमरे में ले गया। सशस्त्र स्टॉर्म ट्रूपर्स ने चारों ओर से कमरे को घेर लिया। हिटलर ने कहा, "मेरी आज्ञा के बिना कोई भी मनुष्य इस कमरे से जीता हुआ नहीं जा सकता है।" इसके बाद उसने स्वयं को नई सरकार का सभापति, वॉन काहर को बावेरिया का संरक्षक, वॉन लोसो को सेना का मन्त्री और वॉन सेसर को पुलिस का मन्त्री घोषित किया। जब उन लोगों ने कोई उत्तर नहीं दिया, तब हिटलर ने पिस्तौल निकालकर कहा, "मेरे पास चार गोली शेष हैं, तीन अपने साथियों के लिए यदि वे मुझको छोड़ें और एक अपने लिए।" तीनों ने हिटलर की घोषणा को स्वीकार कर लिया। अब हिटलर हॉल में आया जहाँ पर सेनापति लुडनडोर्फ बुला लिया गया था। उसने सेनापति का पद स्वीकार कर लिया।

यह खबर शीघ्र ही तमाम शहर में फैल गई। लोगों का जोश उमड़ आया, और नई सरकार का स्वागत करने के लिए सड़कों पर भीड़ लग गई। परन्तु सेना ने क्रान्तिकारियों का

साथ नहीं दिया। नीचे अफ़सरों की आज्ञा से वह पुलिस से मिलकर विद्रोह को दबाना चाहती थी। हिटलर के जाते ही वॉन काहर और वॉन लोसो ने तार-द्वारा बर्लिन की सरकार को विद्रोह की सूचना दे दी, और कहा कि शक्ति-द्वारा उनको विद्रोह में शामिल होने के लिए मजबूर किया गया था। वहाँ से उत्तर मिला कि प्रधान सेनापति वॉन सीक्ट शीघ्र ही सेना के साथ विद्रोह को दबाने के लिए भेजा जायगा।

अब हिटलर ने म्यूनिच के लोगों में जोश पैदा करना शुरू किया। उसने कहा, "मैं इस समय उस प्रण को पूरा करता हूँ जो मैंने एक घायल की दशा में पाँच साल पहले सेना के अस्पताल में किया था कि मैं तब तक आराम नहीं करूँगा जब तक नवम्बर के अपराधी (सरकार) हटा नहीं दिये जायँगे और जर्मनी फिर से शक्तिशाली, स्वतंत्र और गौरवान्वित न हो जायगी!" सुबह को हिटलर ने हज़ारों स्टॉर्म ट्रूपर्स एकत्र कर लिये, और रोहम ने सेना के प्रधान निवासस्थानों पर अधिकार कर लिया।

हिटलर को आशा थी कि यदि म्यूनिच की जनता उसके आन्दोलन की पूरी सहायता कर सकी, तो वह सफल हो जायगा। इसलिए उसने यह निश्चय किया कि नाज़ी नेता स्वस्तिक झंडों के साथ स्टॉर्म ट्रूपर्स को लेकर सड़कों से निकलें, और जनता में आन्दोलन की सहायता करने के लिए जोश पैदा करें। हिटलर का विश्वास था कि सेनापति लुडनडोर्फ को आन्दोलन में भाग लेते देखकर सेना गोली नहीं चलायेगी।

दिन के तीन बजे भीड़ सड़कों पर रवाना हुई। लगभग तीन हज़ार आदमी थे जिनमें से कुछ सशस्त्र थे और कुछ शस्त्रहीन। पहली क़तार में हिटलर, लुडनडोर्फ और तीन अन्य नाज़ी-नेता चले। दूसरी क़तार में गोएरिंग था। पीछे-पीछे

स्टॉर्म ट्रूपर्स और भीड़ चली। जैसे ही सब लोग नगर के बीच में पहुँचे, हज़ारों आदमी जोश में भरकर आन्दोलन में शामिल हो गये।

लुडविग पुल पर पहुँचते ही कुछ सशस्त्र सिपाही गोली चलाने के लिए तैयार हो गये। भीड़ में से एक आदमी चिल्ला पड़ा, "गोली मत चलाओ। हिटलर और लुडनडोर्फ यहाँ पर मौजूद हैं।" सिपाहियों ने बन्दूकें नीची कर लीं और भीड़ ने नगर के चौराहे की ओर बढ़ना शुरू किया। वहाँ पहुँचकर भीड़ ने देखा कि कुछ पुलिस चौराहे पर खड़ी हुई थी। थोड़ी देर में और पुलिस आगई। उसके पीछे हथियारों और मशीनगनों से भरी हुई मोटरें आगईं।

हिटलर का एक साथी अलरिख़ ग्रैफ लुडनडोर्फ की ओर संकेत करके चिल्लाया, "क्या तुम अपने सेनापति पर गोली चलावोगे?" पुलिस फिर हिचकी, परन्तु शीघ्र ही एक गोली चली। कहा नहीं जा सकता कि किस ओर से पहले गोली चली। गोली चलते ही नागरिक भाग खड़े हुए। स्टॉर्म ट्रूपर्स ने भी आगे बढ़कर गोली चलाई। थोड़ी ही देर में शान्ति हो गई। चौदह नाज़ी सैनिक और चार पुलिस के सिपाही मारे गये। गोएरिंग घायल हुआ, और हिटलर के कन्धे में चोट लगी। दोनों घायल नेताओं को उनके साथियों ने कार में बिठाकर रवाना कर दिया। गोएरिंग आस्ट्रिया को भाग गया और फिर इटली चला गया। हिटलर ने म्यूनिच के समीप उफिंग के एक मकान में शरण ली। लुडनडोर्फ पकड़ा गया। कुछ दिनों बाद हिटलर भी पकड़ा गया।

२६ फ़रवरी, सन् १९२४ ई० को अदालत में हिटलर, लुडनडोर्फ, रोहम तथा सात अन्य व्यक्तियों के भाग्य का निबटारा हुआ। अदालत के चारों ओर भीड़ जमा थी। हिटलर चार

घंटे तक लगातार बोलता रहा और बीच-बीच में भीड़ तालियाँ पीटती रही। हिटलर ने कहा, "मेरा विश्वास है कि एक समय वह आयेगा जब जनता, जो आज सड़कों पर स्वस्तिक झंडों को फहराती है, उन लोगों को अपनी ओर मिला सकेगी जिन्होंने ९ नवम्बर को हम पर गोली चलाई। हमारी बनाई हुई सेना दिन-प्रति-दिन, घंटा-प्रति-घंटा तेज़ी के साथ बढ़ती हुई चली जा रही है।" सज़ा के सम्बन्ध में उसने कहा, "हमको चाहे हज़ार बार दोषी ठहराओ। इतिहास में चिरन्तन न्याय का देवता अदालत के इस न्याय को घृणापूर्वक फाड़ डालेगा, क्योंकि हम लोग निर्दोष हैं।"

जनता के जोश तथा बड़े-बड़े अफ़सरों के हस्तक्षेप पर ध्यान देते हुए अदालत ने हिटलर को पाँच वर्ष की सज़ा दी जो राज-द्रोह के लिए सबसे कम दंड था। लुडनडोर्फ छोड़ दिया गया। उसने ज़ोर से कहा, "मैं समझता हूँ कि यह मेरी वर्दी के लिए एक शर्म की बात है।"

म्यूनिच पुत्श असफल रहा। कुछ वर्षों के लिए नाज़ी-आन्दोलन शिथिल पड़ गया। उसके बड़े-बड़े नेता या तो जेल में या विदेशों में जीवन व्यतीत करने लगे। जर्मनी का डिक्टेटर होने पर हिटलर ने एक बार वार्ड प्राइस से कहा, "मैं मुसोलिनी के उदाहरण पर पूरी तरह से चल रहा था। मैंने समझा था कि 'म्यूनिच पुत्श' 'बर्लिन के धावे' का प्रारम्भ होगा। जिसके द्वारा हम शक्ति प्राप्त कर सकेंगे। उसकी असफलता से मैंने यह पाठ सीखा कि प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय पुनर्जन्म के निजी तरीक़े निकाले।"

विकास का समय

रात के सन्नाटे में टाइप-राइटर की खट-खट ध्वनि दूर-दूर तक सुनाई पड़ रही है। एक टिमटिमाते हुए दीपक की प्रकाश-रेखायें अन्धकार की काली चादर को चीरकर चारों ओर विकीर्ण हो रही हैं। एक छोटे-से कमरे में बैठे हुए दो हट्टे-कट्टे नौजवान कुछ कर रहे हैं। एक धीरे-धीरे कुछ बोल रहा है और दूसरा उसके शब्दों को टाइप कर रहा है।

स्थान है लैंड्सबर्ग क़िले की जेल। पहला व्यक्ति है हिटलर और दूसरा है उसका साथी हैस। टाइप का विषय है हिटलर का आत्म-चरित्र जो भविष्य में जर्मनी के निवासियों की बाइबिल बना।

जेल में हिटलर को सब प्रकार की सुविधायें दी गईं। उसका कमरा काफ़ी बड़ा और खुला हुआ था जिसमें हवा और धूप आसानी से जा सकती थी। कमरे के भीतर चारपाई, मेज़, कुर्सी और अलमारी थी। सायंकाल को हिटलर अन्य क़ैदियों से बातचीत कर सकता था। एक महीने के बाद उसको क़िले की दीवारों के बाहर प्रतिदिन दो घंटे तक टहलने की आज्ञा मिल गई। उसको अच्छा खाना दिया जाता था।

हिटलर की अवस्था इस समय पैंतीस वर्ष की थी। उसके राजनीतिक सिद्धान्त निश्चित हो चुके थे। उसको जीवन का काफ़ी अनुभव हो गया था। अब उसने जेल का समय 'आत्म-चरित्र' लिखने में लगाया। वास्तव में उसने स्वयं बहुत कम लिखा। वह बोलता जाता था और उसका साथी हैस उसको ज्यों का त्यों लिखता जाता था।

हिटलर का आत्म-चरित्र उसके जीवन की घटनाओं पर इतना प्रकाश नहीं डालता जितना कि उसके राजनीतिक सिद्धान्तों पर। लगभग आठ सौ पृष्ठों में यहूदी, कैथोलिक, ईसाई-मत, समष्टिवाद, पूँजीवाद, व्यापार-संघ, स्त्री, विवाह, शिक्षा, युद्ध, जैक, फ्रांस, रूस और ब्रिटेन के सम्बन्ध में विवेचन किया गया है।

इस पुस्तक के सम्बन्ध में सरकारी रिपोर्ट में लिखा गया, "इसमें हिटलर शांत और समझदार, गम्भीर, मिहनती और विचारशील है।" आगे चलकर यह पुस्तक इतनी अधिक प्रिय हुई कि इसकी लगभग पचास लाख प्रतियाँ बिक गईं जितनी शायद बाइबिल को छोड़कर संसार की और किसी पुस्तक की नहीं बिकीं।

हिटलर अब बाहर निकलना चाहता था। उसकी पार्टी कमज़ोर होती जाती थी। उसने हैस से कहा, "पार्टी को मज़बूत बनाने में मुझे पाँच साल लग जायँगे।

केवल नौ महीने ही बीत पाये थे कि हिटलर को छोड़ने की आज्ञा दे दी गई। २० दिसम्बर, सन् १९२४ ई० को जब हिटलर के साथी उसके कमरे में 'बड़े दिन का वृक्ष' लगा रहे थे, वह छोड़ दिया गया। अपने पुराने कपड़े पहनकर हिटलर ने जेल के साथियों से बिदा ली। दरवाज़े पर आकर उसने जेल के गवर्नर से हाथ मिलाया। गवर्नर ने कहा, "हर हिटलर, मैं भी राष्ट्रीय समाजवादी हूँ।"

जेल से छूटने के बाद हिटलर ने देखा कि उसकी पार्टी की दशा बहुत खराब थी, और प्रजातंत्र सरकार शक्तिशाली हो गई थी। उसकी अनुपस्थिति में लुडनडोर्फ तथा स्ट्रैसर ने पार्टी को मज़बूत बनाना चाहा, परन्तु वे असफल रहे। पार्टी की सभायें बन्द हो गई थीं। फ्रांसीसियों ने रूहर को खाली कर दिया था

और देश की आर्थिक दशा पहले से अच्छी हो गई थी। इसलिए लोगों ने प्रजातंत्र सरकार का विरोध कम कर दिया था। हिटलर के पास इस समय केवल ७०० मार्क्स (जर्मनी का सिक्का) थे जिनको उसने अपने साथियों में बाँट दिया।

अब हिटलर ने बावेरिया के नये प्रधान मंत्री हैल्ड को समाजवादियों के विरुद्ध सहायता देने का वचन दिया, परन्तु उसको सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। बावेरिया की सरकार ने हिटलर पर प्रतिबन्ध लगाया कि तीन साल तक वह सरकार के विरुद्ध किसी प्रकार का भाषण न दे, नहीं तो वह फिर शेष तीन साल के लिए जेल में भेज दिया जायगा।

२७ फ़रवरी, सन् १९२५ ई० को हिटलर ने दूसरी बार नाज़ी पार्टी की स्थापना की। उसने चिल्लाकर अपने साथियों से कहा, "सब झगड़े मिट जाने चाहिए! भूतकाल की बातें समाप्त हो गईं। आज से हम शत्रु के मृत शरीर पर चढ़ेंगे, या वह हमारे शरीरों पर।" नौजवानों ने उसका साथ दिया। हिटलर के 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' में हज़ारों नौजवान भर्ती हो गये। इसी समय उसका कप्तान रोहम से झगड़ा हो गया। रोहम चाहता था कि इन नौजवानों को वह सैनिक शिक्षा दे, और फिर शक्ति के द्वारा सरकार को पलट दिया जाय। परन्तु हिटलर इस कार्य की असफलता का भली भाँति अनुभव कर चुका था। अब उसने निश्चय कर लिया कि वह क़ानूनी तरीक़ों से सरकार को अपने हाथ में लेगा। रोहम अलग हो गया। लुडनडोर्फ पहले ही हिटलर का साथ छोड़कर चला गया था। इसी समय गोएबिल्स नाज़ी पार्टी में आगया, और उसने अपने भाषणों-द्वारा पार्टी को मज़बूत करना शुरू किया।

अब नाज़ी नेताओं ने यहूदियों और समष्टिवादियों के विरुद्ध भाषण देने प्रारम्भ किये। हिटलर ने कहा, "जर्मनी के निवा-

सियो, तुम अपनी ग़रीबी के लिए स्वयं उत्तरदायी नहीं हो। तुम यहूदी पूँजीपतियों तथा अपनी जाति के उन विश्वासघातियों के शिकार हो, जो तुमको मॉस्को के क्रान्तिकारियों का ग़ुलाम बनाना चाहते हैं। तुम इन लोगों से छुटकारा प्राप्त करो। अपने बन्धनों को तोड़ डालो। मुझसे मिल जाओ और जर्मनी को फिर से मज़बूत बनाओ।" उत्तर में जार्ज स्ट्रैसर ने अपने भाषणों-द्वारा बहुत-से आदमी नाज़ी पार्टी में भर्ती किये। गोएबिल्स ने नौजवानों में जोश पैदा किया और यहूदियों तथा समष्टिवादियों की कड़ी आलोचना की।

नाज़ी पार्टी की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। पहले साल के अंत में उसके २७,००० सदस्य थे। दिसम्बर, सन् १९२६ ई० में सदस्यों की संख्या ५०,००० हो गई। दिसम्बर सन् १९२७ ई० में उनकी संख्या ७२,००० और सन् १९२८ ई० के अंत तक १,०८,००० हो गई।

प्रारम्भ में हिटलर को आर्थिक कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ीं, परन्तु धीरे-धीरे पार्टी की आर्थिक दशा अच्छी हो गई। प्रत्येक सदस्य को पार्टी में भर्ती होते समय फ़ीस देनी पड़ती थी, और एक मार्क मासिक चन्दा देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त जब कभी हिटलर भाषण देता था, तब दस हज़ार टिकट आसानी से बिक जाते थे। यह रुपया पार्टी को दे दिया जाता था। परन्तु सबसे बड़ी बात यह थी कि जर्मनी के पूँजीपति समष्टिवाद से तंग आगये थे और वह चाहते थे कि किसी आन्दोलन-द्वारा समष्टिवाद का विनाश हो। इसलिए वे प्रसन्नतापूर्वक नाज़ी पार्टी को आर्थिक सहायता देने लगे। इस धन से पार्टी ने अपने सिद्धान्तों का प्रचार करना तथा अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। एक साल में साठ समाचार-पत्र निकाले गये, और पार्टी के कार्य-क्रम

को भली भाँति चलाने के लिए उसके कई विभाग कर दिये गये। कृषि, श्रमी तथा धन-सम्बन्धी समस्याओं पर विचार करने के लिए एक विभाग बनाया गया; इसी प्रकार अन्य विभाग भी बनाये गये। अब पार्टी का काम बहुत क़ायदे के साथ चलने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १९२६ के अंत में पार्टी के सदस्यों की संख्या १,७६,४२६ और सन् १९३० ई० में ३,८९,००० हो गई।

सन् १९३० ई० के चुनाव में नाज़ी पार्टी ने बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की। इस चुनाव में समष्टिवादियों ने १४,००,००० वोट और हिटलर ने ५०,००,००० वोट पाये। नाज़ी पार्टी, जो दो साल पहले केवल बारह स्थान प्राप्त कर सकी थी, अब १०७ स्थान प्राप्त कर सकी, और देश की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई। इस समय हिटलर की अवस्था ४१ वर्ष की थी।

चुनाव के दस दिन बाद हिटलर ने लीपज़िग की सदर अदालत में अपनी भावी सरकार की नीति के सम्बन्ध में कहा, "दस साल के भीतर हमारी पार्टी जर्मनी की द्वितीय सर्वशक्तिशाली पार्टी हो गई। तीन साल में वह सबसे अधिक शक्तिशाली हो जायगी, और अंत में चालीस लाख वोट देनेवालों में पैंतीस लाख हमारी सहायता करेंगे।"

अपने विरोधियों को भयभीत करते हुए उसने कहा, "जब मैं सर्वशक्तिमान् हो जाऊँगा, तब नाज़ी सदर अदालत स्थापित की जायगी। फिर सन् १९१८ ई० के जुर्मों का बदला लिया जायगा, और शत्रुओं के सिर धूल में लोटेंगे।"

अन्तिम विजय

सन् १९३२ ई० के प्रारम्भ में नाज़ीपार्टी बहुत शक्तिशाली हो गई। इस समय जर्मनी की पार्लियामेंट में समाजवादियों का बहुमत था, और नाज़ीपार्टी का दूसरा स्थान था। वॉन हिंडेनबर्ग जर्मनी का सभापति था। उसकी अवस्था ८३ वर्ष की थी, परन्तु फिर भी वह बहुत शक्तिशाली था। उसकी सम्मति के बिना कोई भी व्यक्ति मंत्रि-मंडल में नियुक्त नहीं किया जा सकता था।

अब हिटलर चान्सलर का पद ग्रहण करने के लिए भरसक प्रयत्न करने लगा। ब्रूनिङ्ग इस समय जर्मनी का चान्सलर था। उसके अतिरिक्त वॉन पेपन और वॉन स्खलाइखर हिटलर के अन्य प्रतिद्वन्द्वी थे। दोनों ही ब्रूनिङ्ग के पश्चात् कुछ दिनों के लिए चान्सलर हुए, उनके बाद हिटलर ने शक्ति ग्रहण की।

सन् १९३२ ई० के वसन्त में हिंडेनबर्ग के सभापतित्व के सात वर्ष समाप्त हो गये। नये चुनाव की योजना हुई। हिंडेनबर्ग के विरुद्ध जर्मनी के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति को खड़ा न होते देखकर हिटलर स्वयं खड़ा हो गया। समस्त जर्मनी को आश्चर्य हुआ, और वृद्ध सेनापति क्रोध से जल उठा। यदि हिटलर इस चुनाव में जीत जाता, तो सेना तथा पार्लियामेंट पर उसका अधिकार हो जाता।

इसी समय एक दूसरी कठिनाई उपस्थित हुई। हिटलर अभी तक जर्मनी का नागरिक नहीं बना था। शीघ्र ही उसने एक सरकारी पद ग्रहण कर लिया, और वह जर्मन नागरिक हो गया। चुनाव में हिंडेनबर्ग को १,८०,००,००० और हिटलर

को १,१०,००,००० वोट मिले। हिंडेनबर्ग के लिए यह पर्याप्त बहुमत नहीं था, इसलिए दूसरी बार चुनाव हुआ। इस चुनाव में हिंडेनबर्ग को पर्याप्त बहुमत मिल गया, यद्यपि हिटलर के पक्ष में भी २०,००,००० वोट बढ़ गये। हिंडेनबर्ग हिटलर से इतना असन्तुष्ट हो गया कि उसने निश्चय कर लिया कि वह हिटलर को चान्सलर नहीं होने देगा।

हिटलर ने अपनी शक्ति को पूर्णरूप से बढ़ाने के लिए अन्य पार्टियों से समझौता कर लिया। हुगेनबर्ग, जो जर्मनी का एक बहुत बड़ा पूँजीपति था और 'राष्ट्रीय पार्टी' का सभापति था, हिटलर से मिल गया। सेल्डट, जो 'स्टील हेल्मेट्स' नामक एक संगठन का नेता था नाज़ीपार्टी में आगया। लैंडबंड के जंकर्स भी हिटलर से मिल गये, और ब्रूनिङ्ग का विरोध करने के लिए 'राष्ट्रीय विरोधी-दल' की स्थापना की गई।

ब्रूनिङ्ग ने, समाजवादियों के कहने पर जो हिटलर के विरुद्ध उसको सहायता दे रहे थे, हिंडेनबर्ग से कहा कि वह नाज़ी स्टॉर्म ट्रूप्स को भंग कर दे। हिंडेनबर्ग शीघ्र ही राज़ी हो गया। वर्दी और झंडों का प्रयोग रोक दिया गया, और स्टॉर्म ट्रूप्स अब सड़कों पर दिखाई नहीं देने लगे।

अब चान्सलर ने एक योजना निकाली जिसके द्वारा वह बड़ी-बड़ी जागीरों को तोड़ना चाहता था, और बेकार लोगों को बसाना चाहता था। इस नीति से अप्रसन्न होकर भूमिपतियों ने हिंडेनबर्ग के पास अपील भेजी। हिंडेनबर्ग स्वयं एक बड़ा भूमिपति था। अन्य भूमिपतियों का दबाव पड़ने पर उसने ब्रूनिङ्ग से त्याग-पत्र माँगा। ३० मई, सन् १९३२ ई० को ब्रूनिङ्ग ने चान्सलर के पद से त्याग-पत्र दे दिया।

अब नये चान्सलर की आवश्यकता पड़ी। स्ख़लाइख़र हिंडेन-बर्ग पर बहुत प्रभाव रखता था। उसने अपने मित्र वॉन पेपन को,

चान्सलर बनवा दिया। अब उसने यह कोशिश की कि नाज़ी-पार्टी नई सरकार की सहायता करे। इसलिए उसने ब्रूनिङ्ग-द्वारा स्टॉर्म ट्रूप्स पर लगाये गये प्रतिबन्ध को भंग करवा दिया। साथ ही साथ उसने बर्लिन में हिंडेनबर्ग के महल में हिटलर तथा सभापति की भेंट का प्रबन्ध किया।

हिटलर ने पेपन की सरकार को सहायता देने का वचन दिया, परन्तु साथ ही साथ यह शर्त रक्खी कि कुछ दिनों बाद वह स्वयं चान्सलर बना दिया जायगा। उसने तत्कालीन राजनीतिक अवस्था पर एक लम्बा व्याख्यान दिया जिसको सभापति शांतिपूर्वक सुनता रहा।

हिटलर के चले जाने पर हिंडेनबर्ग ने स्ख़लाइख़र से कहा, "तुमने बोहीमिया के अजीब व्यक्ति को मेरे पास भेज दिया! वह साफ़ तौर से सोचता है कि वह जर्मनी का चान्सलर बने! खूब! उसका दर्जा डाक-विभाग के मन्त्री का है।"

अब वॉन पेपन के समर्थकों की संख्या पार्लियामेंट में घटने लगी। ३१ जुलाई को एक नये चुनाव का प्रबन्ध किया गया। इस समय तक नाज़ीपार्टी की शक्ति बहुत बढ़ चुकी थी। नये चुनाव में उसको २३० स्थान मिले जो पिछले चुनाव के स्थानों से १२३ अधिक थे। अब नाज़ीपार्टी समाजवादियों और समष्टिवादियों की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली हो गई। पार्लियामेंट में उसके ३७ प्रतिसैकड़ा सदस्य थे जितने अन्य किसी पार्टी के नहीं थे।

हिटलर को आशा थी कि उसको चान्सलर का पद दिया जायगा, परन्तु हिंडेनबर्ग ने ऐसा करने से साफ़ इनकार कर दिया। उसने हिटलर को वॉन पेपन के नीचे वाइस-चान्सलर का पद देना चाहा, परन्तु हिटलर ने इसमें अपनी मान-हानि समझी और उसने शीघ्र ही क्रुद्ध होकर अपनी अस्वीकृति दे

दी। हिंडेनबर्ग से दूसरी भेंट करते हुए हिटलर ने कहा कि उसको चान्सलर का पद ग्रहण करने का उसी प्रकार अधिकार था जिस प्रकार मुसोलिनी को अन्य पार्टियों के प्रतिनिधियों को शामिल करके अपनी नई सरकार बनाने का। परन्तु हिंडेन-बर्ग जर्मनी को हिटलर के हाथों में देने के लिए तैयार नहीं था। हिटलर अत्यन्त क्रुद्ध होकर वापिस चला आया।

अब नाज़ी-आन्दोलन के जीवन के सबसे कठिन दिन आगये। वह एक बड़ा संघटन हो गया था। इसलिए यह आवश्यक था कि उसके विकास को क़ायम रक्खा जाय अन्यथा उसकी अवनति अवश्यम्भावी थी। प्रत्येक नगर में नाज़ीपार्टी की एक शाखा थी। वास्तव में नाज़ीपार्टी जर्मनराष्ट्र के अन्तर्गत एक छोटा राष्ट्र बन गई थी, परन्तु उसके ख़र्चे को चलाने के लिए आमदनी का कोई निश्चित साधन नहीं था। चुनाव में बहुमत होने पर भी जब पार्टी को अपनी सरकार बनाने का अधिकार नहीं दिया गया, तब उसको बड़ी निराशा हुई, और धीरे-धीरे उसके सदस्यों की संख्या घटने लगी।

सन् १९३२ ई० की शरद् में पार्टी ने पार्लियामेंट में 'अविश्वास के वोट' द्वारा पेपन की सरकार से बदला लेने का प्रयत्न किया, परन्तु इसका परिणाम विपरीत हुआ। पेपन ने पार्लियामेंट को स्थगित कर दिया, और ६ नवम्बर, सन् १९३२ ई० के चुनाव में नाज़ीपार्टी के ३२ स्थान कम हो गये। इसके विपरीत समष्टिवादियों के ११ स्थान बढ़ गये।

इस परिणाम से पार्टी के लोगों ने सोचा कि पार्टी की अव-नति प्रारम्भ हो गई। चुनाव के चार दिन बाद डा० गोएबिल्स ने अपनी डायरी में लिखा, "पार्टी का प्रारम्भिक दृढ़ विश्वास अब निराशा में बदलता जाता है। प्रत्येक स्थान पर कष्ट, संघर्ष और झगड़े। बर्लिन-संघटन की आर्थिक दशा निराशाजनक।

चन्दों में कमी—ऋण—और पर्याप्त धन एकत्र करने की कोई सम्भावना नहीं।"

पेपन की पहली पार्लियामेंट ग्यारह दिन चली थी; दूसरी केवल तीन ही दिन चलकर समाप्त हो गई। नाज़ीसदस्यों ने अप्रसन्न होकर समष्टिवादियों से मेल कर लिया, और बर्लिन में हड़ताल कर दी। १७ नवम्बर को वॉन पेपन को त्याग-पत्र देना पड़ा।

अब मजबूर होकर हिंडेनबर्ग ने हिटलर को इस शर्त पर चान्सलर का पद देने का वचन दिया कि वह पार्लियामेंट में अपना बहुमत कर सके। परन्तु इस समय नाज़ीपार्टी के स्थान बहुत कम हो गये थे, और हिटलर बहुमत स्थापित करने में असमर्थ था। इसलिए हिंडेनबर्ग ने स्ख़्लाइख़र को चान्सलर का पद दिया। नये चान्सलर ने नाज़ीपार्टी में फूट डालने का प्रयत्न किया। उसने स्ट्रैसर को वाइस-चान्सलर का पद दिया। हिटलर ने समझा कि स्ट्रैसर ने पार्टी के साथ विश्वासघात किया। उसने इस अवसर पर बड़ी होशियारी से काम किया। उसने नाज़ीपार्टी के सदस्यों की एक सभा की और उनको विश्वासघाती सदस्यों के नाम सुनाये। स्ट्रैसर के विश्वासघात पर उसने बहुत ज़ोर दिया। उसको दोषी ठहराते हुए उसने प्रत्येक सदस्य से पूछा, "क्या यह सत्य है?" प्रत्येक ने हिटलर का समर्थन किया और स्ट्रैसर को दोषी ठहराया। इस प्रकार सभा के समस्त सदस्यों ने अपने नेता में पूर्ण विश्वास दिखाया।

इसी समय वॉन पेपन फिर राजनीतिक क्षेत्र में लौट आया। उसका विश्वास था कि स्ख़्लाइख़र ने उसको चान्सलर के पद से हटवा दिया। इसलिए वह उससे बहुत असंतुष्ट था। अब उसने बदला लेने का निश्चय कर लिया। वह हिटलर के पास

गया और उससे समझौता करने का प्रस्ताव रक्खा। हिटलर के पास रुपये की कमी थी; पेपन ने उसको आर्थिक सहायता देने का वचन दिया। इस प्रकार समझौता हो गया। कुछ ही दिनों में नाज़ीपार्टी की आर्थिक दशा अच्छी हो गई।

स्खलाइख़र इस समय पूँजीपतियों की समस्या को हल करने में लगा हुआ था जिसके कारण ब्रूनिङ्ग को त्याग-पत्र देना पड़ा था। हिंडेनबर्ग का विश्वास उसके ऊपर से उठता जा रहा था। पेपन उससे मिला, और उसने प्रस्ताव रक्खा कि यदि उसको वाइस-चान्सलर का पद दे दिया जाय और उसके पक्षपाती मन्त्रि-मण्डल के सदस्यों को रक्खा जाय, तो हिटलर को चान्सलर का पद दे देने से जर्मनी की कोई हानि नहीं होगी। हिंडेनबर्ग ने इस बात को स्वीकार कर लिया।

जब स्खलाइख़र को इस समझौते का पता चला, तब उसने सभापति से पार्लियामेंट को स्थगित करने के लिए कहा, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। स्खलाइख़र को त्याग-पत्र देने के लिए बाध्य किया गया। कुछ दिनों उसने हड़ताल करवाने की कोशिश की, परन्तु जब ३० जनवरी, सन् १९३३ ई० को हिटलर को चान्सलर का पद दे दिया गया, तब वह निराश हो गया। वॉन पेपन वाइस-चान्सलर बनाया गया। हिटलर के केवल दो साथी मंत्रि-मण्डल में शामिल किये गये। गोएरिंग हवाई शक्ति का और फ्रिक अभ्यन्तर का मंत्री बनाया गया। ये दोनों पद उस समय विशेष महत्त्व नहीं रखते थे। शेष पदों पर वॉन पेपन ने अपने साथियों को नियुक्त किया। हिटलर ने प्रतिज्ञा की कि वह मंत्रि-मण्डल के विधान को नहीं बदलेगा। हिंडेनबर्ग और पेपन ने समझा कि ऐसी दशा में हिटलर उनकी राय के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकेगा। वे इस बात को नहीं जानते थे कि हिटलर इन बन्धनों को थोड़े ही दिनों में तोड़ डालेगा।

नव जर्मनी का निर्माण

चान्सलर के पद को पाकर हिटलर की महत्त्वाकांक्षायें बढ़ गईं। अब वह निरंकुश शासन स्थापित करने का प्रयत्न करने लगा। वह जानता था कि अभी उसके मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हैं। उसकी शक्ति अभी पूर्णरूप से स्थापित नहीं हुई थी। वह जर्मनी को नया रूप देकर उसको पूर्णरूप से अपने वश में करना चाहता था। इसलिए यह आवश्यक था कि वह अपने विरोधियों को दबाकर स्वयं शक्ति संगठित करे। इस कार्य में उसको पाँच महीने लगे।

इस अवसर पर गोएरिंग ने हिटलर को बहुत सहायता दी। वह प्रशा की पुलिस में नाज़ी लोगों को भरने लगा। पुलिस के बत्तीस अफ़सरों में बाईस नाज़ी अफ़सर रक्खे गये। २० फ़रवरी को उसने पुलिस को आज्ञा दे दी कि वह नाज़ीपार्टी के विरोधियों पर पिस्तौल चला सकती है। दो दिन बाद उसने 'सहायक सेना' स्थापित की। इस सेना में उसने 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' को भर्ती करके पार्टी को मज़बूत बनाया। साथ ही साथ फ्रिक ने अपने विभाग से नाज़ीपार्टी के विरोधियों को निकाल दिया और उनके स्थान पर पार्टी के सदस्यों को नियुक्त किया। एक क़ानून-द्वारा सरकार को समाचार-पत्रों और जन-साधारण की सभाओं को दबाने का अधिकार मिल गया।

५ मार्च को राइखस्टैग (जर्मनी की पार्लियामेंट) का चुनाव होनेवाला था। २७ फ़रवरी, सन् १९३३ ई० की रात को पौने नौ बजे 'ब्रैन्डेनबर्ग गेट' के समीप अकस्मात् शीशों के टूटने के शब्द से राहगीर आश्चर्य में पड़ गये। शीघ्र ही पुलिस बुलाई

गई। उसने देखा कि पार्लियामेंट के चेम्बर में कई स्थानों से आग की लपटें उठ रही थीं। यह आग इतनी तेज़ी से बढ़ गई कि 'फ़ायर ब्रिगेड' उसको नहीं बुझा सका। चेम्बर के भीतरी कमरे के एक कोने में एक नवयुवक पाया गया जो केवल पाजामा और जूते पहने था और जिसने अपनी क़मीज़ को फाड़कर आग लगाई थी। वह पकड़ा गया। पूछने पर मालूम हुआ कि वह डच जाति का एक मज़दूर था, और उसका नाम 'वान डर लूबे' था। उसने इस बात को स्वीकार किया कि इमारत में उसी ने आग लगाई थी।

गोएरिंग चिल्ला उठा, "यह समष्टिवादियों की हरकत है।"

एक सरकारी रिपोर्ट निकली जिसमें लिखा था कि समष्टिवादियों ने राइखस्टैग में आग लगवाई। दूसरे दिन सभापति हिंडेनबर्ग की ओर से एक घोषणा निकली जिसके अनुसार नागरिक स्वतंत्रता स्थगित कर दी गई। स्टॉर्म ट्रूपर्स को अधिकार दिया गया कि वे उन लोगों को गिरफ़्तार कर लें जिन पर समष्टिवादी होने का सन्देह हो। जेलें समष्टिवादी क़ैदियों से भर दी गईं। जनता को बताया गया कि हिटलर तथा हिंडेनबर्ग को मारने के लिए यह जाल रचा गया था और इस प्रकार समष्टिवादी जर्मनी पर अधिकार करना चाहते थे।

जर्मनी की सदर अदालत में पाँच आदमियों पर मुक़दमा चलाया गया। आठ महीने बाद अदालत ने वॉन डर लूबे को प्राण-दंड दिया। शेष चार छोड़ दिये गये, क्योंकि उन पर किसी प्रकार का दोष सिद्ध नहीं किया जा सका। वास्तव में इस आग के सम्बन्ध में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि उसका कौन कारण था। हिटलर के विरोधी कहते हैं कि यह आग हिटलर ने स्वयं लगवाई थी, क्योंकि वह चाहता था कि समष्टिवादियों को जेल में भेजकर अगले चुनाव में वह बहुमत प्राप्त

कर सके। वॉन डर लूबे का समष्टिवादी संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह एक विदेशी था जो कुछ दिनों से जर्मनी में रहने लगा था। यदि यह भी मान लिया जाय कि वह समष्टिवादी-पार्टी का सदस्य था, तब भी यह सम्भव नहीं है कि पार्टी राइखस्टैग में आग लगाने के लिए एक तुच्छ व्यक्ति को नियुक्त करती। इसके अतिरिक्त गोएरिंग की डायरी से पता चलता है कि समष्टिवादियों के विनाश के लिए नाज़ीपार्टी उपाय सोच रही थी।

५ मार्च को चुनाव हुआ। समाजवादी और समष्टिवादी समाचार-पत्र बन्द कर दिये गये थे और उनकी सभायें रोक दी गई थीं। बहुत-से समष्टिवादी जेल में भेज दिये गये थे। इसलिए उनकी संख्या कम रह गई। इसके विपरीत नाज़ीपार्टी ने अपना खूब प्रोपेगैण्डा किया। परिणाम यह हुआ कि चुनाव में नाज़ीपार्टी और राष्ट्रवादी साथियों ने मिलकर ५२ प्रतिसैकड़ा वोट पाये। इस प्रकार राइखस्टैग में उनका बहुमत हो गया। नाज़ीपार्टी को ४४ प्रतिसैकड़ा वोट मिले। समष्टिवादियों को केवल ८२ स्थान मिले। उनके १८ स्थान कम हो गये। समाजवादियों का एक स्थान कम हो गया।

अब हिटलर क़ानूनी तरीक़ों से शक्ति प्राप्त करने में सफल हो गया। इस प्रकार उसका एक प्रण पूरा हो गया, परन्तु उसका दूसरा प्रण अभी शेष रहा था। उसने पहले ही निश्चय कर लिया था कि शक्ति प्राप्त करते ही वह पार्लियामेंट और लोकतंत्रवादी तरीक़ों को पूर्णरूप से नष्ट कर देगा, और उसके स्थान पर 'नेतृत्व का सिद्धान्त' स्थापित करेगा जो नाज़ीपार्टी का आधार था। अब वह इस काम में लग गया।

नाज़ी-सरकार ने पहले-पहल जर्मनी के मज़दूरों के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाई। उसने 'प्रथम मई' को जो अभी तक समाजवादियों का दिन माना जाता था, 'राष्ट्रीय श्रमी-दिवस' में

परिवर्तित कर दिया। हिटलर ने वर्ग-संघर्ष को रोकने की कोशिश की, और यह घोषणा कर दी कि वह समस्त वर्गों के हितों की रक्षा करेगा। उसने जर्मनी की एकता पर ज़ोर देते हुए कहा, "जर्मनी के निवासियो! तुम द्वितीय श्रेणी में नहीं हो, चाहे संसार तुमको हज़ार बार ऐसा कहे! तुम द्वितीय श्रेणी की छोटी जाति नहीं हो। तुम जाग्रत् होकर अपने महत्त्व को स्वयं समझो! अपने उज्ज्वल भूत को याद करो और सोचो कि तुम्हारे पूर्वजों ने तथा तुमने कितनी सफलता प्राप्त की थी! अवनति की पिछली चौदह सालें भूल जाओ! जर्मनी के इतिहास के केवल दो हज़ार सालों पर विचार करो! यदि तुम एक शक्तिशाली जाति बनने का निश्चय कर सकते हो, तो तुम अवश्य सफल होगे।"

प्रत्येक वर्ग के जर्मनों पर उसके भाषणों का गहरा प्रभाव पड़ा। अब वे जर्मनी को एक मज़बूत राष्ट्र बनाने के लिए तैयार हो गये। बहुत-से समष्टिवादी और समाजवादी नाज़ीपार्टी में आगये। हिटलर ने जर्मनी के व्यापार-संघों और समाजवादी पार्टी को सुगमतापूर्वक दबा दिया। जुलाई, सन् १९३३ ई० में कैथोलिक पार्टी भी दबा दी गई। राष्ट्रवादी और स्टैहेल्म-संगठन भी नाज़ीपार्टी में मिला लिये गये।

छः महीने के भीतर हिटलर ने मंत्रिमंडल को अपने इच्छानुसार बना लिया। मंत्रि-मंडल के चौदह स्थानों में उसने आठ पर अपने साथियों को नियुक्त कर दिया। शेष छः मंत्री उसके पक्षपाती हो गये जिन पर वह विश्वास कर सकता था।

१४ जुलाई, सन् १९३३ ई० को नाज़ीमंत्रि-मण्डल ने एक घोषणा की, जिसके अनुसार राष्ट्रीय समाजवादियों को छोड़कर अन्य समस्त राजनीतिक पार्टियाँ दबा दी गईं। इस प्रकार नाज़ीपार्टी का जर्मनी पर पूर्णरूप से अधिकार हो गया।

हिटलर के मंत्री उसकी आज्ञा का अक्षरशः पालन करने लगे, और वह जर्मनी का शक्तिशाली डिक्टेटर हो गया।

हिटलर ने जर्मनी पर स्वेच्छाचारी शासन स्थापित करने के लिए उसे नया रूप देना प्रारम्भ किया। पुरानी प्रान्तीय सरकारें तोड़ दी गईं। जर्मनी को ग्यारह नये प्रान्तों में विभक्त किया गया। प्रत्येक प्रान्त में एक गवर्नर नियुक्त किया गया जो चान्सलर के प्रति उत्तरदायी था। व्यापार-संघों के स्थान पर 'जर्मन लेबर फ्रंट' की नींव पड़ी जिसके अनुसार मालिक और मज़दूर मिलकर राष्ट्र के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करने लगे। क्राफ्ट डर्स फ्रॉइड (खुशी-द्वारा शक्ति) नामक मज़दूरों का एक संघटन बनाया गया। इस संघटन के ३,५०,००० सदस्य ग्रीष्म-ऋतु में आनन्द देनेवाले स्थानों को रेल में घूमने के लिए जाते हैं। हज़ारों मज़दूर लिज़बन और मदीरा में जहाज़ों पर सैर करने के लिए भेजे जाते हैं। इस संघटन के खेल-विभाग के सदस्यों की संख्या २०,००,००० से अधिक है। यहाँ पर नवयुवक और नवयुवतियाँ व्यायाम और खेलों-द्वारा शारीरिक शक्ति संचित करते हैं।

हिटलर के नौजवानों के डेरे जो गर्मियों के दिनों में समस्त देश में लगाये जाते हैं, विशेष महत्त्व रखते हैं। यहाँ पर जर्मनी के नौजवान अनेक प्रकार के जोशीले खेल सीखते हैं और बलवान् बनते हैं। हिटलर छोटे-छोटे लड़कों के हाथों में हथियार नहीं देता है। सेना में प्रवेश करने से पहले प्रत्येक नौजवान के शारीरिक विकास का ध्यान रक्खा जाता है। 'लेबर कैम्प्स' (श्रमी डेरे) जिनमें प्रत्येक नौजवान को छः महीने व्यतीत करने पड़ते हैं और जहाँ पर समस्त वर्गों के नौजवान एकत्र होते हैं, शारीरिक परिश्रम का महत्त्व बताते हैं।

खेती के प्रबन्ध के लिए राष्ट्र की ओर से एक संस्था स्थापित की गई जिसका नाम 'नेशनल फ़ूड स्टेट' रक्खा गया। यह

संस्था अनाज की क़ीमत निश्चित करती है और प्रत्येक किसान के लिए यह तय करती है कि वह किस प्रकार की फ़सल पैदा करे और कितने परिमाण में। २० सितम्बर, सन् १९३३ ई० में 'हेरीडिटरी फ़ार्म प्रोपर्टी एक्ट' नामक एक क़ानून पास किया गया जिसके अनुसार ३०० एकड़ भूमि किसी किसान से ऋण के बदले में नहीं छीनी जा सकती है। केवल राष्ट्र ही इस सम्बन्ध में हस्तक्षेप कर सकता है। लगभग दस लाख जर्मन किसान सरकार की देख-भाल में इस क़ानून के अनुसार खेती करते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि खाद्य पदार्थों का राष्ट्रीकरण हो गया है।

हिटलर की सरकार का प्रमुख सिद्धान्त यह है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए सब लोग मिलकर कोशिश करें। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को दबाया जाता है। 'नेशनल सोशलिज़्म' (राष्ट्रीय समाजवाद) इस बात को मानती है कि 'असमानता का सिद्धान्त' संसार से नहीं मिटाया जा सकता। इसलिए वर्गों का अस्तित्व अवश्य रहेगा, परन्तु विभिन्न वर्ग एक दूसरे से न लड़कर पारस्परिक सहयोग-द्वारा राष्ट्र को उन्नत बनाने का उद्योग करेंगे। हिटलर लोकतंत्र-वादी बहुमत में विश्वास नहीं करता है। उसके विचार से साधारण जनता महान् बातों को नहीं सोच सकती, इसलिए उसका कर्त्तव्य है कि वह अपने नेता की आज्ञा का पालन करे। इसी सिद्धान्त के आधार पर हिटलर जर्मनी पर निरंकुश शासन करता है।

अपने विरोधियों को दबाने के लिए हिटलर ने सख्त तरीक़ों का प्रयोग किया, क्योंकि वह जानता था कि यदि कमज़ोरी से काम लिया जायगा तो विरोधियों की संख्या बढ़ जायगी और वे नाज़ी-सरकार को पलट देने का प्रयत्न करेंगे। नाज़ी-सरकार के प्रधान शत्रु थे समष्टिवादी और यहूदी। समष्टि-

वादियों में से बहुत-से नाज़ीपार्टी में आगये थे, परन्तु अभी विरोधियों की संख्या कम न थी। इन विरोधियों को दंड देने के लिए 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' स्थापित किये गये। ये कैम्प पुराने कारखानों, टूटे-फूटे महलों या सेना के अहातों में होते थे। जिन लोगों पर विरोध का कोई संदेह होता था अथवा जो लोग विरोध करते थे, वे इन कैम्पों में भेज दिये जाते थे। यहाँ पर वे अन्य लोगों से नहीं मिल सकते थे और न किसी प्रकार के व्यक्तिगत विचारों को व्यक्त कर सकते थे। इन क़ैदियों को भोजन ठीक नहीं मिलता था, और उनको बहुत-सी यातनायें दी जाती थीं ताकि वे अपने राजनीतिक सिद्धान्तों को छोड़कर नाज़ीपार्टी का शासन स्वीकार कर लें।

यहूदियों के सम्बन्ध में हिटलर की पहले से ही बुरी धारणा थी। वह जानता था कि योरपीय महायुद्ध में जर्मनी की पराजय का कारण यहूदी थे। राजनीतिक क्षेत्र में यहूदियों ने समष्टि-वादियों को सहायता देकर हिटलर का विरोध किया था। जिस समय हिटलर चान्सलर के पद पर आया, उस समय जर्मनी में यहूदियों की संख्या कुल जन-संख्या की एक प्रतिसैकड़ा थी, परन्तु बर्लिन के औषधि-विभाग में ४५ प्रतिसैकड़ा यहूदी थे। यहूदी डाक्टरों और वकीलों की संख्या बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। बर्लिन के उद्योग-धन्धों पर यहूदियों ने अपना अधिकार कर लिया था। यहूदी अन्तर्राष्ट्रीयता में विश्वास करते थे, और संसार की अनेक राजनीतिक संस्थाओं से उनका सम्बन्ध था। हिटलर जानता था कि यहूदी उसके विरोधी थे। इसलिए उसने जर्मनी में अपने शासन की मज़बूती के लिए यह उचित समझा कि वह यहूदियों को जर्मनी से निकाल दे। अनेक यहूदी देश छोड़कर चले गये, बहुत-से गिरफ़्तार कर लिये गये और बहुतों को प्राण-दंड दिया गया।

अब हिटलर ने धार्मिक विषयों में भी हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। वह जर्मनी पर पूर्णरूप से अपना शासन स्थापित करना चाहता था। परन्तु कैथोलिक चर्च रोम के पोप की अध्यक्षता में विश्वास करता था। हिटलर को यह बात असह्य थी। धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त चर्च नागरिक जीवन में भी हस्तक्षेप करता था। हिटलर के विचार से चर्च का कर्त्तव्य केवल धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति था। वह नहीं चाहता था कि रोमन चर्च नागरिक जीवन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करे। इसलिए उसने रोमन चर्च की स्वतंत्रता को रोक दिया और उसके अधिकारों को कम कर दिया।

३० जून, सन् १९३४ ई० के नाजीपार्टी के दंड-विधान ने संसार को विस्मित कर दिया। इस तारीख को सैकड़ों आदमियों का वध किया गया। भूतपूर्व चान्सलर स्खलाइखर तथा कप्तान रोहम भी मृत्यु के शिकार हुए। चान्सलर का पद ग्रहण करने से पूर्व ही हिटलर ने रोहम को फिर से बुला लिया था। वह 'स्टॉर्म ट्रूपर्स का कप्तान बना दिया गया था। जब हिटलर चान्सलर हो गया, तब रोहम ने यह कोशिश की कि 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' को 'राइखसवेयर' (जर्मन-सेना) में मिला लिया जाय। इस समय जर्मन-सेना का संघटन बहुत अच्छा था। सेना के अफ़सर नहीं चाहते थे कि नौसिखिये 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' सेना में प्रवेश करके उसके संयम को तोड़ दें। हिटलर सैनिक अफ़सरों से सहमत था। रोहम इस बात से असन्तुष्ट हो गया और हिटलर का विरोध करने लगा।

यदि 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' का विद्रोह सफल हो जाता, तो वे अपने विरोधियों को दंड देते। हिटलर के मित्र कहते हैं कि हिटलर को मारने की भी योजना की गई। उहल नामक व्यक्ति ने, जिसको बाद में प्राण-दंड दिया गया, इस बात को स्वीकार किया कि हिटलर का वध करने का काम उसके सुपुर्द किया गया था। हिटलर की खुफ़िया पुलिस बड़ी सावधानी से काम कर रही थी।

उसने रोहम के जाल का पता लगा लिया। वॉन स्खलाइखर भी रोहम का साथ दे रहा था, क्योंकि उसको आशा थी कि हिटलर की मृत्यु के पश्चात् वह चान्सलर बना दिया जायगा। अपने साथियों को आज्ञा देते हुए रोहम ने कहा, "स्टॉर्म ट्रूपर्स के शत्रु उचित समय पर उचित रूप में दंड पायेंगे। स्टॉर्म ट्रूपर्स जर्मनी के भाग्य-विधाता हैं और भविष्य में भी रहेंगे।"

जून, सन् १९३४ ई० के अंतिम दिनों में हिटलर को रोहम के विश्वासघात का निश्चय हो गया। उसने शीघ्र ही इस जाल को तोड़ने का प्रयत्न किया। इस समय रोहम अपने साथियों के साथ म्यूनिच में अन्तिम निर्णय के लिए एक सभा कर रहा था। हिटलर गोएबिल्स तथा तीन अन्य साथियों और कुछ सैनिकों को लेकर शीघ्र ही म्यूनिच पहुँचा। हिटलर ने रोहम के कमरे में प्रवेश किया। ज्यों ही उसने रोहम से कहा, "ओ बदमाश, तुम गिरफ़्तार किये जाते हो," वैसे ही सैनिकों ने रोहम को वन्दी कर लिया। 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' के अन्य नेता भी गिरफ़्तार कर लिये गये। म्यूनिच की जेल में समस्त नेता एक-एक करके मृत्यु के शिकार बनाये गये। २ जुलाई को रोहम को भी गोली से मार दिया गया। स्खलाइखर और उसकी पत्नी दोनों गिरफ़्तार किये गये, और ख़ुफ़िया पुलिस के अफ़सरों ने उनको गोली का लक्ष्य बनाया। रोहम के अन्य साथियों को भी प्राण-दंड दिया गया। इस प्रकार हज़ारों मनुष्यों का ख़ून बहाया गया।

कुछ दिनों बाद पार्लियामेंट में भाषण देते हुए हिटलर ने कहा, "चौबीस घंटे तक मैं जर्मन-जाति की सदर अदालत रहा।"

इस प्रकार उसने अपनी महत्ता प्रदर्शित करते हुए हज़ारों मनुष्यों की मृत्यु का दोष छिपाया। मुसोलिनी ने भी एक बार ऐसा ही किया था। वास्तव में डिक्टेटर अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके अपने दोषों को छिपाने की कोशिश करते हैं।

परराष्ट्र-नीति

सन् १९३२ ई० में राष्ट्र-संघ के सम्मेलन के अवसर पर जर्मनी ने एक प्रस्ताव-द्वारा जर्मन-सेना पर लगाये गये प्रतिबन्धों का विरोध किया। जब उसके प्रस्ताव पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया, तब जर्मनी ने सन् १९३३ ई० में राष्ट्र-संघ को छोड़ दिया। सन् १९३४ ई० में हिटलर ने जर्मन सेना की संख्या को १,००,००० से बढ़ाकर ३,००,००० कर दिया। इसी साल पोलैंड से दशवर्षीय सन्धि कर ली गई जिसके द्वारा वर्साई की सन्धि-द्वारा दिये गये जर्मन भागों पर पोलैंड का अधिकार स्वीकार कर लिया गया। मार्च, सन् १९३५ ई० में नई घोषणा के द्वारा जर्मन-सेना में और सैनिक भर्ती किये गये। नये-नये हथियार बनाये गये, और जर्मनी के लिए एक मज़बूत जहाज़ी बेड़ा बनाया गया। इस समय न तो इँगलैंड और न फ़्रांस ही युद्ध के लिए तैयार था। इसलिए जर्मनी के मार्ग में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ी। जून, सन् १९३५ ई० में इँगलैंड और जर्मनी में एक सन्धि हो गई जिसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि जर्मनी अपने जहाज़ी बेड़े को इँगलैंड के तिहाई जहाज़ी बेड़ के बराबर मज़बूत बना सकती है।

वर्साई के प्रतिबन्धों पर नाज़ीवाद की अंतिम विजय तब हुई जब सन् १९३६ ई० में जर्मन-सेना ने राइनलैंड में प्रवेश किया, जो सन्धि के अनुसार अनुचित था। इसी समय हिटलर ने सन् १९२५ ई० की लोकार्नो-सन्धि की कड़े शब्दों में आलोचना की। इस सन्धि के अनुसार यह निश्चित किया गया था कि यदि फ़्रांस अथवा जर्मनी में से कोई भी निश्चित सीमा

का उल्लंघन करेगा तो इँगलैंड तथा इटली उसको दंड देंगे। वर्साई की सन्धि के प्रतिबन्धों को सफलतापूर्वक तोड़ डालने से नाज़ी सरकार जर्मनी में प्रतिष्ठित हो गई।

सन् १६३६ ई० में नाज़ीपार्टी की सभा ने वोल्शविज़ के विरुद्ध अपनी नीति घोषित कर दी। जापान के साथ जर्मनी ने एक सन्धि की जिसमें यह निश्चित हुआ कि दोनों रूस के विरुद्ध परस्पर सहायता दें। इसी समय हिटलर ने स्पेन के विद्रोहियों को सहायता देनी प्रारम्भ कर दी, क्योंकि रूस स्पेन की सरकार की सहायता कर रहा था। जर्मन-वायुयानों ने समाजवादी क़स्बों पर बम गिराये। इसी वर्ष आस्ट्रिया से भी सन्धि कर ली गई जिसके अनुसार यह तय हुआ कि वियना की सरकार के विरुद्ध सशस्त्र नाज़ीविद्रोह नहीं किये जायँगे।

सन् १९३७ ई० में जर्मनी ने ज़ेकोस्लावाकिया पर आक्रमण करने का निश्चय किया। कारण यह था कि योरपीय महायुद्ध से पहले ज़ेकोस्लावाकिया का बहुत-सा भाग जर्मनी के अधिकार में था। जर्मनी ने उस भाग पर फिर अधिकार करना चाहा। इसी समय फ़्रांस के प्रधान मन्त्री ब्लम ने घोषणा की, "यदि ज़ेकोस्लावाकिया पर आक्रमण होगा, तो फ़्रांस यह समझेगा कि उसी पर आक्रमण हुआ है।" परन्तु इँगलैंड युद्ध के लिए तैयार नहीं था। चेम्बरलेन को भय था कि यदि जर्मनी ने ज़ेकोस्लावाकिया पर आक्रमण कर दिया, तो समस्त योरप युद्ध में शामिल हो जायगा। इसलिए उसने एक सन्धि की योजना रक्खी। हिटलर, मुसोलिनी, दलेदियर तथा चेम्बरलेन म्यूनिच में एकत्र हुए और 'म्यूनिच पैक्ट' के अनुसार ज़ेकोस्लावाकिया का कुछ भाग जर्मनी को दे दिया गया। कुछ दिनों बाद चेम्बरलेन और हिटलर ने परस्पर वचन दिया कि इँगलैंड और जर्मनी परस्पर युद्ध नहीं करेंगे। हिटलर सम-

झता था कि इँगलैंड युद्ध के लिए तैयार नहीं है। इसलिए उसने ज़ेकोस्लावाकिया पर आक्रमण करके उसको जर्मनी में मिला लिया, और इस प्रकार म्यूनिच-पैक्ट को तोड़ दिया। इसी बीच में उसने आस्ट्रिया को भी जर्मनी में शामिल कर लिया था।

२२ मार्च, सन् १९३९ ई० को हिटलर ने मेमल पर अधिकार कर लिया, और इस बात को ज़ाहिर कर दिया कि वह शीघ्र ही डैनज़िग पर भी अधिकार करनेवाला था। म्यूनिच-पैक्ट के तोड़ देने से हिटलर के ऊपर चेम्बरलेन का विश्वास नहीं रहा। ३१ मार्च को इँगलैंड ने पोलैंड को गारंटी दी कि यदि जर्मनी पोलैंड पर आक्रमण करेगी, तो इँगलैंड पोलैंड की ओर से युद्ध में शामिल हो जायगा।

हिटलर ने डैनज़िग को जर्मनी में मिलाने का निश्चय कर लिया था। वास्तव में वर्साई की संधि से पहले डैनज़िग जर्मनी का एक भाग था। संधि के अनुसार डैनज़िग को पोलैंड के अधिकार में दे दिया गया था। डैनज़िग के जर्मनों को पोलैंड की सरकार के विरुद्ध बहुत-सी शिकायतें थीं। इसलिए हिटलर डैनज़िग को जर्मनी में मिलाना चाहता था। इँगलैंड पहले से ही जर्मनी के विरुद्ध घोषणा कर चुका था। दूसरा देश जिसका पोलैंड से घनिष्ठ सम्बन्ध था, रूस था। हिटलर समझता था कि जर्मनी, इँगलैंड, फ्रांस और रूस तीनों का सामना नहीं कर सकेगी। इसलिए उसने यह आवश्यक समझा कि रूस से संधि कर ली जाय। उधर रूस भी इँगलैंड से असन्तुष्ट हो गया था, क्योंकि म्यूनिच-पैक्ट में रूस के प्रतिनिधि को नहीं बुलाया गया। रूस भी अपनी रक्षा के लिए यह आवश्यक समझता था कि या तो वह इँगलैंड से या जर्मनी से संधि करे। जब इँगलैंड से संधि नहीं हो सकी, तब उसने भी जर्मनी की ओर अपना मुँह फेरा। जर्मनी तो पहले से ही संधि के लिए तैयार थी। २३ अगस्त,

सन् १९३९ ई० में जर्मनी तथा रूस में एक पैक्ट हो गया जिसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि दोनों देश एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे, और यदि कोई तीसरा देश दोनों में से किसी एक पर आक्रमण करे, तो दूसरा तीसरे की सहायता नहीं करेगा। इसके अतिरिक्त पैक्ट की और भी शर्तें थीं। अब जर्मनी को रूस का भय नहीं रहा।

रूस से समझौता करने के पश्चात् हिटलर डैनज़िग में हस्तक्षेप करने लगा। पहली सितम्बर को डैनज़िग में नाज़ीपार्टी के नेता फोर्सटर ने घोषणा कर दी कि डैनज़िग जर्मनी में शामिल हो गया। हिटलर ने इस घोषणा का समर्थन किया और पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। रूस और जर्मनी का पैक्ट हो चुका था। इसलिए रूस इस युद्ध में तटस्थ रहा। इँगलैंड ने पोलैंड की सहायता की, परन्तु पोलैंड की अन्त में पराजय हुई। हिटलर ने पोलैंड को जर्मनी में मिला लिया। पोलैंड का कुछ भाग—यूकराइन तथा श्वेत रूस—जहाँ पर रूसवालों की संख्या अधिक थी, रूस को दे दिया गया।

हिटलर जानता था कि इँगलैंड जर्मनी की नीति को स्वीकार नहीं करेगा। उसे इँगलैंड की ओर से जर्मनी पर आक्रमण की आशंका थी। साथ ही साथ वह स्वयं इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिए प्रस्तुत था। ऐसी दशा में नार्वे, डेनमार्क, बेलजियम और हालैंड को अपने अधिकार में करना उसके लिए नितान्त आवश्यक था। १० अप्रैल, सन् १९४० ई० को जर्मनी ने डेनमार्क पर आक्रमण कर दिया। डेनमार्क जर्मनी का सामना नहीं कर सका, और उसने जर्मनी का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। साथ ही साथ नार्वे पर भी आक्रमण हुआ, और जर्मन-सेना ने दक्षिणी नार्वे के प्रसिद्ध स्थानों पर अधिकार कर लिया। इँगलैंड और फ्रांस ने नार्विक पर जर्मनों को पीछे हटा दिया और वहाँ

पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। कुछ समय बाद जर्मन-सेना बड़ी तेज़ी के साथ ओस्लो की ओर बढ़ी और इँगलैंड की सेना को नार्वे से हटना पड़ा। जर्मन-सेना ने नार्वे पर अपना अधिकार कर लिया और नार्वे का राजा हाकून इँगलैंड भाग गया।

१० मई, सन् १९४० ई० को जर्मनी ने हालैंड तथा बेलजियम पर आक्रमण किया। यह आक्रमण इतनी अधिक तेज़ी के साथ किया गया कि डच लोग अधिक समय तक सामना नहीं कर सके। रानी विल्हेल्मिना अपनी सरकार के साथ इँगलैंड भाग गई। अब जर्मन-सेना अपनी पूरी शक्ति के साथ बेलजियम में घुसने लगी। लोवेन और ब्रूसेल्ज़ पर अधिकार कर लिया गया। बेलजियम-सरकार ओस्टेन्ड को चली गई। इँगलैंड तथा फ़्रांस की सेना ने बेलजियम को पूरी सहायता दी, परन्तु जर्मन-सेना की नवीन युद्ध-प्रणाली उसके लिए बहुत हितकर सिद्ध हुई। जर्मन-सेना विजयी हुई और अँगरेज़ी तथा फ़्रांसीसी सेनाओं को बेलजियम से हटना पड़ा। राजा ल्यूपोल्ड ने जर्मनी से संधि कर ली।

अभी तक हिटलर की इच्छा-पूर्ति नहीं हुई। उसके असली शत्रु थे इँगलैंड और फ़्रांस। जब तक इन देशों पर वह अपना अधिकार नहीं कर सकता था, तब तक उसकी दशा सुरक्षित नहीं थी, इँगलैंड और फ़्रांस जर्मनी के विनाश के लिए तुले हुए थे। हिटलर ने निश्चय किया कि पहले फ़्रांस पर विजय प्राप्त करके 'इँगलिश चैनल' पर अधिकार स्थापित किया जाय, उसके पश्चात् इँगलैंड पर आक्रमण प्रारम्भ किया जाय।

शीघ्र ही जर्मनी ने फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। फ़्रांस में इस समय आंतरिक फूट फैल रही थी। फ़्रांस को निश्चय था कि

'मैजिनों लाइन' को जर्मनी कभी नहीं तोड़ सकेगी। इसी विश्वास में जर्मन-आक्रमण को रोकने के लिए फ़्रांस ने पूरी तैयारी भी नहीं की थी। परन्तु अकस्मात् जर्मन-सेना ने 'मैजिनों लाइन' को तोड़कर फ़्रांस में प्रवेश किया। समस्त संसार जर्मन-सेना की इस शक्ति को देखकर विस्मित हो गया। फ़्रांस ने अपनी पूरी शक्ति से जर्मनी का सामना किया, परन्तु फ्लैन्डर्स के युद्ध में उसकी पराजय हुई। बोलोन, कैले तथा डंकर्क पर जर्मन-सेना ने अपना अधिकार कर लिया। ५ जून को जर्मन-सेना ने सोम को पार किया, और २,००० टैंकों-द्वारा उत्तरी फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। १० जून को जर्मन-सेना ने फ़्रांस के बहुत-से भागों पर अधिकार कर लिया। इसी समय हिटलर ने मुसोलिनी पर युद्ध में शामिल होने के लिए प्रभाव डाला। इटली ने भी फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। १२ जून को जर्मन-सेना ने सीन नदी को पार किया और रेम्स पर अधिकार कर लिया। अब पेरिस का घेरा प्रारम्भ हुआ। जर्मन-सेना के १०० जत्थों ने चार हज़ार टैंकों की सहायता से पेरिस को बरबाद करना चाहा। रेनों सरकार ने पहले पेरिस की रक्षा करने का विचार किया, परन्तु बाद में उसको बरबादी से बचाने के लिए शत्रुओं के हाथ में दे दिया। १४ जून को जर्मन हाई कमांड ने घोषणा की—"फ़्रांसीसी सेना राजधानी की रक्षा नहीं कर सकी, और विजयी जर्मन-सेना ने आज प्रातःकाल पेरिस में प्रवेश किया।" रेनॉ-सरकार ने १७ तारीख़ को त्याग-पत्र दे दिया और मार्शल पीटाँ ने नई सरकार स्थापित की। १८ जून को हिटलर और मुसोलिनी ने पीटाँ-सरकार के सन्धि के प्रस्ताव पर विचार किया। २२ जून को फ़्रांस ने जर्मनी तथा इटली से संधि कर ली।

हिटलर समझता था कि फ़्रांस पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् वह इँगलैंड पर सुगमतापूर्वक अधिकार कर लेगा, परन्तु

उसका यह विचार पूर्णतः भ्रमात्मक सिद्ध हुआ। चेम्बरलेन के त्याग-पत्र देने के पश्चात् चर्चिल इँगलैंड के प्रधान मन्त्री हुए। उन्होंने थोड़े से ही समय में इँगलैंड की सैनिक शक्ति का भली-भाँति संगठन कर लिया। जब जर्मनी ने वायुयानों-द्वारा इँगलैंड पर आक्रमण प्रारम्भ किये, तब अँगरेज़ी हवाई सेना ने जर्मनी, फ्रांस, हालैंड तथा बेलजियम पर बम-वर्षा करके उसका उचित रूप से उत्तर दिया। जर्मन हवाई जहाज़ों ने लन्दन पर लगातार बम गिराये, परन्तु उससे कोई विशेष हानि नहीं हुई। इधर अँगरेज़ी वायुयानों ने भी बर्लिन पर बम गिराये।

इसी बीच में हिटलर के सम्मुख बाल्कन-समस्या भी उपस्थित हुई। रूमानिया का प्रश्न प्रमुख था। योरपीय महायुद्ध के बाद रूस से बेसारेबिया तथा बुकोविना, हंगरी से ट्रान्सलवेनिया, और बलगेरिया से डोबरुजा लेकर रूमानिया का देश बनाया गया था। रूमानिया में गेहूँ तथा तेल का प्राचुर्य था। इसलिए अन्य देश उस पर अधिकार करना चाहते थे। साथ ही साथ रूमानिया में अनेक भाषायें तथा जातियाँ होने के कारण राष्ट्रीय एकता नहीं थी। रूस ने रूमानिया को लिखा कि वह शीघ्र ही बेसारेबिया तथा उत्तरी बुकोविना को रूस को लौटा दे, नहीं तो रूसी सेना उस पर आक्रमण कर देगी। रूमानिया को रूस की शर्तें स्वीकार करनी पड़ीं। बाद में उसे बलगेरिया को डोबरुजा देना पड़ा। वियना की सन्धि-द्वारा रूमानिया ने ट्रान्सलवेनिया हंगरी को दे दी इससे देश में अशांति फैल गई। प्रधान मन्त्री तथा राजा कैरल को मारने का प्रयत्न किया गया। कैरल भाग गया। पार्लियामेंट तोड़ दी गई, और हिटलर की सम्मति से जनरल एन्टोनेस्क्यू शेष रूमानिया का डिक्टेटर हो गया।

कुछ दिनों से हिटलर एक 'नवीन व्यवस्था' क़ायम करने के

लिए प्रयत्न कर रहा है। जर्मनी, इटली, रूस, फ़्रांस, स्पेन, जापान तथा अन्य छोटे-छोटे देश इस व्यवस्था में शामिल हो चुके हैं। इन देशों के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ एक-दूसरे से मिल रहे हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि हिटलर इँगलैंड के विनाश के लिए एक बहुत बड़ा जाल रच रहा है। अमरीका इँगलैंड का साथ दे रही है। इँगलैंड भी स्वयं पूरी तरह से हिटलर का उत्तर देने के लिए तैयार है। कहा नहीं जा सकता कि अंतिम विजय किसकी होगी।

अन्तिम झलक

म्यूनिच में नं० १६ प्रिन्सरैगेनतेनप्लात्स के द्वार पर दर्शकों की चहल-पहल है। दो सिपाही बाहर टहल रहे हैं, और काली वर्दी पहने हुए ख़ुफ़िया पुलिस का एक आदमी सड़क की ओर का दरवाज़ा खोलता है। एक-एक करके दर्शक भीतर घुसते हैं और एक लकड़ी के ज़ीने से होकर दूसरे द्वार पर पहुँचते हैं। दरवाज़ा मामूली-सा है, और उससे यह नहीं प्रतीत होता कि मकान में कोई प्रसिद्ध व्यक्ति रहता है। भीतर घुसते ही एक बड़े कमरे में फ़्रैडरिक महान् का फ़ोटो और किताबों की अल-मारियाँ दिखाई पड़ती हैं। कमरा मेज़ और कुर्सियों से भरा है, और दूरवर्ती कोने में एक महान् पुरुष बैठा हुआ कुछ सोच रहा है। उसके कपड़े साफ़ और सादे हैं। आँखें कुछ-कुछ नीली और बाल बाईं ओर को झुके हैं। दर्शक को देखते ही वह उठता है, और मुस्कराकर उससे हाथ मिलाता है। साथ ही साथ वह प्रश्न करता है 'कहिए' और उसका चेहरा तेज से चमक उठता है। दर्शक के हृदय में उसके प्रति एक अजीब आकर्षण की अनुभूति होती है। हिटलर की यह ईश्वरीय देन न तो वर्णन ही की जा सकती है, और न मिथ्या ही सिद्ध की जा सकती है।

उसका स्वास्थ्य अच्छा और शरीर हृष्ट-पुष्ट है। दाँत मज़-बूत और हाथ शक्तिशाली हैं। उसके अँगूठे की गाँठ बहुत बड़ी है, और हस्त-रेखा-विज्ञान के आचार्यों का कथन है कि इससे उसकी इच्छा-शक्ति की दृढ़ता सूचित होती है। वह नाज़ीपार्टी की ख़ाकी वर्दी अकसर पहनता है। उसकी क़मीज़ें अधिकतर सफ़ेद रेशम की होती हैं। वह बहुधा कहता है कि जब वह

वियना में ग़रीबी के दिन व्यतीत करता था, तब उसने निश्चय किया था कि अमीर होकर वह दो शौक़ करेगा—एक तो प्रत्येक कमरे में जलती हुई अँगीठी रखना और दूसरा दिन में दो बार कमीज़ बदलना।

लगभग आधे योरप का सम्राट् होते हुए भी हिटलर का जीवन सादा है। वह न तो सिगरेट पीता है, न शराब पीता है और न गोश्त ही खाता है। वह चाय या क़हवा भी नहीं पीता है। उसे दलिया बहुत पसंद है। कभी-कभी वह अंडे भी खाता है, परन्तु शाक अधिक परिमाण में खाता है। उसे चाकलेट बहुत प्रिय है, और म्यूनिच में बहुत-से होटलों में वह चाकलेट खाने के लिए पहुँच जाता है। तम्बाकू की गन्ध से उसे इतनी घृणा है कि कोई भी व्यक्ति उसकी उपस्थिति में न तो तम्बाकू और न सिगरेट ही पी सकता है।

बर्लिन में वह अपने मकान से मोटरकार के सिवा और किसी सवारी पर नहीं जाता है। उसको कभी थकावट महसूस नहीं होती। नर्नबर्ग में 'स्टार्म ट्रूपर्स' के सालाना जलसे के अवसर पर वह लगातार पाँच घंटे तक अपनी कार पर खड़ा रहता है, और अधिकांश समय तक अपनी भुजा को फैलाये रखता है। राइनलैंड पर आक्रमण करते समय वह लगातार दो दिन और दो रात काम करता रहा। तीसरे दिन शाम को भोजन करने के पश्चात् जब फ़्राड गोएबिल्स ने उससे आराम करने के लिए कहा, तो उसने उत्तर दिया, "यदि तुम इस समय चली जाओगी तो मैं सुबह के चार बजे तक पढ़ने के लिए बैठ जाऊँगा। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि तुम कुछ समय तक और ठहरो।"

अर्थशास्त्र और राजनीति-सम्बन्धी पुस्तकों का हिटलर ने विस्तृत अध्ययन किया है, और उन्हीं के आधार पर उसने

अपने राजनीतिक सिद्धान्त बनाये हैं। हिटलर के मित्रों का कथन है कि उसने जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिकों की पुस्तकों का अध्ययन किया है और योरप की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक तथा आर्थिक दशाओं का मनन किया है। इस कथन में अतिशयोक्ति मालूम पड़ती है, क्योंकि उसे गम्भीर विषयों की अपेक्षा कार्ल मे की रोमांचकारी कहानियों में अधिक आनन्द आता है। उसका साहित्यिक ज्ञान बहुत कम है।

संगीत और शिल्प कला का हिटलर को विशेष ज्ञान है। 'ग्रांड ओपेरा' में उसे विशेष आनन्द आता है। कभी-कभी वह कहता है, "मैं समझता हूँ कि मैं संसार के उत्तम संगीतज्ञों में से एक हूँ।" रात के समय जब उसको नींद नहीं आती है, तब वह अपने मित्रों से बाजा बजाने के लिए कहता है, और गाना सुनते-सुनते सो जाता है। शिल्प कला का वह विशेषज्ञ है। वास्तव में वह जर्मनराष्ट्र का बहुत बड़ा शिल्पकार है। पहले वह इमारतों के चित्रों को बनाता है, और बाद में प्रोफ़ेसर स्पियर उनको पूरा करता है। इस प्रकार उसने बर्ख़तेसगेडन के मकान का चित्र खींचा, बर्लिन में अपने निवास-स्थान का नक़शा बनाया, और म्यूनिच के महल की रूपरेखा खींची। बर्लिन के अनेक मकानों को गिरवाकर उसने अपने इच्छानुसार उनको नये ढङ्ग से बनवाया है, और कहा जाता है कि जब एक बार एक फ़्रांसीसी वायुयान बर्लिन पर उड़कर फ्रांस पहुँचा, तब संचालक ने कहा, "बर्लिन पर बम गिराने की चिन्ता मत करो। हिटलर ने स्वयं ही उसके मकानों को गिरवा दिया है।" अभी उसने नर्नबर्ग में ६०,००० आदमियों के बैठने के लिए एक कांग्रेस हाल बनवाया है जिसके सम्बन्ध में वह कहता है कि हज़ारों साल बाद लोग आश्चर्य के साथ इसको देखेंगे और कहेंगे, "जर्मन-जाति कितनी महान् थी।"

सिनेमा में भी हिटलर को आनन्द आता है। 'लाइव्ज़ ऑव ए बंगाल लैन्सर' नामक फ़िल्म को वह बहुत पसन्द करता है, जिसको उसने तीन रात लगातार देखा है। मोटरकारों का भी उसे बहुत शौक़ है, और उनकी मशीनों के सम्बन्ध में उसको बहुत ज्ञान है। परन्तु वह स्वयं कार नहीं चलाता, और न बहुत तेज़ चाल ही पसन्द करता है। वह बच्चों और कुत्तों को बहुत प्यार करता है, और गोएबिल्स की लड़की हैल्गा गोएबिल्स को अक्सर गोद में लेकर खिलाता है।

हिटलर की स्मरण-शक्ति बहुत अच्छी है। जिस पुस्तक को उसने एक बार भी पढ़ा है, वह उसको भलीभाँति याद है। जिस फ़िल्म अथवा नाटक को उसने एक बार भी देखा है, उसके सम्बन्ध में वह छोटी से छोटी बात जानता है। उसके साथी कहते हैं कि जो बात वह एक बार भी सुन लेता है, वह उसके मस्तिष्क में रिकार्ड की भाँति भर जाती है।

हिटलर बहुत-से मित्रों में विश्वास नहीं करता और अधिक बात भी नहीं करता है। परन्तु उसे अकेला रहना भी पसंद नहीं है, और अपने घनिष्ठ मित्रों के साथ में उसको बहुत अच्छा लगता है। कभी-कभी वह दस-बारह आदमियों की छोटी-छोटी दावतें भी करता है। नौकरों तथा नीचे अफ़सरों के प्रति उसका व्यवहार अच्छा रहता है, परन्तु वे उससे सदैव डरते रहते हैं, क्योंकि जब उसको क्रोध आ जाता है, तब वह कड़े से कड़ा दंड देने में भी संकोच नहीं करता। उसके साथी उससे सदैव भयभीत रहते हैं, और उसका सम्मान करते हैं। वास्तव में किसी व्यक्ति-विशेष के हित से हिटलर को कोई सम्बन्ध नहीं है, वह जर्मन-जाति का हित चाहता है। जब वह भाषण देता है, तब जर्मन लोगों को 'मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरे हो,' कहकर सम्बोधित करता है।

हिटलर को धन की चिन्ता नहीं है। सन् १९३५ ई० में उसने कहा था कि उसका किसी बैंक में रुपया नहीं था। राष्ट्र की ओर से उसे जो वेतन मिलता है उसको वह एक मज़दूर-सभा को दे देता है। अपने 'आत्म-चरित्र' से उसे लगभग २,००,००० पौंड मिल चुके हैं जिनको उसने नाज़ीपार्टी को दे दिया। इसके बदले में पार्टी उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन देती है।

हिटलर ईश्वर और भाग्य में विश्वास करता है। उसका पिता कैथोलिक धर्म को मानता था। एक बार हिटलर ने वार्ड प्राइस से कहा, "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, और मुझे निश्चय है कि वह ६ करोड़ ७० लाख जर्मनों को, जिन्होंने इतने परिश्रम से संसार में अपना स्थान बना पाया है, धोखा नहीं देगा।"

हिटलर अभी तक अविवाहित है। अनेक लोगों का विश्वास है कि उसने अपने जीवन में अभी तक किसी स्त्री से प्रेम नहीं किया है। उसके साथियों ने अनेक सुन्दरियों को उसका प्रेम पाने के लिए भेजा, परन्तु वे असफल रहीं। रेनेट म्यूलर उनमें से एक थी। हिटलर उसकी ओर कुछ आकर्षित था, और दोनों की प्राइवेट भेंट के लिए प्रबन्ध किया गया। कहा जाता है कि गोएरिंग ने म्यूलर को समझा दिया था कि वह हिटलर से निकटतम सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भरसक प्रयत्न करे। जब दोनों एक कमरे में रह गये, तो म्यूलर को आशा थी कि हिटलर अपना प्रेम प्रदर्शित करेगा। वह कुछ देर तक उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखता रहा। फिर अकस्मात् उछलकर उसने अपनी भुजा उठाई और कहा, "मैं अपनी भुजा को इस प्रकार छः घंटे तक उठाये रख सकता हूँ; गोएरिंग केवल चार घंटे तक ही ऐसा कर सकता है।" ऐसा कहकर वह कमरे से बाहर चला गया।

इसका यह तात्पर्य नहीं है कि हिटलर स्त्रियों से घृणा करता

है। योरप का कोई भी राजनीतिज्ञ हिटलर के समान हाथ मिलाने का ढङ्ग नहीं जानता है। वह स्त्री के हाथ को अपने हाथ पर रखता है, एक क्षण तक उसको इस प्रकार पकड़े रहता है मानो वह किसी बहुमूल्य वस्तु को पकड़े हो, और साथ ही साथ उसकी आँखें स्त्री की आँखों में कुछ खोजती हैं। उसके बाद में वह झुककर स्त्री के हाथ को अपने ओंठों से चूमता है। स्त्रियों के साथ में उसके चेहरे पर तेज, आँखों में ज्योति और बातचीत में माधुर्य आ जाता है। परन्तु स्त्री चतुर न हुई, तो वह उससे अधिक बात नहीं करता है।

दो स्त्रियाँ, जिनसे हिटलर का विशेष सम्बन्ध है, लार्ड रैडसडेल नामक एक अँगरेज़ की दो पुत्रियाँ ऑनरेबिल यूनिटी फ्रीमैन मिटफ़ोर्ड तथा ऑनरेबिल मिसेज़ डिआना गिनीज़ (अब लेडी मोस्ले) हैं। हिटलर ने मिस मिटफ़ोर्ड को पहली बार म्यूनिच में सन् १९३४ ई० में देखा था। उस समय मिटफ़ोर्ड म्यूनिच में कला-सम्बन्धी शिक्षा लेती थी। वह एक होटल में बैठी हुई थी, हिटलर भी वहीं आकर बैठा। अकस्मात् उसकी दृष्टि मिस मिटफ़ोर्ड पर पड़ी। उसके सौन्दर्य को देखकर हिटलर ने उससे मित्रता कर ली। उसकी बहन मिसेज़ गिनीज़ भी बाद में हिटलर की मित्र हो गई। मिटफ़ोर्ड-बहनों के समान और किसी विदेशी पर हिटलर का विश्वास नहीं है। वे राजनीतिक विषयों में कोई भाग नहीं लेती हैं, और अपने सौन्दर्य तथा हास्य से हिटलर को प्रसन्न रखती हैं।

हिटलर के शत्रुओं ने कई बार उसका वध करने का प्रयत्न किया परन्तु वे असफल रहे। वह पक्का भाग्यवादी है, और उसे किसी का भय नहीं है। वह कहता है, "मैं सदैव जानता था कि मैं एक महान् पुरुष बनूँगा, और मुझे इस बात का निश्चय है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति के लिए जीवित रहूँगा।"

अन्य १७ पुस्तकें

दैनिक जीवन और मनो-विज्ञान

रूसी कहानी-संग्रह

चक्रभेद

क्रान्तिकारी

आधुनिक जापान

समरकन्द की सुन्दरी

पृथ्वी का इतिहास

मेरा संघर्ष

रामकृष्णचरितामृत

'सूर'-संदर्भ

मोपासाँ की कहानियाँ

महान् अपराधी

अभिसारिका

मृत्यु-किरण

ताया

हिन्दी के निर्माता [१ भाग]

दुर्गेशनंदिनी

सरस्वती सिरीज़

(१) विचार धारा

(१) दैनिक जीवन और मनोविज्ञान
(२) समाज और सेक्स
(३) भारत की राजनैतिक जागृति
(४) परलोक-रहस्य

(२) विश्व उपन्यास

(१) क्रान्तिकारी
(२) ताया
(३) माना
(४) अभिसारिका
(५) कुमुदा
(६) शुक्लवसना
(७) धरती माता
(८) पुनरुत्थान

(३) आधुनिक उपन्यास

(१) समरकंद की सुन्दरी
(२) नरक
(३) दुर्गेशनंदिनी
(४) नया कदम
(५) मृत्यु-किरण
(६) वंचिता

(४) रहस्य रोमांच

(१) चक्रभेद
(२) चीनी डाक्टर
(३) निरपराधी
(४) छिपा महल
(५) महान् अपराधी
(६) विचित्र मूर्तियाँ
(७) जीवन-ज्योति
(८) [illegible]
(९) चिता का भस्म
(१०) रहस्य-भेद
(११) हंसराज की डायरी

(५) कहानी-संग्रह

(१) रूसी कहानी-संग्रह
(२) मोपासाँ की कहानियाँ
(३) समस्या का हल
(४) हिन्दी की चुनी हुई कहानियाँ

(६) विज्ञान

(१) पृथ्वी का इतिहास
(२) मानवशरीर

(७) हिन्दी-साहित्य

(१) सूर-संदर्भ
(२) हिन्दी के निर्माता [१ भाग]
(३) मधालोचन
(४) चयनिका (कविता-संग्रह)
(५) हिन्दी के वैष्णव कवि

(८) धर्म

(१) रामकृष्णचरितामृत
(२) हिन्दी-ऋग्वेद—छः भागों में
(३) धर्म का उद्भव
(४) हिन्दू-धर्म का व्यावहारिक रूप

(९) ऐतिहासिक विचित्र कथा

(१) आधुनिक जापान
(२) पुरातन पूर्व
(३) रूस की क्रान्ति

(१०) जीवन चरित्र

(१) मेरा संघर्ष (हिटलर)
(२) राजर्षि विवेकानन्द
(३) डिक्टेटर